विश्व-भ्रमण

भारत से विदा

दो वर्ष मे एक बार उन देशो की परिषद् होती है जो 'कामन-वेल्थ' मे सम्मिलित हैं । ये वे देश हैं जिनसे इंग्लिस्तान का किसी न किसी प्रकार का संबंध रहा है, परन्तु जो अब पूर्ण रूप से स्वतन्त्र हैं । स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत भी कामनवेल्थ का एक अंग हो गया है और दो वर्षों के अनन्तर होने वाली इस परिषद् मे भारतीय प्रतिनिधि-मण्डल भी जाता है ।

सन् १६५० मे यह परिषद् न्यूज़ीलैण्ड मे हुई थी, और उसमे जो भारतीय प्रतिनिधि-मण्डल गया था उसके नेतृत्व का उत्तरदायित्व मुझपर रक्खा गया था । सन् १६५२ के ८ सितम्बर से १३ सितम्बर तक यह परिषद् कैनेडा मे होने वाली थी । इस परिषद् मे भारतीय प्रतिनिधि-मण्डल के नेता लोकसभा के अध्यक्ष श्री गणेश वासुदेव मावलकर थे, जिन्होंने प्रतिनिधि-मण्डल मे मुझे भी रखा था ।

मैंने सोचा कि मुझे कैनेडा जाने का जो अवसर मिलेगा, उसका उपयोग मैं विश्व-भ्रमण के लिए क्यो न कर डालूं । कैनेडा जाने के रास्ते में यूरोप पडता ही है और कैनेडा अमेरिका से लगा हुआ है । लौटना फिर यूरोप होकर हो सकता है अथवा अमेरिका के पश्चिमी छोर के न्यूयार्क से अमेरिका के पूर्वी छोर सैनफ्रांसिस्को आकर और

वहां से जापान और श्याम होकर। अमरीका, मलाया, न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया, फिजी आदि मैं पहले हो आया था। इस यात्रा से संसार के प्राय. समस्त देशों का मेरा भ्रमण हो जाएगा और इस भ्रमण के कारण संसार की समस्याओं का अध्ययन भी, इस विचार ने विश्व-भ्रमण के विचार को और अधिक उत्तेजना दे दी।

मेरे छोटे पुत्र जगमोहनदास और मेरे छोटे दामाद घनश्यामदास मेरे साथ जाने के लिए बड़े उत्सुक थे। जगमोहनदास अब मध्यप्रदेश-विधान सभा के सदस्य भी थे। इन दोनों का भी मेरे साथ जाना निश्चित हुआ और हम लोगों ने रूस को छोड़ निम्नलिखित देशों को जाने का निर्णय किया—(१) मिस्र, (२) यूनान, (३) इटली, (४) स्विट्जरलैण्ड, (५) फ्रांस, (६) इग्लैण्ड, (७) कैनेडा, (८) अमेरिका, (९) हवाई द्वीप, (१०) जापान, (११) चीन, (१२) हांगकांग, (१३) स्याम, (१४) बर्मा।

८ सितंबर, १९५२ से कैनेडा में होने वाली इस परिषद् का भारतीय प्रतिनिधि-मण्डल २७ अगस्त को जाने वाला था, परन्तु, चूंकि हम यूरोप के विभिन्न देशों को भी जा रहे थे, इसलिए हम ३१ जुलाई को बी० ओ० सी० के चार इंजिन वाले एक दीर्घकाय वायुयान द्वारा दिल्ली से रवाना हुए। यात्रा इतनी लम्बी थी कि वह वायुयान द्वारा ही की जा सकती थी, अतः सारी यात्रा प्रधानतया वायुयान द्वारा ही हुई।

काहिरा पहुंचने तक

भारत से उड़कर हमारा वायुयान सर्वप्रथम कराची में उतरा। इस उड़ान में उस समय इस वायुयान को लगभग ढाई घण्टे लगे। जिस समय हमारे वायुयान ने कराची मे पाकिस्तान की भूमि का स्पर्श किया तब मुझे याद आया वह समय, जब ... का विभाजन नहीं हुआ था। यद्यपि पाकिस्तान के निर्माण के ... का नारा कई वर्षों से यत्र-तत्र लगने लगा था तथापि ... जिन्ना के इस सवाल को हाथ में लेने के पहले यह नारा

कुछ मनचलों की मनचली कल्पना का विषय ही माना जाता था। महात्मा गान्धी के प्रादुर्भाव के बाद भारतीय राजनीति में स्वातन्त्र्य-युद्ध में भाग न लेने के कारण श्री जिन्ना का कोई स्थान न रह गया था। इन्हीं जिन्ना का फिर कितने शीघ्र उत्थान हुआ तथा उन्हींके प्रयत्न से पाकिस्तान की स्थापना हुई। यह सब हुआ श्री जिन्ना के व्यक्तित्व के कारण अथवा विशिष्ट परिस्थितियों की वजह से? एक पुराना विवाद चला आ रहा है कि व्यक्ति समय का निर्माण करता है या समय व्यक्ति का। श्री जिन्ना के व्यक्तित्व को लेकर मैं इसी विचारधारा में गोते लगाने लगा। क़ायदेआज़म का व्यक्तित्व अनेक विशेषताओं से भरा हुआ था, इसमें सन्देह नहीं। इस देश की राज-नैतिक बागडोर गान्धी जी के हाथ में आने के पूर्व इस देश की राज-नीति में और इस देश की प्रधान राजनैतिक संस्था कांग्रेस में जिन्ना का बहुत बड़ा स्थान रह चुका था। कांग्रेस के गान्धी जी के हाथ में आने पर जिस प्रकार उस काल के अनेक राजनैतिक नेताओं ने कांग्रेस को छोड़ दिया, उसी प्रकार श्री जिन्ना ने भी। लेकिन इन कांग्रेस छोड़ने वालों में से अनेक नरम दल के नेताओं ने जिस तरह 'लिबरल फेडरेशन' नामक एक पृथक् संस्था बनाई, वैसी कोई बात जिन्ना ने नहीं की, वरन् मुस्लिम लीग तक को उन्होंने हथियाने की कोशिश नहीं की। गान्धी-युग के त्यागमय स्वतन्त्रता के संग्रामों में जिन्ना अपने जीवन की विशिष्ट आदतों के कारण भाग न ले सकने से अतः वे गान्धी की आंधी में 'जैसी बहै बयार पीठ पुनि तैसी दीजै' सिद्धान्त के अनुसार चुपचाप बैठे रहे। यहां तक कि कुछ वर्षों के लिए देश को छोड़कर विलायत चले गये और वहां वकालत करते रहे। सन् २० की धारासभाओं के चुनाव का कांग्रेस ने बहिष्कार किया था। जिन्ना साहब ने कांग्रेस छोड़ दी थी, इतने पर भी उन चुनावों में वे खड़े नहीं हुए। हां, कांग्रेस में रहते हुए जो जिन्ना राष्ट्रीयता के सबसे बड़े पुजारियों और साम्प्रदायिकता के सबसे बड़े विरोधियों में से एक थे, उन्हीं जिन्ना ने धीरे-धीरे समय-समय पर मुस्लिम हितों की बातें

कहना आरम्भ किया। साइमन-कमीशन के अवसर पर नेहरू-कमेटी की रिपोर्ट के समय, पहली गोलमेज परिषद् में तथा अन्य अवसरों पर उन्होंने जो कुछ कहा और किया, उस इतिहास को देखने से पाकिस्तान की स्थापना जिस नींव पर हुई उस नींव की खुदाई किस प्रकार हो रही थी, इसका पता लग जाता है। और अन्त में ज्योंही उन्होंने देखा कि मुसलमानों में साम्प्रदायिकता का ज़हर अच्छी तरह फैल गया है तथा मौलाना मुहम्मद अली की मृत्यु के पश्चात् मुसलमानों में कोई नेता नहीं रह गया है, त्योंही अपने समस्त पुराने राष्ट्रीय सिद्धान्तों को ताक में रखकर, एक कट्टर से कट्टर सम्प्रदायवादी नेता के रूप में, वे फिर से राजनीतिक क्षेत्र में कूद पड़े। अब जिस प्रकार गान्धी जी ने पुरानी, राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस को हाथ में लेकर अपने समस्त कार्यक्रम को कार्यरूप में परिणत किया था उसी प्रकार श्री जिन्ना ने भी मुस्लिम लीग को हाथ में लेकर अपने कार्यक्रम को क्रियान्वित करना आरम्भ किया। अन्तर इतना अवश्य था, और यह बहुत बड़ा अन्तर था, कि गान्धी जी के कार्यक्रम में कुछ करने की बातें थीं और इस करनी में त्याग तथा तपस्या आवश्यक थी। जिन्ना के कार्यक्रम में करने को कुछ नहीं था, जो कुछ था कहने को था और इस कथनी में न त्याग की जरूरत थी न तपस्या की, वरन् गान्धी जी की करनी ने देश की जनता से जो त्याग और तपस्या कराई थी और जिसके कारण विदेशी सत्ता कमजोर पड़ती जा रही थी उसका उपयोग जिन्ना के कथनी के कार्यक्रम में होता जा रहा था। अंग्रेजों की नीति वर्षों से मुस्लिम-परस्त थी ही। हिन्दुओं और मुसलमानों को लड़ाते रहना तथा इस प्रकार अपना उल्लू सीधा करना यह अंग्रेज वर्षों नहीं, युगों से करते आ रहे थे। श्री जिन्ना ने अंग्रेजों से मिलकर भारत को कोई हानि पहुंचाई, यह कहना उनके साथ अन्याय करना होगा, उन्होंने यह कभी नहीं किया। पर अंग्रेजों की इस नीति का उन्होंने अपने उत्कर्ष के लिए पूरा-पूरा उपयोग अवश्य कर लिया। इस प्रकार हम देखते हैं जिन्ना के व्यक्तित्व में एक नहीं, अनेक विशेषताएं थीं। यदि

जिन्ना के सदृश कुशल राजनीतिज्ञ मुसलमानो मे न होता तो पाकिस्तान कदापि स्थापित न हो सकता था। व्यक्ति समय का निर्माण करता है या समय व्यक्ति का, इस विवाद को जब हम सामने रखते हैं, तो जिन्ना का व्यक्तित्व विशेषताओ से रहित था और केवल समय ने जिन्ना को बना दिया—हम यह नही मान सकते। पर साथ ही एक विशिष्ट परिस्थिति के कारण ही जिन्ना का इतना उत्कर्ष हो सका, इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता। दोनो का अन्योन्य सम्बन्ध है, यह मेरा मत है। पर एक बात और, प्राय. महापुरुष अपने समय का निर्माण उन सिद्धान्तो पर करता है जिन सिद्धान्तो पर उसे विश्वास होता है। गान्धी जी ने भी यही किया, लेकिन कायदेआजम जिन्ना के सम्बन्ध मे यह बात नही कही जा सकती। जिन उसूलो पर पाकिस्तान का निर्माण हुआ था वे जिन्ना को व्यक्तिगत रूप से कभी भी मान्य न थे। इस एक आश्चर्यजनक बात को सच्चे इतिहास को सदा उल्लेख करना ही होगा।

और अब मुझे पाकिस्तान की स्थापना की अनेक घटनाए याद आने लगी। कितने निर्दोषो का खून बहा था, कितनी सती-साध्वियो का धर्म नष्ट हुआ था, कितने मासूम बच्चे ककडियो और भुट्टो के सदृश काट डाले गए थे, कितने लखपती और करोडपती कगाल हो गए थे, कितने ऐसे थे कि जिनके महल नष्ट हो गए थे और आज उन्हें झोपडी भी नसीब न थी! और क्या हिन्दू-मुस्लिम समस्या को सुलझाने के लिए जिस पाकिस्तान का निर्माण हुआ था, उससे यह समस्या सुलझ गई? लाखो शरणार्थी उत्तर-पश्चिम से आए थे और किस कठिनाई से उन्हे बसाया गया था, अब लाखों हिन्दू आ रहे हैं पूर्व से। पाकिस्तान धर्म-निरपेक्ष राज्य नही है। पाकिस्तान राज्य का धर्म इस्लाम है। उसे अल्पमत वालो की परवाह नही। ऐसा समय शीघ्र ही आता दीखता है जब पाकिस्तान मे शायद एक भी गैर-मुस्लिम न रह जाएगा, पर हमारा देश धर्म-निरपेक्ष देश है, हम द्विराष्ट्र सिद्धान्त को नहीं मानते। धर्म-निरपेक्षता ही ठीक सिद्धान्त

है और हिन्दू सिद्धान्त को न मानना ही सही बात है। पाकिस्तान में चाहे एक भी गैरमुस्लिम न रहे, पर भारत में तो करोड़ों मुसलमान रहते ही। अतः पाकिस्तान की स्थापना के बाद भी हमारे देश में तो हिन्दू-मुस्लिम समस्या का हल नहीं होगा। आज कश्मीर का ज्वलन्त प्रश्न उठा हुआ है। यदि पंजाब का हिस्सा, सिन्ध, बलूचिस्तान, उत्तर-पश्चिम का सरहदी प्रान्त और बंगाल का हिस्सा अलग कर पाकिस्तान के निर्माण के बाद भी हिन्दू-मुस्लिम-प्रश्न जैसा का तैसा बना है, तो यदि हम कश्मीर पाकिस्तान को दे भी दें, जो कभी किया नहीं जा सकता और कश्मीर भारत का अविभाज्य अंग है, तो भी क्या यह प्रश्न हल हो सकता है ? और जब मैं यह सोचता हूं, तब मेरे मन में उठता है कि देश का विभाजन स्वीकार करके हमने कोई गलती तो नहीं की ? गान्धी जी विभाजन के विरुद्ध थे। और जब मैं यह सोचता हूं, तब मेरे मन मे उठता है कि हमारे नेताओं ने देश को शीघ्र से शीघ्र स्वतन्त्र कराने अथवा जिन पदों पर वे आसीन हो चुके थे, उन्हें हाथ से न जाने देने के लोभ से देश के विभाजन को स्वीकार कर जल्दबाजी की कार्यवाही तो न कर डाली थी ? एक बार नहीं हजारों बार मेरे मन में ये प्रश्न उठे हैं और इन प्रश्नों का सन्तोषजनक उत्तर न मुझे कभी मिला था और न आज ही मिल रहा था।

लगभग ग्यारह बजे रात्रि को हवाई जहाज ने कराची का हवाई अड्डा छोड़ दिया और दूसरे दिन प्रातःकाल नौ बजे हम लोग काहिरा पहुंचे। परन्तु भारत के समय से अब साढ़े बारह बज गए थे। एक ही रात में साढ़े तीन घण्टे का अन्तर पड़ गया था।

मिस्र

काहिरा की धरती पर पैर रखते ही हमने उस पुरातन भूमि ो प्रणाम किया, जहां कदाचित् भारत के पश्चात् सर्वप्रथम मानव

ने सभ्यता और संस्कृति का प्रसार किया था।

आधुनिक विद्वानों के मतानुसार मिस्र की सभ्यता का उदय ईसा के सात हज़ार वर्ष पूर्व हुआ था। मोहनजोदडो और हड़प्पा के भग्नावशेषों का पता लगाने के पूर्व तथा ऋग्वेद संसार का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है, इस मान्यता के पहले यह माना जाता था कि इस विश्व में मिस्र की सभ्यता ही सबसे पुरानी है। अब इस सम्बन्ध मे मतभेद हो गया है और ऐसे विद्वानों की कमी नहीं जो भारत की सभ्यता को सबसे पुरानी सभ्यता मानते हैं। फिर भी मिस्र ने मानव को बहुत कुछ दिया है। वर्ष-गणना, अकगणित और लेखन के लिए अक्षर सर्वप्रथम मिस्र मे ही ईजाद हुए थे। यहीं सबसे पहले खेती और सिंचाई का आरम्भ हुआ था। यहीं मानव ने ऐसी घास के पौधे ढूढ़े थे जिनमे अनाज पैदा होता था। इन पौधों की खेती पहले मनुष्य हाथ से ज़मीन को कमाकर किया करता था। बाद में उसने मिस्र मे ही सर्वप्रथम बैलो की सहायता से खेती करना आरम्भ किया। अधिकतर पशुओं में मनुष्य से कहीं अधिक बल रहता है। पर जो बुद्धि मनुष्य मे है वह पशुओ मे नहीं। बुद्धि और कौशल से ही तो, पशु तथा अन्य शक्ति के स्रोतो को उपयोग मे ला, मानव ने सभ्यता और संस्कृति निर्मित की है। वह दिन मानव-इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण दिनो में से एक है जिस दिन मिस्र के आदिम मानव ने बैलों की शक्ति के सहारे नील नदी के कछार मे सर्वप्रथम खेती आरम्भ की। इस खेती के सहारे जिस अतिरिक्त धन का उपार्जन हुआ था उसीसे मिस्र की प्राचीन सभ्यता निर्मित हुई। मिस्र देश का मृत्यु का देवता 'सेरापीज' बैल के आकार का है। गाय को भी मिस्र देश मे पवित्र और पूजनीय माना गया। यहां की पूजनीय गाय का नाम है 'एपिस'।

भू-मध्यसागर के दक्षिणी तट पर स्थित उत्तरपूर्व अफ्रीका का यह देश कोई बहुत बड़ा देश नहीं है और न यहां की आबादी ही बहुत बड़ी है। समूचे मिस्र देश का क्षेत्रफल है ३,८३,००० वर्गमील

छोटा और चौडा है, उत्तरी मिस्र लम्बा और सकरा। उत्तरी मिस्र मे हरियाली एक छोटी-सी पट्टी के रूप मे है। शेष भाग लाल रेत और चट्टानो से पूर्ण है। दक्षिणी भाग की उपत्यका काफी चौडी है।

काहिरा मे उतरते ही हमे मिस्र के रेगिस्तानी तथा आबाद हिस्से स्पष्ट दीख जाते हैं; दोनो एक-दूसरे से मिले हुए। रेगिस्तानी भाग सूर्य की किरणो मे चादी के चूरे के सदृश चमकती हुई बालुका वाला और आबाद हिस्सा नाना प्रकार के [illegible] से हरा कच्छ। आबाद हिस्से मे उल्लेखनीय वस्तु उत्पन्न होती है—कपास। मिस्र की रूई का तार जितना लम्बा होता है ससार के किसी देश की रूई का नही, और इसका कारण मिस्र देश की भूमि के अतिरिक्त उस भूमि पर कभी पानी न बरसना है। सारे ससार मे इस रूई की माग रहती है। पतला सूती कपडा इस रूई के मिश्रण बिना बन ही नहीं सकता। इस रूई से मिस्र मे बहुत कम कपडा बनता है और अधिकतर रूई बाहर भेजी जाती है।

मिस्र देश मे वायुयान से उतरते ही हमारा ध्यान वहा की भूमि और नील नदी के प्रवाह के अतिरिक्त वहा के निवासियो की ओर आकर्षित हुआ। मिस्र के निवासियों का वर्ण भारतीयो के सदृश गेहुआ है। पश्चिमी पोशाक के अतिरिक्त मिस्र के पुरुषो की पोशाक है गले से पैरो की एडी तक धारीदार कपडे का लम्बा चोगा और सिर पर लाल रग की काले फुदने वाली तुरकी टोपी। स्त्रियों की पोशाक एक काले रग का बुरका है, पर यह बुरका रहता है गले से पैर तक, चेहरा इस बुरके से नही ढका जाता। स्त्रियों की पोशाक सौन्दर्य से सर्वथा रहित है। इसीलिए वहां की महिलाए शायद पश्चिमी पोशाक अधिकाधिक अपनाती जाती हैं। यदि हम बाहर से आए हुए लोगो को, विशेषकर अरबवासियो को, छोड दें तो मिस्र-निवासियों मे प्रधानतया अफ्रीकी और एशियाई दो फिरके स्पष्ट रूप से पाए जाते हैं। दोनों के चेहरो की बनावट मे काफी भिन्नता है। दक्षिणी मिस्र के लोग अधिकतर अफ्रीकन हैं और उत्तरी मिस्र के लोग अधिकतर एशिया के देशो के।

न् ९७२ ई० में समाप्त हुआ था। इसकी प्राचीनता और इसके मुख्य प्रालय में मौलवी के खड़े होने के स्थान पर पत्थर की पच्ची-कारी के सुन्दर काम के सिवा इसमें अन्य कोई विशेषता न थी।

इन दोनों मस्जिदों को देखने के पश्चात्, हमने एक सड़क पर से खलीफो के मकबरे देखे। यहा से हम लोग काहिरा का मुख्य बाजार देखने पहुंचे। इस बाजार की इमारतो में तो प्राचीनता का कोई लवलेश भी न था, पर बिकने वाली वस्तुओ मे आधुनिक काल की वस्तुओ के साथ-साथ कुछ प्राचीन काल की चीजें भी दिखाई दे जाती थी, जिनमें मुख्य थे 'वयूरिम्रो'। हमने बाजार से पत्थर के कुछ वयूरिम्रो, मिस्र के भिन्न-भिन्न दृश्यों की कुछ फोटो और प्राचीन तथा अर्वाचीन मिस्र पर कुछ पुस्तकें खरीदीं।

बाजार से हम ससार की सात अद्भुत वस्तुओ मे से एक मिस्र के प्रसिद्ध पिरामिड देखने रवाना हुए, जब शुक्ल पक्ष की दशमी का चाद अच्छी तरह से मिस्र के निर्मल गगन में चमकने लगा क्योकि हमने सुना था कि हमारे जन्म-स्थान जबलपुर मे नर्मदा के भेड़ाघाट तथा आगरे के ताजमहल के सदृश पिरामिड भी ज्योत्स्ना की नीलिमामय श्वेतता मे अपना एक विशेष सौंदर्य प्रदर्शित करते हैं।

मिस्र मे पिरामिडो का निर्माण उस पिरामिड-युग मे हुआ, जो ईसा के २८१५ वर्ष पूर्व से २२६४ वर्ष पूर्व तक माना जाता है। इस बीच प्राचीन राजवश की तीसरी, चौथी, पाचवी और छठी पीढियो ने राज्य किया। पिरामिड-युग मे निर्मित सभी पिरामिड नील नदी के पश्चिमी तट पर बने हैं।

यो तो मिस्र में इस समय ज्ञात पिरामिडो की सख्या लगभग ८० है, किन्तु इनमें सबसे बडे पिरामिड तीन हैं। ये तीनों पिरामिड एक ही स्थान गिजाह के पठार पर एक-दूसरे के अत्यन्त सन्निकट बने हैं। सबसे बडा पिरामिड चॅयस ने बनवाया था और यह महान पिरामिड के नाम से प्रसिद्ध है। दूसरा पिरामिड चफरन ने बनवाया जो उसीके नाम से प्रसिद्ध है। तीसरे पिरामिड का निर्माता माइसेरिनस था। ये

[illegible]

[illegible]

[illegible] पिरामिड की प्रत्येक भुजा ७०० फुट लम्बी [illegible] पिरामिड से कोई ४० फुट कम है। इसकी ऊंचाई [illegible] फुट [illegible] पिरामिड से आठ फुट कम है। [illegible] इस बात का अर्थ होता है कि [illegible] पिरामिड है। [illegible] इसकी ऊंचाई ४८१ फुट [illegible] पिरामिड की [illegible] ऊंचाई से दस फुट कम।

माइसेरिनस के पिरामिड की प्रत्येक भुजा ३५६.५ फुट और ऊंचाई २०४ फुट है। कहा जाता है कि पहले यह २१८ फुट अधिक ऊंचा था।

मिस्र के रेगिस्तानी प्रदेश की पृष्ठभूमि में ये विशाल पिरामिड आकाश को छूते प्रतीत होते हैं और इस बात का स्मरण दिलाते हैं कि मनुष्य क्या कर सकता है। जहां एक ओर हमें इनमें मनुष्य की शक्ति का बोध होता है, वहां दूसरी ओर नश्वरता का भी, और हम इस पार्थिव संसार से दूर आध्यात्मिक जगत् में विचरने लगते हैं।

पर इसमें सन्देह नहीं कि संसार की सात अद्भुत वस्तुओं में से एक इन पिरामिडों का माना जाना सर्वथा सही निर्णय है। कितने विशाल हैं ये पिरामिड ! शिलाखण्डों को जोड़-जोड़कर ये पिरामिड बनाए गए हैं। जब वजन उठाने की क्रेन आदि मशीनें न थीं तब ये

शिलाखण्ड उठा-उठाकर कैसे इतनी ऊंचाई पर लाए गए, यह एक आश्चर्य से स्तम्भित कर देने वाली बात है। हमारे मार्ग-प्रदर्शक तथा वहां के अन्य लोगों ने हमें बताया कि पहले इन पिरामिडों के बाहरी भाग सगमरमर से पटे हुए थे। एक पिरामिड के ऊपरी कुछ भाग में अभी सगमरमर लगा हुआ है, पर बाद में बादशाह मुहम्मद अली यहां का सगमरमर निकलवाकर ले गया और उस सगमरमर से मुहम्मद अली की उस विशाल मस्जिद का निर्माण हुआ, जिसका वर्णन पहले आ चुका है। सगमरमर लगे हुए ये पिरामिड चांदनी में एक अद्भुत नजारा दिखाते होंगे, इसमें सन्देह नहीं, पर सगमरमर निकल जाने पर भी ज्योत्स्ना में इनका अपना एक सौन्दर्य है, यह निश्चित है।

प्रकाश और परछाईं में हर तरफ इन पिरामिडों का निरीक्षण करने के बाद हम इन्हींके निकट मिस्र देश के अन्य विश्वविख्यात स्फिंक्स को देखने चले। पिरामिडों के समान ही यह भी एक महान विशालकाय वस्तु है। इस स्फिंक्स का शरीर है सिंह का और चेहरा है एक पुरुष का, कदाचित् बादशाह चफरन का। इसका निर्माण हुआ था ईसा के लगभग तीन हजार पांच सौ वर्ष पूर्व। इसकी लम्बाई है २४० फुट और ऊंचाई ६६ फुट। पावों को छोड़ बाकी यह समूचा स्फिंक्स एक ही विशाल चट्टान से बना है। बाद में यह सदियों तक रेत से पुरा रहा। सन् १८१८ में इसके चारों ओर की रेत हटाकर इसे फिर से निकाला गया है।

आज की इस घुमाई के बाद हमने यह तय किया कि दिन के प्रकाश में भी कल हम इन आश्चर्यजनक वस्तुओं को देखेंगे। जब हम अपने होटल को लौटे तब रात के करीब दस बज चुके थे। होटल पहुंचते ही हम लोगों ने खाना मंगाया और खाने के बाद जब खाने का बिल हमारे पास आया तब हमें कम आश्चर्य नहीं हुआ। हम तीनों शाकाहारी थे। हमने जो खाना मंगाया था उसमें डबल रोटी, मक्खन, शाकाहारी सूप, उबले साग-भाजी, फल और फल का रस

था। [illegible] में बड़े से बड़े [illegible] ने [illegible]
है और [illegible] के अधिक न रहने, पर [illegible] के [illegible] हैं [illegible]
में [illegible] अधिक के [illegible] के [illegible]
अधिक [illegible] करते। भारत के [illegible]
[illegible] किस [illegible] से [illegible] हैं [illegible]
है था। [illegible] इस कीमतों बढ़ने का कारण हो सकता है, पर दूसरे
दिन जब इसके [illegible] का [illegible] तब दूसरे [illegible] से [illegible] और
इनका दिन की कीमत बढ़ीं [illegible] ही हो गया तब हमें भारत की
और भारत के बाहर की भी वस्तुओं की कीमत के [illegible] का पता चल
गया। भारत में कहा जाता है कि अन्य वस्तुओं की कीमत बहुत
अधिक है, पर जब हम भारत तथा अन्य देशों की अन्य वस्तुओं के
मूल्य का मिलान करते हैं तब हमें मालूम होता है कि भारत की अन्य
से खाद्य वस्तुओं का मूल्य कितना कम है। अन्य देशों में यदि इनकी
अधिक कीमत भी लोगों को नहीं अखरती और भारत में इतना सस्ता
मूल्य भी अखरता है तो इसका कारण भारत के लोगों तथा अन्य
देशों के लोगों की आर्थिक अवस्था है। इस पूरी यात्रा में हम भारत
के सदृश सस्ता खाना कहीं भी नहीं मिला। हां, अन्य स्थानों में
लन्दन में खाना अवश्य सस्ता था, पर भारत के खाने से तो उसका
भी मूल्य काफी अधिक था।

यों तो यहूदी अपना राज्य बनाने का प्रयत्न बहुत समय से कर रहे थे, किन्तु फिलिस्तीन में एक अलग यहूदी राज्य की स्थापना का सूत्रपात २ नवम्बर, १९१७ की उस घोषणा से हुआ जिसे बेलफर-घोषणा कहा जाता है। १९२३ में ब्रिटेन को शासन-प्रबन्ध चलाने का जो आदेश दिया गया था उसमें यह सिद्धान्त निहित था। यह आदेश यहूदी गणराज्य इसरायल की स्थापना की घोषणा के साथ ही समाप्त हुआ। इसपर इसरायल और अरब राज्यों में युद्ध छिड़ गया। मिस्र ने अरब देशों को संगठित करने में प्रमुख भाग लिया। इसी

उद्देश्य के लिए अरब लीग की स्थापना हुई, जिसका प्रधान कार्यालय काहिरा में है। यद्यपि इसरायल के प्रति अरब देशों, विशेषकर मिस्र, का मनमुटाव अब भी बना हुआ है, लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय दबाव के कारण अरब राज्यों को चुप हो जाना पड़ा है, वैसे मिस्र इसरायल जाने वाले सामान के स्वेज नहर से गुजरने पर अब भी कड़ी निगरानी रखता है।

इसरायल राज्य की स्थापना १५ मई, १९४८ को हुई। इसरायल और पड़ोसी अरब राज्यों की अल्पकालीन किन्तु भीषण युद्ध के पश्चात् यूनान के रोड्स नामक स्थान में अस्थायी सन्धि पर दस्तखत किए गए। जिन देशों ने सन्धि पर दस्तखत किए उनके नाम हैं—मिस्र, लेबनान, जोर्डन और सीरिया। सन्धि पर दस्तखत फिलिस्तीन-सम्बन्धी संयुक्तराष्ट्र के मध्यस्थ और संयुक्तराष्ट्र-फिलिस्तीन समझौता कमीशन की देख-रेख में किए गए। जनवरी, १९४९ में पहले आम चुनाव हुए और डाक्टर वीजमैन इसरायल गणराज्य के पहले प्रधान बने। इसरायल सरकार इस बात के लिए वचनबद्ध है कि बाहर से आने वाले सभी यहूदियों को इसरायल में स्थान दिया जाएगा। १९४९ में कोई साढ़े तीन लाख लोग इसरायल आए। अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से इसरायल राज्य को संसार के अधिकतर देश स्वीकार कर चुके हैं और १२ मई, १९४९ को उनसठवें सदस्य के रूप में वह संयुक्तराष्ट्र में शामिल हो चुका है।

इसरायल राज्य की सबसे बड़ी विशेषता एक यह हुई कि उन्होंने अपनी राज्यभाषा हिब्रू को बनाया। हिब्रू एक मातृभाषा है, परन्तु इतने थोड़े समय में भिन्न-भिन्न स्थानों से आकर बसने वाले यहूदियों ने हिब्रू सीख ली। आज वहां के गणतन्त्र की सारी कार्रवाई हिब्रू में होती है। हमारे देश में जिस हिन्दी को अपनी राज्यभाषा और राष्ट्रभाषा स्वीकार किया गया है वह हिब्रू के सदृश मातृभाषा नहीं है। आज भी इस देश की लगभग आधी जनता की वह मातृभाषा है और शेष में से भी उसे न समझने वालों की संख्या नगण्य है। क्या हमारे

लिए यह लज्जा की बात नहीं है कि अभी भी हमारे देश की केन्द्रीय सरकार का प्रायः सारा कार्य एक विदेशी भाषा अंग्रेजी में चलता है और उसके समर्थक भी कम नहीं पाए जाते ? अंग्रेजी का स्थान हिन्दी पन्द्रह वर्षों में ले लेगी, यह हमने अपने संविधान द्वारा घोषित किया है, पर जिस गति से हिन्दी को अंग्रेजी का स्थान दिलाने का प्रयत्न चल रहा है उससे तो पन्द्रह क्या पन्द्रह के ऊपर एक शून्य जोड़ने से जो संख्या हो जाती है उतने वर्षों में भी हिन्दी को उसका उचित स्थान प्राप्त होने वाला नहीं है। इस विषय में हमें इसरायल के हिब्रू-प्रेम से स्फूर्ति और प्रेरणा मिलनी चाहिए।

हम लोग काहिरा का अजायबघर देखने गए। बड़ा भारी अजायब-घर का भवन है और उसमें भारी तथा बहुत प्राचीन संग्रह है। इस संग्रह में मूर्तियां हैं, चित्र हैं, आभूषण हैं, वस्त्र हैं और सबसे अधिक हैं लाशें, जिन्हें मिस्र की प्रसिद्ध 'ममी' के नाम से पुकारा जाता है तथा कब्रों में मिला हुआ विविध प्रकार का सामान। इस कब्रों के सामान में सबसे अधिक संग्रह है थेब्स में मिला हुआ मिस्र के बादशाह तूतएन्ख आमुन की कब्र का सामान। तूतएन्ख आमुन की यह क[...] सन् १६२२ में मिली थी। तूतएन्ख आमुन की ममी अभी भी उस[...] जगह है, पर उसी ममी पर एक के बाद एक जो सात कफन लगा[...] गए थे वे सब इस अजायबघर में लाए गए हैं। ये कफन क[...] साधारण कपड़े के नहीं हैं, ये हैं एक प्रकार की सन्दूकें, जिनपर स[...] सोना प्रचुर परिमाण में लगा हुआ है। ये सन्दूकें इस प्रकार ब[...] हुई हैं कि एक सन्दूक दूसरी सन्दूक के भीतर आ जाती है और [...] प्रकार अन्त में सात सन्दूकों की एक सन्दूक हो जाती है। अ[...] सातवीं सन्दूक में तूतएन्ख आमुन की ममी थी। लाश को छोड़[...] इस अजायबघर में एक-दूसरे से अलग कर सात शीशे[...] बक्सों में सजाई गई हैं। इस कफन के सात बक्सों के अ[...] आमुन की कब्र से निकला हुआ न जाने कितना सा[...] है—तूतएन्ख आमुन के बैठने की स्वर्ण की कुर्सियां, [...]

प्राचीन मिस्र के स्मृति-चिह्नों में इस समाधि के संग्रह का स्थान सबसे महत्त्वपूर्ण है और काहिरा के अजायबघर में भी सबसे आकर्षक वस्तु यही है।

इस कब्र के सामान के सिवा अजायबघर का अन्य अधिकांश सामान भी मृतकों से ही सम्बन्ध रखता है, इसलिए मैंने तो इस अजायबघर का नाम मुरदों का अजायबघर रखा। प्राचीन मिस्र में मृतक शरीर का बड़ा महत्त्व था। उसे इस प्रकार के मसाले लगाकर कफन में बन्द किया जाता था कि लाश हजारों वर्षों के बीत जाने पर भी सड़ती न थी और सुरक्षित रहती थी। यह मसाला किन चीजों से बनता था, इसका पता अनेक प्रयत्न करने पर भी अब तक वैज्ञानिक नहीं लगा पाए हैं। यद्यपि रूस में लेनिन की लाश को भी सुरक्षित रखने का प्रयास किया गया है, परन्तु लेनिन की मृत्यु को अभी बहुत समय नहीं बीता है और सुना जाता है कि उसके इधर-उधर से सड़ने के कुछ लक्षण भी दिखाई पड़ने लगे हैं। फिर पुराने मिस्र में लाशों को इस प्रकार सुरक्षित रखने के प्रयत्न के अतिरिक्त लाशों के साथ जीवित अवस्था के उपयोग का सामान भी गाड़ा जाता था। प्राचीन मिस्र के लोग यह मानते थे कि मृतक कब्र में इस सब सामान का उपयोग कर सकेगा। मेरे मन पर तो मुरदों के इस अजायबघर का बड़ा बुरा प्रभाव पड़ा। मुझे मृतकों की बड़ी-बड़ी समाधियां, मकबरे आदि कभी भी अच्छे नहीं लगते, फिर मिस्र के इस अजायबघर में तो इस मुरदावाद की पराकाष्ठा है। इन समाधियों, मकबरों, मुरदों से सम्बन्ध रखने वाली सभी प्रकार की वस्तुओं में मुझे आसक्ति-भावना परमोत्कृष्ट रूप में दिख पड़ती है और जब मैं इन वस्तुओं को देखता हूं तब मुझे सदा हिन्दुओं का दर्शन स्मरण हो आता है। हिन्दुओं में मृतक शरीर के अवशेष को भी कभी नहीं रखा जाता। लाश जला दी जाती है, भस्म और हड्डियों को किसी पवित्र नदी में प्रवाह कर दिया जाता है। जिस स्थान पर लाश का अग्नि-संस्कार होता था वहां भी पहले [illegible] या छतरी नहीं बनती थी। यह प्रथा [illegible]-बौद्धों और

पापाण-मूर्ति, तूतएन्ख ग्रामुन की पापाण-मूर्ति, रेमोसेस द्वितीय की ममी, लगभग ३४०० वर्ष पुराना एक चित्र और ३३२६ वर्ष पुराना एक मिस्री मकान का नक्शा।

ससार की सम्यता का सूत्रपात मिस्र में हुआ, आज अधिकांश विद्वान यही मानते हैं। मिस्र में ही प्रथम भौतिक सस्कृति, स्थापत्य-कला, कृषि-बागवानी एव वस्त्र-विन्यास का विकास हुआ। वहीं पर सर्वप्रथम भौतिकशास्त्र, खगोलशास्त्र, ओषध-विज्ञान, इंजीनियरी आदि का विकास हुआ। वहीं पर सर्वप्रथम न्याय, शासन-व्यवस्था एव धर्म की नीव पड़ी। यूरोप को बाद में जो कुछ यूनान ने दिया उसे यूनानियो ने मिस्र से ही प्राप्त किया था। यूनानी इतिहासकारो ने स्वयं ही मिस्र की नील घाटी के ज्ञान-भण्डार के प्रति आभार प्रकट किया है, जिसे उन्होंने मौखिक रूप मे प्राप्त किया था।

जैसा पहले कहा जा चुका है, मिस्र की सम्यता का उदय प्रागैतिहासिक काल से अर्थात् ईसा से कोई सात हजार वर्ष पूर्व मेनेस के शासन-काल से मिलता है, यद्यपि कुछ इतिहासकार मिस्र के इतिहास को तीन हजार चार सौ वर्ष प्राचीन ही मानते हैं।

अत्यन्त सकरे नीलघाटी प्रदेश मे इस सम्यता का क्योंकर उदय हुआ, यह अवश्य ही बड़े आश्चर्य की बात है। भौगोलिक दृष्टि से देखने पर मिस्र को एक लाभ अवश्य था कि वह तीन महाद्वीपों के ससर्ग मे था, एशिया, यूरोप और अफ्रीका। हो सकता है कि अपनी इस विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के कारण ही मिस्र सम्यता का भी केन्द्र-बिन्दु बन गया हो। मिस्र की सम्यता का पता उस सामान से ही तो चलता है जो कि मिस्रवासी मुरदों के साथ कब्र में गाड़ दिया करते थे। अनावृष्टि और शुष्क जलवायु के कारण वे वस्तुएं आज भी सुरक्षित अवस्था मे मिल जाती हैं।

मिस्र के इतिहास में इतने अधिक शासकों ने राज्य किया कि उनको ३० राज-वंशों में बांटकर ही स्मरण रखा जा सकता है।

शासन की बागडोर सम्हाली, और मिस्र को एक प्रजातन्त्र (रिप
घोषित किया। पर नजीब भी बहुत दिन नहीं रह सका और न
के बाद आए नासिर।

मिस्र के निवासियों में भिन्न-भिन्न स्थान के लोग हैं, यह
कहा जा चुका है। यहां ८१ प्रतिशत मुसलमान हैं। ९२ प्रति
लोगों की आजीविका खेती है, कपास, अनाज, चीनी प्रमुख पैदा
हैं। मिस्र से निर्यात कपास, बिनौलों, प्याज और सोना-चांदी का हो
है, आयात तम्बाकू, चावल, कोयला, खाद और कपड़े आदि का हो
है। जैसा कहा जा चुका है, मुख्य निर्यात कपास का ही है। शि
का स्तर बहुत ऊंचा नहीं है, यद्यपि प्राइमरी, सेकण्डरी तक शि
स्कूलों का प्रबन्ध है और दो सरकारी विश्वविद्यालय भी हैं।

१९३३ में ही मिस्र में ७ से १२ वर्ष तक की उम्र के बच्चों के
लिए शिक्षा अनिवार्य कर दी गई थी। १९४४ में प्राथमिक शिक्षा
मुफ्त कर दी गई और १९५० में माध्यमिक शिक्षा। १९५१ में बच्चों
के लिए किंडर गार्टन स्कूलों की संख्या २३३ थी, जिनमें ८४ हजार
से अधिक विद्यार्थी थे। सरकारी और गैर सरकारी प्राइमरी स्कूलों
की संख्या ६,५८३ और सेकण्डरी स्कूलों की संख्या १७७ थी। मिस्र
की सरकारी भाषा अरबी है।

मिस्र की अर्थ-व्यवस्था पर विचार करते समय यह नहीं भूलना
चाहिए कि एक तो वहां की आबादी बहुत घनी है और दूसरे बेकारी
बहुत बढ़ी हुई है। नील घाटी के चप्पे-चप्पे में जिस तरह खेती होती
है और वहां जितने अधिक कपास की उपज होती है, उतनी तो
कदाचित् दुनिया के किसी भाग में नहीं होती, किन्तु इसपर भी मिस्र
के किसानों के रहन-सहन का स्तर बहुत निम्न है। स्वास्थ्य और
मकान आदि की स्थिति बड़ी खराब है। कहा जाता है कि इस समस्या
का मूल कारण भूमि का अनुचित वितरण है। इसके अतिरिक्त खेती
के तरीके भी पुराने ढंग के हैं।

दिल्ली छोड़े हमें अभी दो दिन ही हुए थे, पर इन दो दिनों में ही हमने कितना देखा और समझा था। महीनों और हफ्तों जिन यात्राओं में लगते थे उन्हें शनैः-शनैः उत्तरोत्तर शीघ्रगामी यातायात के साधनों ने कितना सुगम बना दिया था। इन दो दिनों में हम हजारों मील उड़ चुके थे। एक प्राचीनतम मिस्र देश को देखकर हम एक-दूसरे प्राचीनतम देश यूनान को जा रहे थे। किसी समय इन दोनों देशों का संसार में कितना महत्त्व था! आज पुरातत्त्ववेत्ताओं या इतिहास अथवा कला-प्रेमियों के सिवा किसीकी दृष्टि में भी इन देशों का कोई महत्त्व न रहा था। पर इन दो दिनों में भी मिस्र में हमने जो कुछ देखा था और उसके सम्बन्ध में अब तक जो कुछ पढ़ा था उसके कारण वायुयान की रफ्तार के साथ ही हमारे मन में एक पर एक न जाने कितनी बातें उठने लगीं।

ठीक समय हमारा वायुयान एथिन्स रवाना हो गया।

यूनान

हमारा वायुयान एथिन्स काहिरा के समय से १२ बजे रात्रि को पहुंचा, पर एथिन्स का इस समय १ बज चुका था। एथिन्स कुछ ऐसे स्थान पर है कि काहिरा के पश्चिम में पड़ता है अतः यहां का समय काहिरा से उलटा एक घंटा आगे रहता है।

एथिन्स में उतरते ही मुझे 'ट्रायल ऐण्ड डेथ आफ साक्रेटीज' पुस्तक में कभी पढ़े हुए सुकरात के संवाद स्मरण हो आए। जिस समय यूनान अपने उत्कर्ष की चरमसीमा पर था उस समय वहां संसार के सर्वश्रेष्ठ विचारकों में से एक सुकरात ने मानव की विचार-धारा को एक विशिष्ट प्रवाह में बहाने का जो प्रयत्न किया था, हजारों वर्षों के बीत जाने पर, उसका अपना एक महत्त्व है। आज भी सुकरात के उन संवादों को पढ़ मानव के ज्ञान की सीमा कितनी बढ़

जाती है।

जिस न्यायालय ने सुकरात को प्राणदण्ड दिया उसमें उन्होंने क्या अनुरोध किया, ज़रा गौर कीजिए—"आपसे मेरी केवल एक ही याचना है। जब मेरे पुत्र बड़े हों और आपको ऐसा प्रतीत हो कि उनमें थोड़ी-बहुत धन-लिप्सा है अथवा उनमें गुण-ग्राहकता के अतिरिक्त अन्य कोई प्रवृत्ति है तो आप उन्हें दण्ड दें और उन्हें उसी प्रकार सताएं जिस प्रकार मैंने आपको सताया है। यदि वे कुछ भी न होते हुए कुछ होने का प्रपंच रचें तो आप उनकी इस प्रकार भर्त्सना करें जैसे मैंने आपकी की है। यदि आप ऐसा करेंगे तो हम समझेंगे कि मुझे और मेरे पुत्रों के साथ न्याय हुआ है।'''खैर, अब हम लोगों का समय हो गया, मेरे लिए मृत्यु के आलिंगन करने का और आपके लिए जीवन-उपभोग करने का, पर हम दोनों में कौन अच्छी यात्रा को अग्रसर हो रहा है, यह एक ईश्वर के सिवा और कोई नहीं कह सकता।"

ऐसा ही एक और उदाहरण लीजिए—"गलत शब्दों का प्रयोग अपने-आप में तो एक त्रुटि है ही, उससे आत्मा भी कलुषित हो जाती है।"

सुकरात ने यूनानी दर्शन और विचारधारा को एक नई दिशा में ढाला। उनसे पहले सभी दार्शनिक भौतिकवादी थे, किन्तु उन्होंने उसमें अध्यात्मवाद का पुट दिया जिसे बाद में उनके मेधावी शिष्य अफलातून ने चरम उत्कर्ष पर पहुंचा दिया। ऐसे सुकरात को उस समय के एथिन्स के निवासियों ने प्राणदण्ड दिया था और इस प्राणदण्ड की घोषणा के बाद जेल से भागने के समस्त साधनों के उपलब्ध होते हुए सुकरात ने जेल से भागना अनैतिक मान, प्राण बचाने की [illegible] की रक्षा के लिए प्राण देना ही उचित माना था। जेल [illegible] प्राण बचाना उचित है या प्राण देना, इस विषय पर भी [illegible] ने जेल में ही एक लम्बा वाद-विवाद किया था। इस विवाद [illegible] प्रतिपादित किया था कि आत्मा अमर है, मृत्यु एक चिर

के समान है जो घानी ही है और मनुष्य को छुटकारा दिला देती है। इसीलिए मनुष्य को अपनी आत्मा में विश्वास रखना चाहिए। सुकरात के ये विचार गीता के उस उपदेश से मिलते-जुलते हैं जो भगवान कृष्ण ने रणभूमि में अर्जुन को दिया था कि यह संसार कर्मभूमि है, मनुष्य के मन को दुर्बल बनाने वाली माया-ममता मनुष्य को पास नहीं फटकने देनी चाहिए और अनासक्त भाव से कर्तव्य-रत रहना चाहिए। यह सोचना कि कोई किसीको मार सकता है या आत्मा मर सकती है, कोरा भ्रम है। नीचे दिया गया एक अंश उस समय का है जब सुकरात से यह प्रश्न पूछा गया कि आपको किस तरह दफनाया जाए—"यदि मैं आपकी पकड़ में आऊं और बचकर न जा सकूं तो आप मुझे जैसे चाहें दफना दें।"''क्रीटो को समझाना मेरे लिए कठिन है कि वही तो मैं सुकरात हूं जो आपसे इस समय वार्तालाप कर रहा हूं। वह समझता है कि मैं तो वह हूं जिसे अभी थोड़ी देर में मृत पाया जाएगा और उसकी जिज्ञासा है कि वह मुझे किस प्रकार दफनाए। मुझे यह आश्वासन दिलाने के लिए खासा लम्बा भाषण देना पड़ा है कि ज़हर का प्याला पीते ही मैं यहीं नहीं रहूंगा बल्कि उन सुखों का उपभोग करने चला जाऊंगा जो इस संसार से जाने वालों को प्राप्त होते हैं। किन्तु मुझे प्रतीत होता है कि अपने को और आपको इस प्रकार सान्त्वना देने का भी क्रीटो पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसलिए जिस प्रकार न्यायाधीशों के लिए क्रीटो मेरा ज़ामिन बना था, उसी तरह आप मेरे ज़ामिन बनिए, किन्तु भिन्न रूप में। क्रीटो इस बात के लिए ज़ामिन हुआ था कि मैं यहां रहूंगा। आप इस बात के लिए ज़ामिन बनिए कि मैं अवश्य नहीं रहूंगा बल्कि ओझल और अदृश्य हो जाऊंगा। तब क्रीटो को कम पीड़ा होगी और जब वह मेरा शरीर जलते या दफनाए जाते देखेगा तो वह यह सोचकर मेरे लिए शोक नहीं करेगा कि कोई दुखद बात तो नहीं हो रही है और मेरे अंतिम संस्कार पर यह नहीं कहेगा कि हम सुकरात को दफना रहे हैं।"

गरल-पान से पहले जब क्रीटो ने कहा कि अभी तो सूर्य पर्वत-शिखर पर है और दिन पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ इसलिए आप अभी क्यों विष-पान करते हैं तो सुकरात ने उत्तर दिया—"कुछ देर बाद में ही विष-पान करने से क्या हाथ आएगा ? कुछ क्षण और जीवित रहकर और इस प्रकार जीवन के प्रति आसक्ति दिखाकर मैं स्वयं अपना ही तो उपहास करूंगा।" इस प्रकार हंसते-हंसते उस साहसी वीर ने ईश-वंदना की और विष-पान कर लिया। कितनी दुःखद और दारुण थी यह मृत्यु पर इससे पहले ही सुकरात ने अपने साथियों से कह दिया था कि "खबरदार, आप लोगों में से कोई न रोए, क्योंकि रोना कमजोरी का लक्षण है और मुख्य रूप से इसीलिए मैंने स्त्रियों को यहां से दूर हटवा दिया है।"

सुकरात को प्राणदण्ड दिया गया था विचार-स्वातन्त्र्य के प्रचार के अपराध पर। सुकरात के बाद भी पश्चिम में इस प्रकार के अनेक महापुरुषों को इसी प्रकार के दण्ड मिले हैं, जिनमें मुख्य हैं जीसस क्राइस्ट। विचार-स्वातन्त्र्य की सहिष्णुता एक बड़ी भारी महत्वशीलता है। भारत में हमें यह सहिष्णुता जितनी अधिक दिखाई देती है उतनी संसार के किसी देश में नहीं। भारतवासी आरम्भ से ही ईश्वरवादी रहे हैं, पर यदि कोई विरला व्यक्ति निरीश्वरवादी भी हुआ है और उसने अपने मत का प्रचार करने का प्रयत्न किया है तो उसे कभी भी नहीं रोका गया। भगवान राम के समय यदि एक ओर ईश्वरवादी ऋषि-मुनियों के आश्रमों की बड़ी भारी संख्या थी तो दूसरी ओर चार्वाक् के इकलौते निरीश्वरवादी मत को भी रोकने कोई प्रयत्न नहीं हो रहा था। बाद में बौद्ध और जैन मत को [illegible] नहीं रोका गया। विचार-स्वातन्त्र्य, और हर व्यक्ति को [illegible] की आज़ादी हमारी संस्कृति की प्रधान [illegible] है। भारत को छोड़ विचार-स्वातन्त्र्य की ऐसी उदात्तता या किसी संस्कृति में देखने को नहीं मिलती।

[illegible] दिन प्रातःकाल नित्य कर्मों से छुट्टी पा कोई १० बजे दिन

के कदाचित् दर्शन करना चाहते थे, पर यत्र-तत्र बहुत कम लोगों में हमें पुराने यूनान की बनावट नज़र आई। शेष वे सर्वथा आधुनिक। पोशाक स्त्री और पुरुषों की पूर्ण रूप से यूरोपीय थी। मिस्र में जो थोड़ी-बहुत स्त्रियां काले बुरके पहनती थीं और कुछ पुरुष गले से एडी तक लम्बे झीने तथा फुंदने वाली लाल तुर्की टोपियां वैसे प्रकार के वस्त्र यहां के लोगों के न थे। आखिर अब हम यूरोप में आ गए थे।

एथिन्स दक्षिण-पश्चिमी यूरोप के अन्य किसी नगर जैसा ही है। वेश-भूषा में भी कोई विशेष परिवर्तन नहीं पाया जाता, हां, इनके वस्त्र कुछ हल्के अवश्य होते हैं और हैटों का किनारा कुछ मोटा होता है। दो बातों से हमने अन्दाजा लगा लिया कि एथिन्स मध्यपूर्व की सीमा का ही एक नगर है। एक तो हमें कभी-कभी तुर्की फैज टोपियां दिखाई पड़ीं और दूसरे सड़कों पर मिठाइयों और पुष्प आदि बेचने वाले दिखाई दिए, जो हमारे यहां के फेरी वालों से मिलते-जुलते हैं। छोटी-छोटी गलियों और बाजारों में आपको लुहारों, चमारों आदि की दूकानें भी पूर्व के वातावरण का बोध कराती हैं।

अब हमने एक ऐसी टैक्सी-मोटर का प्रबन्ध किया, जिसका ड्राइवर अंग्रेजी जानता था। और इस टैक्सी पर हम नवीन एवं प्राचीन दोनों प्रकार के एथिन्स को पूर्ण रूप से देखने के लिए रवाना हुए।

निश्चित ही एथिन्स का सबसे सुन्दर स्थल आक्रोपोलिस पर्वत पर पोर्थेनोन के खण्डहर हैं। यहां एथीना का मन्दिर था जो संग-मरमर का बना था और प्राचीन यूनानी कला का सर्वोत्कृष्ट नमूना बताया जाता है। १६८७ ई० तक यह मन्दिर ज्यों का त्यों रहा, किन्तु १६८७ में भूकम्प का धमाका होने से इसे विशेष क्षति पहुंची। आज इस मन्दिर में केवल स्तम्भ-मात्र हैं और एथीना की मूर्ति भी नहीं है, फिर भी यह एक महान उत्कृष्ट कलाकृति है। सहसा मैं कल्पना की पांखों पर गया और सोचने लगा, कैसा भव्य रहा होगा यह [illegible] समय यह अपने पूर्ण यौवन पर था। इस मन्दिर के [illegible] आधुनिक एथिन्स नगर दिखाई देता है। मीनियम

भी यहां से दिखाई पड़ता है जो प्राचीन यूनान का सबसे अधिक सुरक्षित मन्दिर है। इस मन्दिर से हमें इसके निर्माण की वास्तुकला की कुशलता और सौंदर्य-बुद्धि का परिचय मिलता है।

हम ओलिम्पियन ज़ीयस का मन्दिर भी देखने गए। वहां पन्द्रह विशाल स्तम्भ स्थित हैं। यह मन्दिर पहले दोनों मन्दिरों के बाद का है, किन्तु यूनान के सबसे बड़े मन्दिरों में से है। जनश्रुति है कि यह मन्दिर उस स्थल पर निर्मित है जहां प्रलय का जल भूमि में विलीन हो गया था।

नयी चीज़ों में होटल के सामने का मैदान तो हमारा ध्यान विशेष रूप से आकर्षित कर ही चुका था, इसके अतिरिक्त जिन दो नई इमारतों ने हमें सबसे अधिक प्रभावित किया, वे थीं एथिन्स के विश्वविद्यालय और अकादमी की इमारतें। विश्वविद्यालय की इमारत की विशेषता थी उसकी चार मूर्तियां। इमारत के ऊपर की गुम्बज के दोनों ओर यूनान की पुरानी देवी 'एथीना' और एक पुराने देवता 'अपालो' की मूर्ति बनी है। एथीना की मूर्ति वस्त्र पहने हुए है, पर अपालो के सिर पर मुकुट और ऊपर के शरीर पर इधर-उधर कुछ वस्त्र के प्रदर्शन के अतिरिक्त शेष मूर्ति नग्न है। दोनों मूर्तियां नई हैं, परन्तु उनके चेहरे और अंग पुरानी यूनानी कला के अनुरूप हैं। यूनान की मूर्ति एवं चित्र दोनों कलाओं में पुरुषों और स्त्रियों को अधिकतर नग्न रूप में ही प्रदर्शित किया गया है। इसका कारण मानव-शरीर के सौंदर्य का प्रदर्शन है, कोई कामुक भावना नहीं और सच्ची कलामय इन मूर्तियों तथा चित्रों के दर्शन से मन में कोई विकारमय भावनाएं उत्पन्न भी नहीं होतीं। नीचे की सीढ़ियों के दोनों ओर सुकरात और अफलातून की मूर्तियां थीं। ये भी कोई प्राचीन काल की बनी हुई मूर्तियां नहीं हैं, आधुनिक काल में ही बनी हैं, पर कितने भावपूर्ण थे इनके चेहरे ! सुकरात के मुख पर जो भावनाएं चित्रित की गई थीं उनसे जान पड़ता था जैसे वे समस्त संसार का मज़ाक उड़ा रहे हैं और अफलातून के मुख से अत्यधिक गम्भीर चिन्तन दिख पड़ रहा

थे। बीरो के शहरों की और यूरोप का प्राचीन इमारतों के
के अद्भुत रूप, जो पार्थेनन में भी पाये जाते थे। पार्थेनन
इमारत की प्राचीन की दीवार में पायी। यूनान के कुछ सुन्दर
लिए विशिष्ट थे और हमें इस इमारत की बड़ी प्रशंसा करनी पड़ी। दिख
पड़ रही।

शाम का लंच (दोपहर का भोजन) हमने समुद्र के किनारे एक रेस्तरां में किया। यह स्थान यद्यपि साधारण स्थानीय था, परन्तु हवा और प्रकाश का समुद्रतट इसमें कहीं अधिक सुन्दरता है। सामने ही और अनेक स्त्री-पुरुष समुद्र में नहा रहे थे तथा अनेक प्रकार की जल-क्रीडाएं कर रहे थे। स्त्रियों की जल-विहार की पोशाक हम को कुछ शालीन ज्ञात नहीं। गले से बहुत नीचे तक का अंग, पूरी भुजाएं और पैरों से बहुत ऊपर तक आधे सर्वथा खुली हुई। केवल वक्षस्थल का थोड़ा-सा हिस्सा और कमर से जांघ के प्रारम्भ होने तक का थोड़ा-सा भाग ढका हुआ था। स्त्री-पुरुष साथ-साथ नहाते हुए इस जल-विहार में मग्न थे। कई लोग रेस्तरां में खाना भी खा रहे थे और समुद्र की बालू पर लेटे हुए अपने अंगों को और भी अधिक खोलकर सूर्य-स्नान कर रहे थे।

लंच के बाद हम कुछ समय और इधर-उधर घूमकर होटल पहुंचे और फिर होटल के सामने के उस सीमेंट के मैदान में पैदल घूमने को निकले, जो मैदान अब एथिन्स के नागरिकों से खचाखच भर गया था। इस घुमाई में हमें एथिन्स के नागरिक जीवन का पूरा पता लगा। यह पहला यूरोपीय नगर था जहां इस दौरे में हम आए थे। हमें यहां का सारा जीवन एकदम 'ईट, ड्रिंक एंड बी मेरी'—खाओ-पियो मस्त रहो के अनुरूप जान पड़ा। यूरोप नित्य के जीवन में भी कितना भौतिकवादी हो गया है, इसका यह समुदाय प्रत्यक्ष उदाहरण था। हमारे देश को भी हमारे पूर्ण अध्यात्मवादी होने तथा आधिभौतिकता से आंखें बन्द कर लेने से यथेष्ट हानि हुई है, इसमें सन्देह नहीं, पर यदि जीवन का लक्ष्य केवल 'ईट, ड्रिंक ऐन्ड बी मेरी' हो जाए तो वह

भी इकंगा जीवन ही होगा। जीवन मे अध्यात्म और अधिभूत दोनों का उचित मिश्रण होने से ही वह पूर्ण जीवन हो सकता है।

दूसरे दिन हमने यूनान के दो अजायबघर देखे। इनमे एक का नाम था 'बिनैकी म्यूजियम' और दूसरे का 'नेशनल म्यूजियम'। बिनैकी म्यूजियम का सग्रह विविध प्रकार का है—मूर्तिया, चित्र, कपडे, आभूषण, हथियार आदि। सारा सग्रह बडी सुन्दरता से सजाया गया है, परन्तु सग्रह में हमें कोई विशेषता न जान पडी। नेशनल म्यूजियम देखकर तो हमें बडी निराशा हुई। हम आशा करके गए थे कि वहा हमें यूनान की वे मूर्तिया देखने को मिलेंगी जिनकी छोटी-छोटी प्रतिमूर्तिया एव चित्र हम न जानें कितने वर्षों से कितने स्थानो एवं कितने रूपो में देखते आ रहे हैं। परन्तु वहां जाने पर मालूम हुआ कि वह सारी सामग्री गत लडाई के समय बन्द करके रख दी गई है। लडाई समाप्त हुए वर्षों बीत चुके थे और इन वर्षों में दुनिया में न जाने कितनी नई-नई एव महत्त्वपूर्ण बातें हो चुकी थी, फिर इस सामग्री को यूनान वालो ने अब तक क्यों बन्द रखा है, यह हमारी समझ में न आया। नेशनल म्यूजियम का जो सग्रह इस समय वहा था वह यूनान के प्राचीन इतिहास की दृष्टि से सर्वथा नगण्य था। इन दोनों अजायबघरो में कोई विशेषता न होने पर भी मिस्र के मुरदों का अजायबघर देखने से मेरे मन पर जैसा प्रभाव पडा था, वैसा कोई बुरा प्रभाव न पडा।

प्राचीन काल की तरह आज भी एथिन्स यूनान की राजधानी है, किन्तु उसका गौरव उसके वर्तमान मे न होकर उसके अतीत में है। एथिन्स के ध्वस्त खडहर हमे उस वैभव का स्मरण कराते हैं जो कभी था और आज नहीं है, किन्तु कला और सस्कृति के प्रेमी आज भी इस नगर के आकर्षण से बच नहीं सकते।

यूनान का नाममात्र लेने से उस पुरातन देश का स्मरण हो आता है जहां सर्वोत्तम श्रेणी के साहित्य और कला का सृजन हुआ

था। मिस्र, चीन और भारत की तरह इस देश को भी मानव-संस्कृति का एक उद्गमस्थल होने का गौरव प्राप्त है। वर्तमान युग में यूनान का उतना अधिक महत्त्व भले ही न हो, किन्तु सांस्कृतिक दृष्टि से अब भी यूनान सारे संसार को, विशेषकर पश्चिमी संसार को, अनेकांश प्रभावित किए हुए है।

दक्षिण की ओर यूनान प्रायद्वीप भू-मध्यसागर से घिरा हुआ है। उत्तर में अल्बानिया, युगोस्लाविया और बल्गारिया ये तीन बाल्कन देश हैं। यूनान का पश्चिमी तट बहुत ऊंचा और पहाड़ी है। इस तट पर बन्दरगाहों का सर्वत्र अभाव है। इसके विपरीत पूर्वी तट खाड़ियों और बन्दरगाहों से परिपूर्ण है। लगभग सभी बड़े-बड़े नगर पूर्वी तट पर बसे हैं। इटली और यूनान में यही अन्तर है कि इटली के सभी प्रमुख नगर पश्चिमी तट पर हैं जबकि यूनान के पूर्वी तट पर। यूनान में कोई २२० टापू हैं, जिनमें सबसे बड़ा क्रीट है।

यूनान का इतिहास ईसा के जन्म से कई शताब्दी पहले का है। होमर कवि ईसा से कोई एक हजार वर्ष पहले हुआ था। समूची यूनानी संस्कृति ईसा से पहले की है। यूनान देश को तब हैलस कहते थे और यहां के निवासी हैलेनीज कहलाते थे। यूनान तब एक संयुक्त-राष्ट्र के रूप में संगठित न था बल्कि 'नगर-राज्यों' में विभक्त था। इस प्रकार के छोटे-छोटे राज्य होने का कारण भौगोलिक भी हो सकता है, क्योंकि सारा यूनान पर्वत-श्रेणियों द्वारा विभक्त है। इस प्रकार हर एक प्रदेश में अपने अलग शासन तथा रीति-रिवाज और कानून रहे होंगे। इन राज्यों में आपसी सद्भाव अथवा मेल-जोल नहीं पाया जाता था। पारस्परिक स्पर्धा और लड़ाई-झगड़ों में ही अन्त में यूनान की शक्ति का ह्रास हो गया।

यद्यपि उस युग में यूनान में कोई डेढ़ सौ नगर-राज्य थे, पर सबसे बड़ा नगर-राज्य एथिन्स था। यह स्थान समुद्री शक्ति, साहित्य, कला और विद्या का भी केन्द्र था। इसके अतिरिक्त पश्चिम में बोइटिया और दक्षिण में स्पार्टा नामक नगर-राज्य थे। स्पार्टा-निवासी साहसी

सारे संसार में विख्यात था।

यूनान की जिस कला का समस्त संसार पर प्रभाव पड़ा है वह स्थापत्यकला और मूर्तिकला है। स्थापत्यकला में वहां के स्तम्भों की तमाम दुनिया में नकल की गई है। हमारे देश में भी ब्रिटिश साम्राज्य-काल की पुरानी इमारतों, विशेषकर कलकत्ते की इमारतों, में इन स्तम्भों के सदृश ही स्तम्भ बने हुए हैं। कलकत्ते की इन इमारतों में वहां के टाउनहाल के स्तम्भ यूनानी स्तम्भों के पूर्ण प्रतीक हैं। यूनान की मूर्तियों के अंग-प्रत्यंग अत्यन्त सुडौल रहते हैं, इसलिए वहां की प्रसिद्ध मूर्तियां नग्न रहती हैं। यूनान की मूर्तिकला से यदि किसी देश की मूर्तिकला स्पर्धा कर सकती है तो भारत की। यूनान की मूर्तिकला इतनी परिष्कृत रहने पर भी संसार की जो सबसे अच्छी दो मूर्तियां मानी जाती हैं वे भारत की मूर्तियां ही हैं। एक नटराज की मूर्ति और दूसरी सारनाथ की बुद्ध-प्रतिमा।

स्थापत्यकला और मूर्तिकला के अतिरिक्त यूनान का दार्शनिक और ललित साहित्य भी पश्चिम के साहित्य का सर्वोत्कृष्ट साहित्य है और सारा पश्चिमी साहित्य उसी पर आधारित है। ललित साहित्य का सर्वोत्कृष्ट रूप जो नाटक है, भारत के पश्चात् उसका विकास संसार में यूनान में ही हुआ था।

बालकन प्रदेश और यूनान— बालकन प्रदेश में यूनान, अल्बानिया, युगोस्लाविया, हंगरी, रूमानिया, बल्गारिया और टर्की, ये देश आते हैं। दूसरे महायुद्ध में जर्मनी ने इस प्रदेश को रौंद डाला था और रूस को गम्भीर खतरा पैदा हो गया था। युद्ध-काल के तुरन्त बाद रूस ने इस प्रदेश में अपना प्रभाव जमाने की कोशिश की। अपने जीवन के अन्तिम आठ वर्ष में स्तालिन ने बालकन प्रदेश पर सबसे अधिक दबाव डालने का प्रयत्न किया, किन्तु वहीं उन्हें सबसे अधिक असफलता मिली। उन्होंने तुर्की को डराने, धमकाने, यूनान की नीव पर कुठाराघात करने और युगोस्लाविया को पुनः अपने बाहुपाश में लेने की कोशिश की, किन्तु इन तीनों स्थलों पर उन्हें निराश होना पड़ा।

इन तीनों ही देशों में बढ़ती हुई मजबूती स्थिरता न केवल इन तीनों के लिए हितकारी सिद्ध होगी वरन् संसार के लिए भी कल्याणकारी साबित होगी। इन तीनों देशों को एकता का पहला कदम १९५२ में उठाया गया, जब ये देश उत्तरी अटलांटिक सन्धि-संगठन के अधीन औपचारिक रूप से एक दूसरे की सहायता के लिए बाध्य हो गए।

किन्तु इन तीनों देशों को मिलाने पर भी अनेक कठिनाइयाँ अभी भी हल नहीं हो पाई हैं। उदाहरण के लिए एक कठिनाई है यातायात व्यवस्था की। रेल से इन देशों में सम्पर्क स्थापित है, किन्तु यह रेल व्यवस्था संसार में सबसे धीमी गति वाली है। संयुक्त रक्षा के लिए समुचित आयोजन भी आवश्यक है। एक समय प्रेक्षकों का यह भी विचार था कि संयुक्त रक्षा की योजनाओं में इसलिए भी बाधा पड़ेगी कि यूनान और तुर्की तो एटलांटिक सन्धि-संस्था के देश हैं, किन्तु युगोस्लाविया नहीं है। बाल्कन प्रदेश के इन तीनों देशों की मित्रता का एक स्पष्ट परिणाम यह हुआ कि तीनों देशों की राजधानियों में अब यह दृढ़ विश्वास हो गया है कि पूर्वी यूरोप के देश यूरोप में कोरिया की सी स्थिति पैदा नहीं कर सकते। बल्गारिया, रूमानिया, हंगरी अथवा अल्बानिया तब तक कोई आक्रमण स्वयं न कर सकेंगे जब तक कि उन्हें रूस से भारी सहायता प्राप्त होने की आशा न हो।

संसार की भावी परिस्थिति कैसी रहेगी, यह बहुत दूर तक इस बात पर निर्भर है कि संसारव्यापी युद्ध टाला जा सकता है या नहीं। यह सभी जानते हैं कि भारत को छोड़ संसार के सारे देश आज दो गुटों में बटे हुए हैं। यह भी सर्वविदित है कि एक गुट का नेतृत्व अमेरिका के हाथ में है और दूसरे गुट का रूस के। बाल्कन प्रदेश के छोटे-छोटे देश भी यद्यपि इन गुटों के बाहर नहीं हैं, परन्तु फिर भी इतना मानना पड़ेगा कि अपने-अपने गुट की भी हर बात पर इनसे तथास्तु न कहलाया जा सकेगा।

तारीख ५ को दोपहर को १ बजे हमारा वायुयान जाता था।

बिना किसी विशिष्ट घटना के हमने एथिन्स रोम के लिए छोड़ दिया और जब हम एथिन्स से रवाना हुए तब हम सोचने लगे एथिन्स तथा यूनान के सम्बन्ध में अनेक बातें।

इटली

जब हमने इस यात्रा का कार्यक्रम बनाया था तभी कैनेडा और अमेरिका को छोड़ सबसे अधिक समय लन्दन और इटली देश को देने का निश्चय किया था। लन्दन को इसलिए कि ग्रेट ब्रिटेन से हमारा युगों तक सम्बन्ध रहा था, स्वतन्त्र होने के पश्चात् आज भी अपने देश के बाहर हमारा सम्बन्ध ग्रेट ब्रिटेन से ही सबसे अधिक है और इटली को इसलिए कि प्राकृतिक और सांस्कृतिक दोनो ही दृष्टियो से यूरोपीय देशों में इटली का अपना एक विशेष स्थान है। इसीलिए दुनिया के न जाने कितने प्रकृति और संस्कृति के प्रेमी वहा केवल जाते ही न थे, पर अनेको ने अपनी जन्मभूमि न होते हुए भी इटली को ही अपना निवास-स्थान बना लिया था। अंग्रेजी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवियो में से बायरन, शेली, कीट्स आदि इटली मे ही अधिकतर रहते थे और उनकी मृत्यु भी इटली मे ही हुई थी।

इटली को प्रकृति ने असीम सौन्दर्य दिया है। वहा की पर्वत-श्रेणियां, वन, झीलें, नदियो के तट आदि सभी स्थलो पर प्रकृति के भिन्न-भिन्न प्रकार के सुन्दर स्वरूप अपनी अद्भुत छटा दिखाते हैं। यूनान के बाद वहा की सारी संस्कृति का केन्द्र रोम हो गया था और सिकन्दर के बाद रोमन साम्राज्य के सीजरो ने अपने राज्य-विस्तार के साथ-साथ संस्कृति का विस्तार और भी प्रचुर परिमाण मे किया था। रोम नगर शताब्दियों तक पश्चिमी संसार का हर दृष्टि से प्रधान नगर रह चुका था। संगमरमर की खानो के बाहुल्य तथा उन खानों से निकलने वाले अत्यधिक शुभ्र साथ ही भिन्न-भिन्न रंग के पत्थरो

ने यहां की स्थापत्य और मूर्तिकला के उत्कर्ष में कितना योग दिया था! माइकेल एंजेलो, राफेल आदि चित्रकारों ने दीवालों पर तथा कैनवास पर जैसे महान और सजीव चित्र बनाए हैं वैसे चित्र संसार के अन्य किसी देश में किसी जमाने में भी निर्मित नहीं हुए। यद्यपि सिसरो के समान दार्शनिक और दांते के समान महाकवि भी उस भूमि पर जन्म ले चुके थे, फिर भी इतना कहे बिना नहीं रहा जा सकता कि स्थापत्य, मूर्तिकला और चित्रकला का वहां जितना विकास हुआ था, दर्शन तथा साहित्य का नहीं। दर्शन में भारत एवं साहित्य में अन्य अनेक देश इटली से कहीं आगे रह चुके थे और आज भी हैं।

इटली दक्षिण यूरोप के मध्यभाग में एक प्रायद्वीप है। इसके पूर्व में एड्रियाटिक सागर है, दक्षिण में आयोनियन सागर और पश्चिम में टाइरनियन सागर। दूसरी बड़ी लड़ाई के बाद इटली के चार जिले फ्रांस के पास चले गए और कुछ भाग यूगोस्लाविया, यूनान, अल्बानिया आदि के पास चला गया। इसी प्रकार इटली के उपनिवेशों पर भी उसका नियन्त्रण नहीं रहा।

यूरोप का नक्शा देखने से इटली की आकृति एक बूट जैसी है, जिसके पंजे के सामने सिसली एक ऐसा तिकोना पत्थर प्रतीत होता है, जिसमें वह ठोकर मारने ही वाला हो। समूचे इटली की लम्बाई ७६० मील है, चौड़ाई उसकी डेढ़ सौ मील से किसी भी स्थान पर अधिक नहीं है, अधिकतर तो सौ मील ही है। इटली का क्षेत्रफल है १,३१,००० वर्गमील। वहां की आबादी है चार करोड़ सत्तर लाख से कुछ अधिक। रोम अभी भी इटली का प्रधान नगर एवं यहां की राजधानी है। यहां की आब-हवा मातदिल है। जाड़ों में बहुत कम स्थानों पर बरफ गिरती है और गर्मियों में सख्त गर्मी नहीं होती। आजकल वहां गर्मी का मौसम चल रहा था।

हमारा हवाई जहाज जिस समय रोम पहुंचा उस समय रोम के तीसरे पहर के २॥ बजे थे। रोम का समय एथिन्स से एक घण्टे पीछे। हमारे ठहरने की व्यवस्था भारतीय दूतावास ने ही रिमने (अंग्रेजी

में रायल) होटल में की थी। हवाई भड्डे से हम होटल आए। रास्ते में हमें रोम नगर का कुछ भान हो गया। काहिरा और एथिन्स के सदृश रोम भी एक आधुनिक नगर है, पर कई जगह दिल्ली के पुराने फाटकों और शहरपनाह के सदृश यहां भी प्राचीन रोम के कुछ फाटक तथा यहा-वहा से टूटी हुई चाहरदीवारी के कुछ हिस्से दीख पड़ते हैं। कुछ सगमरमर के प्राचीन मकान भी हैं और उनपर कुछ मूर्तिया। रोम में काहिरा और एथिन्स के सदृश स्वच्छता हमें दृष्टिगोचर न हुई। यहा के निवासियों में हमें गेहुए वर्ण की झाई और अधिक दिखाई दी। स्त्री-पुरुष सभी की वेश-भूषा यूरोपीय थी।

रात को एक मार्ग-प्रदर्शक की पर्यटक बस में अन्य अनेक यात्रियों के साथ हम रात्रि के रोम को देखने चले। रात्रि को रोम सचमुच सुन्दर जान पड़ा। बिजली के भिन्न-भिन्न रगो के ट्यूबों से बने हुए बाजारों की दुकानों के साइनबोर्डों तथा अन्य प्रकार के बिजली के प्रकाश से सारा नगर जगमगा रहा था। दोपहर को हवाई अड्डे से होटल जाते हुए हमें रोम में स्वच्छता की जो कमी दृष्टिगोचर हुई थी रात्रि को वह भी छिप गई थी। पर्यटक बस चलती जाती और मार्ग-प्रदर्शक लाउड स्पीकर द्वारा स्थानों का वर्णन करता जाता, अग्रेजी और फ्रासीसी दो भाषाओं में।

सबसे पहले हमें एक फव्वारा दिखाया गया। इसकी पानी की धाराए नीचे लगे बिजली के बल्बों के कारण रग-बिरगी हो गई थीं। फव्वारे को भली भाति देखते हुए हम रोम की सगमरमर की प्रसिद्ध इमारत, विक्टर इमेनुअल मेमोरियल पहुचे। बस यहा खडी हो गई और हम सब यात्रियों ने बस से उतर इस इमारत का निकट से परीक्षण किया। मार्ग-प्रदर्शक ने इस इमारत का पूरा विवरण बताया जो इस प्रकार है—सम्राट इमेनुअल द्वितीय के स्मारक के रूप में इस इमारत का निर्माण सन् १८८५ से १९११ के बीच हुआ था। यह स्मारक इटली की एकता और स्वतन्त्रता का प्रतीक माना जाता है। इसका यह काम सम्राट विक्टर द्वितीय के शासन-काल में

[illegible] हुआ था। इसका [illegible] नामक कलाकार ने निर्माण
किया था। यह [illegible] स्थापत्य का नमूना हुआ है। एक [illegible]
[illegible] की कला की पूर्ति है। इस [illegible] को देख के बजाय
हम रोम के कुछ पुराने [illegible] को देखने चले। इसके बाद हम एक
रोम के एक पुराने दुर्ग पर बने [illegible] एक देखते हैं। [illegible]
[illegible] के [illegible] में न [illegible] जो रोम की प्रसिद्ध [illegible]
थी, पर हम [illegible] से [illegible] कर सके। कहा जाता है कि रोम की
[illegible] में सबसे [illegible] होती है और [illegible] पर भी इसी [illegible]
कि [illegible] न थी उसकी [illegible] कम।

[illegible] में एक हम रोम के एक प्रसिद्ध रात्रि-भवन में। रात्रि-भवन की भीतरी शोभा से हमने सर्वप्रथम रोम में ही देखी। यह रात्रि-भवन हम लोगों का [illegible] के उपरान्त तथा [illegible] करने का [illegible] दृष्टिगोचर हुआ। एक विशाल मण्डप में मेजें और कुर्सियाँ पड़ी हुई थीं। एक ओर था रामसम, क्लैरियनेट, वायलिन आदि सारे पश्चिमी वाद्य-यन्त्रों का एक अच्छा आर्केस्ट्रा बज रहा था। मण्डप की कुर्सियाँ भरी हुई थीं नर और नारियों से, जो खा रहे थे, पी रहे थे, धीरे-धीरे वार्तालाप करते हुए मुस्करा रहे थे, और झूम रहे थे। सबसे अधिक पी जा रही थी वारुणी। आर्केस्ट्रा के सामने कभी होता था नृत्य और कभी गान। इटली की भाषा तो हम जानते न थे, अतः जब गान होता तब गायकों की स्वर-लहरी ही हम सुन पाते तथा उन स्वरों के साथ देख पाते गायकों के हाव-भाव, हाँ, नृत्य हम उसी तरह देख सकते जिस तरह अन्य लोग। नृत्य की अपनी एक भाषा होती है जिसे कहा जाता है मुद्राएँ और जो मुद्रा-शास्त्र में पारंगत नहीं होते वे इन मुद्राओं का एक-सा ही अर्थ लगाते हैं। फिर इस रात्रि-भवन के नृत्य की मुद्राओं का अर्थ समझ सकना तो बड़ा ही सरल था। उनमें भारतीय नृत्य-पद्धतियों—भारत-नाट्य, कथाकली, गरबा, मनीपुरी और कथक पद्धतियों में से किसीकी भी गूढ़ता न थी। रूस की प्रसिद्ध नर्तकी मैडम पवलवा की इस

घोषणा की, कि भारत ने ही नृत्यकला और वैज्ञानिक नृत्यकला का सर्वप्रथम आविष्कार किया है और भारत की नृत्यकला सर्वोत्कृष्ट नृत्यकला है, यद्यपि अनेक वर्ष बीत चुके थे तथा भारत के प्रसिद्ध नर्तक श्री उदयशंकर और रामगोपाल आदि की पश्चिम सराहना भी काफी कर चुका था, परन्तु इस रात्रि-क्लब के इस नृत्य मे उन मुद्राओ का कोई स्थान न था। यहा के नृत्य की तो सारी मुद्राओ का एक ही अभीष्ट या—कामुकता। ये नृत्य कर रही थी रोम की कुछ तरुणियां, जिनके शरीर केवल दो स्थानो पर ही ढके हुए थे—वक्षस्थल कोई चार-चार इंच डायमीटर की चोलियों से और जाघो के बीच कोई तीन-तीन इंच चौड़ी पट्टियों से। शेष सारे अग खुले हुए थे। एथिन्स मे जल-विहार करने वाली सुन्दरियों के शरीर पर भी हम वस्त्रो की कमी देख चुके थे, पर यह रात्रि-क्लब तो इस दृष्टि से एथिन्स के समुद्र-तट से कही आगे बढ़ा हुआ था।

जब हम लोग यहा पहुंचे तो यह पौने सोलह आना तक नग्न शरीरों वाला कामुक नृत्य वहा को छ तरुणियां कर रही थी। इसके बाद हुआ एक गान और फिर एक पुरुष और स्त्री का नृत्य। यह पुरुष-स्त्री का नृत्य क्या एक बलशाली कामुक कुश्ती थी। कामलीला में बल की पराकाष्ठा तक प्रयोग का प्रदर्शन इस नृत्य का उद्देश्य था। और इस नृत्य के बाद रगमच दे दिया गया दर्शको को नाचने के लिए। नृत्यो के दर्शन से दर्शको की भावनाएं उत्तेजित हो ही चुकी थीं, उन्हे और भी सहायता पहुंचाई होगी मदिरा ने। अब दर्शकों की एक-एक जोड़ी खूब नाची। हमारे साथ के दो यात्री भी उन छ नृत्य करने वाली छोकरियो मे से दो को लेकर नाचने लगे। जब दर्शकों का यह नृत्य जी भर कर हो चुका तब फिर से पहले वाले नृत्यो की ही द्वितीय आवृत्ति हुई और सारा कार्यक्रम समाप्त हुआ कोई सवा बजे रात्रि को।

यूरोपीय सभ्यता में इस प्रकार के नर-नारियो के सम्मिलित सामूहिक नृत्य का अपना एक स्थान है, पर उनमे तथा रात्रि-क्लब

जाता है यहा के व्यवस्थापकों को इनसे टिकटो से । इन संस्थाओं की सारी सुव्यवस्था का शायद यही प्रधान कारण है । वेटिकन का अजायबघर देखने के बाद हमने वेटिकन के शेष स्थल भी सरसरी दृष्टि से देखे, अनेक तो दूर से ही, और वेटिकन का कुछ हाल भी समझने का यत्न किया । वेटिकन राज्य पोप की प्रभुसत्ता के अधीन एक स्वतन्त्र राज्य है । यह ससार का सबसे छोटा राज्य है । इसका क्षेत्रफल सौ एकड से कुछ अधिक है और जनसख्या भी एक हजार से बहुत अधिक नही है । पुलिस-व्यवस्था इटली की पुलिस के पास है । १८७० मे इटली में एकता स्थापित होने के बाद ११ फरवरी, १९२९ मे लाटेरान की सधि द्वारा वेटिकन नगर की स्थापना हुई । वेटिकन के अधिकतर भाग को वेटिकन प्रासाद और सेंट पीटर गिरजाघर घेरे हुए हैं । वेटिकन प्रासाद चीन की राजधानी पीकिंग मे वहा के सम्राट के महल के बाद ससार का सबसे बडा प्रासाद है । यह पचपन हजार वर्गमीटर मे बना हुआ है, इसमे बीस आगन हैं और लगभग डेढ़ हजार आलय और कमरे आदि हैं । न केवल अपने आकार के कारण बल्कि ऐतिहासिक और कलात्मक दृष्टि से भी यह महल अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । १४५० मे निकोलस पचम के बाद के सभी पोपो ने इसको अधिकाधिक समृद्ध बनाया है ।

सेंट पीटर गिरजाघर के सम्मुख २६० फुट लम्बा और २१५ फुट चौडा एक चौक है । इसमे अण्डाकार चार-चार की कतार में स्तम्भ खडे हुए हैं, जिनपर छत है । स्तम्भो की सख्या २८४ है और ऊपर महात्माओं की १४० मूर्तिया हैं । गिरजाघर के लिए सीढियो पर चढने से पहले ही सेंट पीटर की मूर्ति के दर्शन होते हैं । कितनी भव्य है वह मूर्ति, कितना सौम्य है सारा दृश्य ! वर्तमान गिरजाघर उस स्थान पर बना हुआ है जहा सेंट पीटर की कब्र के पास सम्राट कान्स्टेण्टाइन का प्रासाद था । सेंट पीटर गिरजाघर के भीतरी भाग मे प्रवेश करने के लिए पाच द्वार हैं । दाई ओर का पहला द्वार जयन्ती द्वार कहलाता है । यह पचीस वर्ष में केवल उसी समय खोला

जाता है जबकि जयन्ती-समारोह होते हैं। सेंट पीटर गिरजाघर में रोमन कला की झलक स्पष्ट है। इन्हीं के कारण हम सेंट पीटर गिरजाघर को उतनी अच्छी तरह से न देख सके जितनी अच्छी तरह से हमने बाद में इटली में दूसरे प्रसिद्ध गिरजाघर सेंट पाल को देखा।

तीसरे पहर तीन बजे हम सबसे पहले रोम के प्रसिद्ध सेंट पाल गिरजाघर को देखने गए। कितना विशाल, भव्य और सुन्दर यह गिरजाघर है! बनावट तथा उसकी सामग्री में तो नहीं, परन्तु विशालता, भव्यता और सौन्दर्य में इसका पूरा मिलान काहिरा की मुहम्मद अली की मस्जिद से हो सकता है। जैसा विशाल, भव्य और सुन्दर यह गिरजाघर है वैसी ही काहिरा की वह मस्जिद। और दोनों हैं उस बगदा-

आदि में भी ऐसी ही विशालता, भव्यता और सौन्दर्य दिखता है—चाहे बनावट सर्वथा दूसरे प्रकार की ही क्यों न हो। तो स्थापत्यकला की भिन्न-भिन्न प्रणालियों से इन वस्तुओं का मन पर जो प्रभाव पड़ता है, उस प्रभाव में कोई भिन्नता नहीं है चाहे स्थापत्यकला भिन्न-भिन्न प्रकार की हो, पर यदि निर्मित वस्तु में विशालता है, भव्यता है और सौन्दर्य है तो मन पर उस वस्तु का प्रभाव एक-सा ही पड़ेगा। हां, इस दर्शन से आनन्द प्राप्त करने के लिए मन को उदार होने की आवश्यकता अवश्य है। मन में संकीर्णता है और धर्मान्धता को इस प्रकार की भावना है कि चाहे हाथी के पैर के नीचे कुचल जाओ पर जैन मन्दिर में पैर न रखो, तो फिर मन को कोई आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता। इसीलिए गांधी जी की प्रार्थना के समय 'रघुपति राघव राजा राम' के साथ 'ईश्वर अल्लाह तेरे नाम' भी गाया जाता था। ... में काहिरा की मुहम्मद अली की मस्जिद और रोम के सेंट ... के दर्शन से कुछ वैसे ही आनन्द की उत्पत्ति हुई जैसे

भारत मे दक्खिन के विशाल मन्दिरो के दर्शन के समय हुई थी और इस आनन्द मे मुझे उस परमपिता परमात्मा की भी याद आई जिसकी महानता के स्मरण के लिए ही इन महान वस्तुओं का निर्माण हुआ था। हां, काहिरा की मस्जिद और रोम के इस गिरजाघर की कब्रें मुझे जरा भी अच्छी न लगी। नित्य के उस दर्शन की मन मे अभिलाषा उत्पन्न कराने के लिए जिन ऐसी वस्तुओं का निर्माण होता है उनमे इस क्षणभगुर अनित्य शरीर की कब्रें क्यों बनाई जाए।

सेंट पीटर गिरजाघर के बाद सेंट पाल रोम का सबसे बड़ा गिरजाघर है। १८२३ के अग्निकाण्ड मे जल जाने के बाद लगभग समूचा गिरजाघर ही फिर से बनाया गया है। यह गिरजाघर कान्स्टेंटाइन ने बनवाया था। इसी स्थल पर सेंट पाल का सिर उतारा गया था। पाचवीं शताब्दी मे इस गिरजाघर को बड़ा बनाया गया। समय-समय पर गिरजाघर मे और भी सजावट होती रही। अन्त मे इसकी गणना सर्वोत्तम गिरजाघरो मे होने लगी, प्रोटेस्टैंट मतानुयायियो के सुधार-आन्दोलन से पहले यह गिरजाघर इग्लैंड के बादशाह के सरक्षण मे रहता था। यह गिरजाघर कालडेरिया के डिजाइन के आधार पर तैयार किया गया है। इसमे १४६ स्तम्भ हैं। मध्य मे सेंट पाल की मूर्ति है। पीछे गुलाबी ग्रेनाइट के दस स्तम्भ हैं।

इस गिरजाघर से हम गए उस स्थान पर जहा किसी ज़माने मे मानव से सिंह को कुश्ती कराई जाती थी और उसे देखने चारो ओर नर-नारी एकत्रित होते थे। वह स्थान फ्लेवियन वंश के सम्राट वैस्पेसियन ने बनवाया था। इसी स्थल पर नीरो के उद्यान की अप्राकृतिक झील थी। इस इमारत को सम्राट वैस्पेसियन के पुत्र टीटस ने ८० ई० मे पूरा किया। इसका उद्घाटन-समारोह सौ दिन तक चलता रहा और इस बीच कोई पाच हज़ार वन्य-पशुओ का वध किया गया। भूचाल, मरम्मत न होने और नागरिको के दुरुपयोग के कारण यह इमारत बहुत कुछ नष्ट हो गई। इसे कोलोसियम कहा जाता है जो रोमन सम्राटो का क्रीडा-स्थल था और बर्बरता का केन्द्र भी। कोलो-

का ग्राम परिणाम सिंह द्वारा मानव का खाया जाना ही तो होता था और इस भीषण लीला को देखने के लिए इस मकान में उस ज़माने में रोम का सारा सभ्य पैट्रीशियन समाज एकत्रित होता था। रोम के प्राचीनतम इतिहास से विदित है कि जनता दो भागों में विभक्त थी। पैट्रीशियन और प्लेबियन। पैट्रीशियन लोगों के वर्ग को सब प्रकार के राजनीतिक अधिकार प्राप्त थे। प्लेबियन वर्ग को नागरिकता के भी अधिकार न थे।

इस इमारत को देख हम प्रसिद्ध 'रोमन फोरम' नामक स्थान को गए। रोमन फोरम के स्थल पर किसी समय एक दलदल वाली घाटी थी। रोमन और सैवाइन्स में आपसी संघर्ष होने के बाद जब वे मिलकर एक ही गए तो धीरे-धीरे फोरम ने शहर के राजनीतिक और व्यापारिक केन्द्र का रूप धारण कर लिया। रोम का महत्त्व बढ़ने के साथ-साथ इसका भी महत्त्व बढ़ा। रिपब्लिकन युग में बाज़ार आदि को यहां से हटाकर आसपास की बस्तियों में ले जाया गया और उनकी जगह सभा-भवन और न्यायालयों की स्थापना की गई। बाद में सीज़र की योजना के अनुसार, जिसे कुछ काल पश्चात् आगस्टस ने पूरा किया, फोरम के दक्षिण भाग का निर्माण किया गया। तीसरी शताब्दी के अन्तिम काल में अग्निकाण्ड में यह बहुत कुछ नष्ट हो गया। बर्बरों के आक्रमणों से, भूचाल आने से, और ठीक-ठीक देख-भाल न होने से धीरे-धीरे इसको क्षति ही पहुंचती गई।

रोमन फोरम में चलकर हमने रोम की कुछ प्रधान मूर्तियों को देखा।

चौथे दिन प्रातःकाल हमारी जिनीवा तक रेल-यात्रा आरम्भ होनी थी। रोम से हमारी गाड़ी नाम बजे प्रातःकाल चल साढ़े दस बजे फ्लारेन्स पहुंचने वाली थी। चार बजे प्रातःकाल उठ, नित्य कर्म से निवृत्त हो हम रोम स्टेशन पहुंचे। बड़ा भारी स्टेशन था। रोम के स्टेशन के बाहर एक स्मारक है जो [illegible] सैनिकों की यादगार में बनाया गया है। [illegible] है।

का काम करने का निश्चय कर फ्लारेन्स के सम्बन्ध में अंग्रेजी भाषा की एक पुस्तक खरीदी। जगमोहनदास ने इस पुस्तक मे से पहले यहां के महत्त्वपूर्ण स्थानो को छाटा और फिर एक टैक्सी ले हम लोग रवाना हुए।

फ्लारेन्स देखने के लिए रवाना होते ही मालूम हो गया कि फ्लारेन्स सचमुच बडा ही सुन्दर स्थान है। पहाडियो से घिरा हुआ यह स्थान बडा हरा-भरा है। कुदरती हरीतिमा के सिवा हजारो दरख्त लगाए गए हैं। चीड और देवदारु वृक्षों की भरमार है। सडको के दोनो ओर ऐसे घने और सीधे वृक्षो की पक्तियां हैं कि सडकें कुंज बन गई हैं। स्थान-स्थान पर छोटे-छोटे पार्क, उनमे रग-बिरगे पुष्पो ने इस हरियाली को और भी सुन्दर बना दिया है। इमारतें सर्वथा आधुनिक। सफाई उत्कृष्ट से उत्कृष्ट। नगर और उसके आसपास के स्थानो को देखते-देखते हमारी मोटर उस स्थान को चढने लगी जहा से सारा नगर उसी प्रकार दिखाई देता है जैसा बालकेश्वर पहाड से बम्बई। इस पहाडी पर जो सडक जाती है उसके दोनो ओर वृक्ष देखते ही बन पडते हैं। पहाडी पर चढने पर एक सुन्दर मैदान मिलता है और यहा से पहाडियो की गोद मे बसा हुआ फ्लारेन्स नगर दीख पड़ता है। सारा दृश्य अत्यन्त रमणीय है। इस स्थल को माइकेल एजेलो हिल कहते हैं। माइकेल एजेलो रोम के विश्वविख्यात चित्रकार थे। उन्हींके नाम पर इस पहाडी का निर्माण किया गया है। मैदान मे माइकेल एजेलो की एक ब्राज की सुन्दर मूर्ति है और इस मूर्ति के चारो ओर रग-बिरगे पुष्पो से भरा हुआ एक छोटा-सा पार्क। एक रेस्तरां की सुन्दर छोटी-सी इमारत भी बनी हुई है। सारा स्थल इतना मनोहारी था कि हमने तय किया कि फ्लारेन्स के अन्य स्थानो को देखने के पश्चात् फिर हम यहीं आएगे और आज सन्ध्या का भोजन इसी रेस्तरां मे करेंगे।

यहा से हम लोग फ्लारेन्स के दो चित्रो के विशाल चित्र-सग्रहो को देखने गए, उनमे एक का नाम था पिट्टी गैलरी और दूसरे का

उफीजी गैलरी। उफीजी गैलरी में तो कोई विशेष बात न थी, पिट्टी गैलरी के महान चित्र-संग्रह कदाचित् संसार में कहीं न हों
माइकेल एंजेलो और रैफिल रोम के दोनों विश्वविख्यात चित्र
गर्व अनेक प्राचीन और अर्वाचीन चित्रकारों के मूल चित्र यहाँ सं
हैं। अनेक चित्रों की विशालता, सजीवता और सौन्दर्य देखते ही बन
है। यद्यपि चित्र एक सतह पर बने हैं पर चित्रों की चित्रकारी कु
इस प्रकार की गई है कि उनमें गहराई तक दृष्टिगोचर होती है
इन चित्रों को देख हमने चित्रशालाओं के भवन के बाहरी भाग
मूर्तियों का अवलोकन किया।

फ्लारेन्स से वेनिस गाड़ी एक बजे रात के लगभग जाती थी। ६
बजे प्रात-काल हम वेनिस पहुच गए।

स्टेशन के बाहर आते ही हमें वेनिस का सौंदर्य दीख पडने लगा
सचमुच वेनिस एक विचित्र नगर है और उसकी सबसे बडी विचित्र
है उसकी पानी की सडकें तथा गलिया। वेनिस का सारा यातायात
डोंगों और मोटर-बोटों द्वारा होता है। वेनिस उन अनेक नगरों की तरह नहीं है जिन्हें प्राकृतिक वरदान प्राप्त होता है। उनको जो कुछ प्रदान किया है, मानव ने ही अपने श्रम से प्रदान किया है। विपरीत परिस्थितियों का सामना करके भी मनुष्य जो कुछ कर सकता है, वेनिस इसका ज्वलन्त उदाहरण है। वेनिस नगर बड़े नियमित ढंग से बसाया गया है। वह साढ़े इक्कीस मील लम्बा है और सवा तेरह मील चौड़ा।

हम एक डोंगे पर बैठ, उसीपर अपना सामान रख, किसी होटल की खोज मे रवाना हुए। हमारा डोंगा अनेक पानी की सडकों और गलियो को पार करता हुआ पानी के ही उस मैदान मे पहुचा जिसके चारो ओर वेनिस की प्रधान इमारतें बनी हुई हैं। जिन पानी की सडको और गलिया को पार करता हुआ हमारा यह डोंगा इस पानी के मैदान मे पहुचा, उनमें से अनेक सड़को और गलियो का पानी बहुत गंदा हो गया था और कई स्थानो पर तो बदबू भी आ रही थी।

वर्षों तक पानी के एकत्रित रहने का ही यह परिणाम था और यह नहीं कि सफाई की कोई व्यवस्था न हो, यदि सफाई की कोई व्यवस्था न होती तो मानवों का यहां रह सकना ही कठिन हो जाता।

वेनिस के पानी के इस मैदान की इमारतों में से अनेक में होटल भी हैं। कठिनाई से हमें 'रेंजीना' नामक होटल में जगह मिली।

नित्य कर्म से निवृत्त हो हम मार्ग-प्रदर्शक के साथ वेनिस देखने रवाना हुए। इस मार्ग-प्रदर्शक की व्यवस्था और अन्य मार्ग-प्रदर्शकों की व्यवस्था में यही अन्तर था कि अन्य मार्ग-प्रदर्शक मोटरबोट में दर्शकों को ले जाते थे और यह मार्ग-प्रदर्शक दर्शकों को डोंगों में लेकर चला।

वेनिस में हम सेंट मार्क का गिरजाघर, डोगेज का प्रासाद, ललित कला अकादमी और सार्वजनिक बाग देखने गए। सेंट मार्क के गिरजाघर जैसी सुन्दर इमारतें तो मसीही धर्म वाले क्षेत्र में इनी-गिनी मिलेंगी, और जिस प्रकार धार्मिक क्षेत्र में सेंट मार्क की इमारत भव्य और सुन्दर है, उसी प्रकार डोगेज का प्रासाद गौरव और ऐश्वर्य का केन्द्र है।

सन्ध्या को अपने होटल के पीछे के कुछ भागों को हमने पैदल ही घूमकर देखा। जब हम होटल में रात्रि का भोजन कर रहे थे तब बिजली की बत्तियों से सजी हुई एक नाव हमारे सामने से निकली। इस नाव में एक सुरीला आरकेस्ट्रा बज रहा था और एक युवती गा रही थी। सुना कि इस पानी के मैदान में हर दिन-रात्रि को यह नाव नाना प्रकार के वाद्य-यन्त्र बजाती और गाती हुई निकलती है।

भू-मध्यसागर में इटली देश की स्थिति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। समूचे भू-मध्यसागर को मानो वह दो क्षेत्रों में विभक्त करता है। पश्चिम में कोई सवा तीन लाख वर्गमील समुद्र है और पूर्व में लगभग इसका दूना। इसके अतिरिक्त इटली का दक्षिणी छोर और सिसली लगभग अफ्रीका महाद्वीप को छूते हुए हैं। इस केन्द्रीय स्थिति के

प्रश्न उठा। इटली की स्वतन्त्रता और एकता के निर्माता हैं मेजनी,

वाली राज्यों में गिना जाने लगा।

इटली के इतिहास मे मेजनी का बडा महत्त्व है। इस बात को समझने वाला वह पहला व्यक्ति था कि इटली की एकता प्रयत्नसाध्य है। अपने इस विश्वास को अन्य व्यक्तियों मे भी फूंकने मे वह सफल हुआ। परिणाम यह हुआ कि इटली का नवयुवकवर्ग देशप्रेम में मग्न हो उठा। इस प्रकार मेजनी इटली की स्वतन्त्रता और एकता का पैगम्बर सिद्ध हुआ। मेजनी का जन्म १८०५ मे हुआ और मृत्यु १८७२ में।

गैरीबाल्डी ने तलवार के जोर से इटली को एक करने का प्रयत्न किया। उसने सिसली और नेपल्स पर विजय प्राप्त की और रोम पर भी धावा बोलने की ठानी, किन्तु इससे फ्रांस के साथ युद्ध आरम्भ हो जाने का खतरा था। यहा केबूर की राजनैतिक दूरदर्शिता ने सहायता की। उसने नेपोलियन तृतीय के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित किए। उसका विश्वास प्राप्त किया और सहायता भी, और ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी कि अन्त मे रोम भी इटली का अग बन गया। रोम को स्वतन्त्र और सयुक्त इटली की राजधानी बनाया गया। और इस प्रकार मेजनी का स्वप्न साकार हुआ। गैरीबाल्डी एक कुशल सेनापति था। मेजनी ने जो जीवनदायिनी शक्ति अपने विचारों से उत्पन्न की थी और केबूर ने जिसे अपनी राजनीतिकता से सुरक्षित बनाया, उसे गैरीबाल्डी ने बहुत हद तक मूर्त रूप प्रदान किया।

केबूर राजनीतिशास्त्र का प्रकाण्ड विद्वान था और इटली के देशभक्तों में केवल उसीने यह अनुमान लगाया था कि विदेशी सहायता के बिना इटली का उद्धार सम्भव नहीं।

इटली की एकता और संगठन का काम विक्टर इमैनुएल शासन-काल में सम्पन्न हुआ। वह १८६१ ईस्वी में शासनारूढ़ हुआ था

आस्ट्रिया और जर्मनी के साथ बचाव-सन्धि कर लेने पर भी इटली १९१५ में मित्रराष्ट्रों की ओर से पहले महायुद्ध में सम्मिलित हो गया। वर्साई की सन्धि के पश्चात् इटली को काफी निराशा हुई, क्योंकि न तो उसे भूमध्यसागर में मनोवांछित नियन्त्रण-स्थान प्राप्त हुआ और न उसे उपनिवेश बढ़ाने की ही सुविधा मिली। मुसोलिनी ने इटली के इस असन्तोष से लाभ उठाकर १९२२ से १९४३ तक के समय में उसे एक फासिस्ट राज्य का रूप दे दिया। पहले यह फासिस्ट राज्य काफी सहिष्णु रहा और उसने राष्ट्रसंघ (लीग आफ नेशन्स) के साथ काफी सहयोग भी किया, पर बाद में जर्मनी की शह पाकर इटली साम्राज्यवादी होने लगा। द्वितीय महायुद्ध में इटली ने जर्मन के साथी के रूप में प्रवेश किया। प्रारम्भ में तो इटली और जर्मनी-पक्ष की विजय होती रही, किन्तु बाद में पासा पलट गया और १९४३ में इटली ने मित्रराष्ट्रों के सामने आत्म-समर्पण कर दिया। इटली की हार का भी मूल कारण वही था जो उसके दूसरे साथी देशों की हार का, अर्थात् साधनों का प्रचुर न होना। वर्तमान युग में युद्ध का निर्णय बाहुबल अथवा सैन्यबल से नहीं होता, हां, कुछ काल के लिए इनका प्रभाव अत्यन्त घातक हो सकता है। जर्मनी के पास प्रथम श्रेणी की सेना थी और हथियार भी आधुनिकतम थे, किन्तु जब लड़ाई लम्बी खिंचने लगी तो धीरे-धीरे उसके साधनों ने भी जवाब दे दिया। इधर मित्रराष्ट्रों के पास साधनों का बाहुल्य था। लड़ाई में भाग लेनेवाले प्रमुख देश थे—रूस, ब्रिटेन, फ्रांस और अमेरिका।

इटली की अर्थ-व्यवस्था पर विचार करते हुए उस भीषण विनाश को याद रखना आवश्यक है जो द्वितीय महायुद्ध के कारण हुआ। इटली युद्ध का प्रमुख स्थल था और घनी आबादी होने के कारण विनाश की विभीषिका द्विगुणित हो गई थी। इसके अतिरिक्त केन्द्रीय

स्थिति होने के कारण इटली मित्रराष्ट्रों के आक्रमण का शिकार हुआ और शत्रुराष्ट्रों के आक्रमण का भी।

युद्ध से पूर्व इटली में उसकी आवश्यकता का ६४ प्रतिशत भाग पैदा होता था। युद्धकाल में इस उत्पादन में काफी कमी हो गई और अब तक भी स्थिति को पूरी तरह सुधारा नहीं जा सका है। इटली के उद्योग की स्थिति और भी चिन्ताजनक है। युद्धकाल में बिजली उत्पन्न करने के अनेकों केन्द्र नष्ट हो जाने से अब कारखानों के लिए काफी बिजली प्राप्त नहीं होती। उधर इटली की भूमि-समस्या भी जटिल है। खेती के तरीके भी आधुनिकतम नहीं हैं और भूमि की उपजाऊ शक्ति में भी कमी है। किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि इटली के उद्योग, व्यापार और कृषि के विकास की भविष्य में भी सम्भावना नहीं।

दूसरे दिन तीसरे पहर की गाड़ी से हम स्विट्ज़रलैंड जाने वाले थे, परन्तु रास्ते में इटली देश का एक प्रधान व्यापारी केन्द्र मिलान नामक नगर पड़ता था। अतः हमने ता० १० अगस्त का दिन मिलान को देना तय कर लिया था। दोपहर को तीन बजे हमारी गाड़ी वेनिस से रवाना होकर पांच बजे के लगभग मिलान पहुंची। मिलान में कोई विशेष बात न थी, पर व्यापारी केन्द्र होने तथा एक नवीन शहर होने के कारण अब तक देखे हुए इटली के सब शहरों की अपेक्षा मिलान हमें अधिक सम्पन्न दिखाई दिया। बड़े-बड़े नये मकान और साफ-सुथरी सड़कें।

मिलान से हमारी गाड़ी तीन बजे के लगभग रवाना होती थी और जिनीवा पहुंचती थी रात को नौ बजे के करीब। रास्ते में हमें आल्प्स पर्वत-श्रेणी को पार करने वाले थे और इस आशा से कि स्विट्ज़रलैंड के रमणीय दृश्य देखने को मिलेंगे, हमारे मन अत्यन्त उत्साहित थे।

अपना सामान ले हम स्टेशन पहुंचे और ठीक समय हमने इटली

रहा मे स्विट्ज़रलैंड को प्रस्थान किया।

स्विट्ज़रलैण्ड

मिलान से चलकर जब हमारी ट्रेन स्विट्ज़रलैंड की घाटी पर आई तब हम समझते थे कि जिस प्रकार भारत मे शिमला, दार्जिलिंग आदि की रेलें पहाड़ों पर घूम-घूमकर चढ़ती हैं, और कभी-कभी तो रेल की पातों के घुमावदार बार-बार रास्ते एकसाथ दीख पड़ते हैं, वैसा ही स्विट्ज़रलैंड के मार्ग मे होगा, पर वहां वैसा न हुआ। मैदानों के सदृश मार्ग सीधा था, हां, गुफाएं बार-बार मिलती थीं और इनमे कई काफी लम्बी थीं। दोनों ओर पर्वत-श्रेणियां थीं, कहीं ऊंची, कहीं नीची, कहीं वृक्षों से ढकी हुई सघन हरी, कहीं बिना एक भी दरख्त के एकदम नंगी। बहुत ऊंची श्रेणियों के ऊपरी शिखरों पर बरफ के भी दर्शन हुए, जो अनेक स्थलों पर सूर्य की श्वेत किरणों मे हीरे के ढेरों के सदृश चमक रही थी। कभी-कभी जल-प्रपात भी दृष्टिगोचर हो जाते थे और कभी-कभी पर्वतों के चरणों मे बहती हुई पहाड़ी सरिताएं। एक स्थान पर ऐसी ही एक नदी का नीर इतना सफेद था कि जान पड़ता था कि वह नीर की नदी न होकर क्षीर की नदी है। बिजली की रेल तेजी से चली जा रही थी और रेल की उस तेज चाल के कारण जान पड़ता था कि दोनों ओर के पहाड़ हमारे पीछे की ओर जोर से भागे चले जा रहे हैं। सारा दृश्य अत्यन्त मनोरम था, इसमे सन्देह नहीं, परन्तु इस दृश्य मे विशाल झीलों के मिलने तक हमे कोई नई बात न मालूम हुई। भारत मे कश्मीर, शिमला, दार्जिलिंग, मसूरी आदि के पहाड़ी दृश्य भी ठीक ऐसे ही हैं, कश्मीर की उपत्यका के दृश्य तो कई स्थानों पर इन दृश्यों से भी कहीं अधिक सुन्दर हैं।

पर ज्योंही जिनीवा झील के दर्शन हुए त्योंही सारे दृश्य मे एक

नवीनता था गई। यद्यपि कश्मीर की उपत्यका में भी अनेक झीलें हैं, पर इतनी बड़ी कोई नहीं। जिनीवा झील की लम्बाई पचपन मील और अधिक से अधिक चौड़ाई नौ मील है। वह चन्द्राकार है। झील के सब ओर ऊंची-ऊंची पहाड़ियां हैं, जिनमे से कई शिखरो पर सदा बरफ जमी रहती है। अधिकाश पहाड़ियां हरे चीड़ और देवदारु तरुओ से आच्छादित हैं। ऊपर के शिखरो पर जमी हुई श्वेत बरफ और उसके नीचे हरी कच्छ, इन पहाड़ियो के झील के जल मे प्रतिबिम्ब पड़ने से दृश्य अत्यन्त सुहावना था। सन्ध्या हो रही थी। आकाश के निर्मल न होने के कारण दृश्य को और अधिक सुषमा मिल गई थी, क्योंकि बादलो को अस्त होते हुए अरुण की अशुओं ने कहीं अरुए, कहीं सुनहरी बना दिया था। इन रगो का प्रतिबिम्ब बरफ से ढके हुए श्वेत पर्वतो के शिखरो, हरे तरुओ और झील के नीले नीर पर अनोखा रग बरसा रहा था। कुछ और अंधेरा होने पर झील के उस पार बसे हुए छोटे-छोटे गाव मे बिजली का प्रकाश फैला। अब तो हवा के वेग से चलती हुई ट्रेन की चाल के कारण सारा दृश्य एक स्वप्न-भूमि-सा जान पड़ने लगा। हम तब तक इस दृश्य को निर्निमेष दृष्टि से देखते रहे जब तक अंधेरे की काली चादर ने सारे दृश्य को ढककर हमारी आंखो से ओझल न कर दिया।

हमे लूसान स्टेशन पर गाड़ी बदलनी पड़ी। यहा से जिनीवा पहुचने मे केवल कुछ ही मिनट लगे। जिनीवा पहुचते ही स्टेशन पर हमे एयर इडिया इण्टरनेशनल के प्रतिनिधि मिले, जिन्हे हमारे जिनीवा पहुचने की सूचना स्विट्जरलैंड के भारतीय दूतावास ने बर्न मे भेजी थी और किसी अच्छे होटल मे हमारे ठहरने का प्रबन्ध करने को कहा था।

दूसरे दिन से हमने स्विट्जरलैंड घूमना आरम्भ किया। देश का कुछ हिस्सा, और अत्यन्त मनोरम हिस्सों मे एक, हम मार्ग मे रेल से देखते हुए आए थे, शेष मे का कुछ भाग हम अपने कार्यक्रम के तीन दिनो मे देख सकते थे।

जिनीवा में हमें कोई पुराने खण्डहर आदि नहीं मिले अतः एक घण्टे के भीतर हमने सारा नगर घूम डाला। पुराना प्राकृतिक सौन्दर्य और नवीन इमारतें, सड़कें इत्यादि तथा उनकी स्वच्छता के अतिरिक्त अन्य कोई दर्शनीय स्थान देखने को न था। शहर की घुमाई समाप्त कर हम लीग आफ नेशन्स का दफ्तर देखने पहुंचे। यह इमारत और यहां का सारा कार्य देखने योग्य था।

लीग आफ नेशन्स की इस इमारत और पुस्तकालय को देखने के पश्चात् जब हम अपने होटल को लौट रहे थे उस समय हमें लीग आफ नेशन्स की स्थापना से लेकर अब तक अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति के प्रयत्नों का तथा उसकी असफलताओं की एक के बाद एक घटनाओं का स्मरण आया। सन् १९१४-१८ के युद्ध के बाद अमेरिका के उस समय के प्रेसीडेण्ट श्री वुडरो विल्सन की राय का परिणाम लीग आफ नेशन्स की स्थापना थी। अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति का यह पहला व्यापक प्रयत्न था, इसमें सन्देह नहीं। पर इसकी सबसे बड़ी आरम्भिक ट्रैजेडी यह हुई कि जिस देश के राष्ट्रपति की राय के अनुसार इस सस्था की स्थापना हुई, वही देश इस सस्था में सम्मिलित नहीं हुआ। लीग आफ नेशन्स ने विश्व में शान्ति स्थापित रहे, इसके कम प्रयत्न नहीं किए, पर इन प्रयत्नों के बावजूद सन् ३९ में सन् १९१४-१८ से भी कहीं बड़ा और भीषण सग्राम फिर हुआ और लीग आफ नेशन्स समाप्त हो गई। इस युद्ध के बाद लीग आफ नेशन्स के सदृश ही यू० एन० ओ० की स्थापना हुई। यू० एन० ओ० और लीग आफ नेशन्स में नाम के सिवा अन्य अन्तर बहुत कम है। हां, एक अन्तर अवश्य है—लीग आफ नेशन्स में अमेरिका सम्मिलित नहीं हुआ था, पर यू० एन० ओ० में तो वही सर्वेसर्वा है। जो कुछ हो, प्रश्न यह है कि यदि लीग आफ नेशन्स सफल नहीं हुई तो क्या यू० एन० ओ० को सफलता मिलेगी? उत्तर सरल नहीं है। अब तक यू० एन० ओ० को भी सफलता नहीं मिल रही है। यू० एन० ओ० के रहते हुए ही कोरिया की लड़ाई हुई और शान्ति के उपासक यू० एन० ओ० ने उस लड़ाई

राग-द्वेष से रहित, जीवन-मुक्त मानव ही हो सकता है, यह भी मुझे स्वीकृत है। परन्तु राग-द्वेष व्यक्तियों के बीच होते हैं। व्यक्तियों के झगड़े मानव-समाज में सदा रहेंगे, यह मुझे मान्य है। लेकिन सामूहिक युद्धों में जो राग-द्वेष प्रकृति से मानव को मिले हैं, उसका कितना भाग रहता है, यह विचारणीय है। सेनाओं के योद्धा जब एक-दूसरे से लड़ते हैं, तब क्या उनकी कोई व्यक्तिगत शत्रुता रहती है? एरोप्लेन जब बम बरसाते हैं तब क्या किसी व्यक्तिगत राग-द्वेष के कारण? मैं युद्ध को स्वाभाविक न मान एक अत्यन्त अस्वाभाविक वस्तु मानता हूं और मुझे तो आश्चर्य है कि सभ्य कहलाने वाले मानव-समाज में अब तक यह मार-काट कैसे हो रही है? कहा जाता है, युद्ध सदा से होता आया है। जो बात होती रही है वह सदा होती रहेगी, ऐसा तो नहीं है। एक समय था जब मानव को मानव खा जाता था, आज तो यह नहीं होता। एक काल फिर आया जब गुलाम-प्रथा के समय मानव-शरीर बेचे और खरीदे जाते थे। आज भी चाहे शोषण हो, परन्तु आज मानव-शरीर का क्रय-विक्रय तो नहीं होता। यदि मानव की उन्नति हो रही है और यदि संसार का नाश नहीं होना है तो चाहे मानव-मन में राग-द्वेष की भावनाएं प्रकृति ने दी हों, चाहे युद्ध अब तक होता रहा हो, एक न एक दिन ऐसा आना ही चाहिए जब जिस प्रकार मानव द्वारा मानव का खाना रुका, मानव-शरीर की खरीद-बिक्री रुकी, उसी प्रकार युद्ध की सदा के लिए समाप्ति होगी। इसके लिए लीग आफ नेशन्स, यू० एन० ओ० सदृश संस्थाएं चाहे अब तक बार-बार असफल क्यों न होती रही हों, ऐसी संस्थाओं की आवश्यकता रहेगी। और यदि अन्त में भी इस दिशा में हम सफल न हुए तो? पर मैं तो बड़ा आशावादी व्यक्ति हूं। मैं तो मानव उन्नति कर रहा है, इसे मानने वाला हूं। मुझे संसार का नाश न दिखकर उसका कल्याण दिखता है।

दूसरे दिन हम जिनीवा के ग्रेन्दान होकर बर्न तक जाने वाले थे और बर्न से भी आगे कुछ पहाड़ी स्थलों को देखने। ग्रेन्दान में घड़ी के

कारखाने हैं, जो उद्योग स्विट्ज़रलैंड का मुख्य उद्योग है।

हमारी गाड़ी ग्रेन्चन स्टेशन कोई साढ़े ग्यारह बजे पहुंची। ज़ ने ग्रेन्चन जाने के लिए हमें रास्ते में एक स्थान पर गाड़ी बद पड़ी थी। ग्रेन्चन पहुंचते ही जिस घड़ी के कारखाने को हम वहां गए थे उसके मालिक श्री मैक्स स्नीडर को हमने फोन किया। वे अपनी मोटर में हमें लेने पहुंचे। श्री स्नीडर ने हमें फैक्टरी दि स कारखाने में घड़ियां बनती न थीं, घड़ियों के विविध भाग ौर वे इकट्ठे किए जाते थे। यथार्थ में स्विट्ज़रलैंड का घड़ द्योग गृह-उद्योग है। घड़ी के अलग-अलग हिस्से कारीगर रों में तैयार करते हैं। घड़ी के ये कारखाने उन भिन्न-भिन्न ो खरीदते और पूरी घड़ी बना देते हैं। कुछ कारखानों में इन कुछ हिस्से भी बनते हैं, पर ऐसे कारखाने बहुत कम हैं और पूरी के समस्त भाग किसी एक कारखाने में बनें, ऐसा तो कोई कारख है ही नहीं। घड़ी के भिन्न-भिन्न हिस्सों को इकट्ठा कर पूरी घ बना देना भी कम हुनर का काम नहीं। हमने इस फैक्टरी में दे कि कितने कारीगर किस बारीकी से यह काम करते हैं। मैग्नीफाइं काचों की छोटी-छोटी दूरबीनों और छोटी-छोटी चिमटियों, स्क्रू यन्त्रों की सहायता से इन विविध भागों को एक छोटी-सी हाथ घड़ी में, और स्त्रियों की तो अत्यन्त ही छोटी हाथघड़ी में ठीक बिठाते हुए इन कारीगरों के काम का निरीक्षण सचमुच एक दर्शनीय दृश्य था। एक ही कारीगर इन सब भागों को न बैठाता, एक कारीगर एक प्रकार के हिस्सों को, दूसरा दूसरे प्रकार के हिस्सों को, और तीसरा तीसरे प्रकार के। इस प्रकार अनेक कारीगरों के हाथों से गुज़रने के बाद घड़ी पूरी घड़ी बनती और घड़ी के पूरी घड़ी बन जाने के पश्चात् वह ठीक समय देती है या नहीं, इसकी कई प्रकार से जांच होती तथा इस जांच में समय की कोई गड़बड़ी निकलती तो वह ठीक की जाती। कारखाने में अनेक प्रकार की घड़ियां बन रही थीं—कोई सादी, केवल घण्टों

ग्रौर सैकण्डों का समय देने वाली, कोई घण्टो ग्रौर सेकण्डों के साथ-साथ तारीख ग्रौर वार बताने वाली, कोई इन सबके साथ चन्द्रमा की बढ़ती ग्रौर घटती हुई कलाएं भी दिखाती ग्रौर कोई तारीख, वार, चन्द्र न बताकर केवल एलार्म देती। कोई ऐसी बनती जिसमें चाबी देने की ग्रावश्यकता न होती, कलाई पर धारण करने के बाद कलाई के हिलने-डुलने से उसकी चाबी भरती जाती। कोई 'शाकप्रूफ' बनाई जाती यानी गिरने से भी बन्द न होने वाली, ऐसे ही पानी पड़ने पर भी चलती रहने वाली। घड़िया सोने की, स्टील की तथा ग्रौर भी कई धातुग्रो की बन रही थी। स्त्रियों की तो कोई-कोई घड़ी इतनी छोटी थी कि उसका समय मुझे बिना मैग्नीफाइंग ग्लास क देख सकना ही सम्भव न था।

स्विट्ज़रलेंड में दुनिया की सबसे ग्रच्छी ग्रौर सबसे ग्रधिक घड़िया बनती हैं। ससार के समस्त देशो को यह छोटा-सा देश घड़िया देता है। प्रति वर्ष विविध प्रकार की ग्रनेको घड़िया तैयार होती हैं। इनमें से स्विट्ज़रलैंड की ग्रावश्यकता के लिए तो थोड़ी ही घड़िया वहा रखी जाती हैं, शेष ससार के ग्रन्य देशो में बेच दी जाती हैं। घड़ी के उद्योग में काम करने वाले हर कारीगर को मजदूरी भारत के रुपयों में लगभग ग्राठ सौ रुपया महीना पड़ता है।

पहले स्विट्ज़रलैंड में सूत ग्रौर रेशम उद्योग प्रमुख था, किन्तु बीसवीं शताब्दी में मशीन-उद्योग सर्वोच्च हो गया। घड़ी-उद्योग मशीन-उद्योग का ग्रत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रग है। इसके लिए कहीं ग्रधिक कुशल ग्रौर बारीक काम कर सकने वाले कारीगरो की ग्रावश्यकता होती है। स्विट्ज़रलैंड में घड़ी-उद्योग का सूत्रपात सोलहवीं शताब्दी में हुग्रा। जिनीवा ग्रौर ज़ूरिच इसके प्रमुख केन्द्र थे। धीरे-धीरे यह उद्योग बेसल प्रदेश में भी फैल गया। १६२६ में इस उद्योग में काम करने वाले कर्मचारियो की संख्या ४८,५०३ थी। दस वर्ष पश्चात् यह सख्या घटकर ३३,६३६ हो गई किन्तु द्वितीय युद्ध के पश्चात् ससार-भर में स्विट्-ज़रलैंड की घड़ियो की मांग बढ़ जाने के कारण ... कर्म-

बर्न हमारी गाड़ी बिना किसी विशिष्ट घटना के ठीक समय पहुंची। हम रात्रि को ही बर्न देखने निकले। वैसा ही सुन्दर, साफ-सुथरा, ऊंची इमारतों और सड़कों वाला बिजली की रोशनी से जगमगाता हुआ तथा रमणीय पहाड़ियों से घिरा हुआ बर्न नगर था, जैसा जिनीवा। जिस चीज ने यहां हमारा ध्यान सबसे अधिक आकर्षित किया वह थी वहां की एक अद्भुत घड़ी।

यह घड़ी एक प्राचीन घण्टाघर पर है। पहले यह नगर के द्वार में से एक था। जब-जब घड़ी में घण्टा बजता है उसके सुन्दर डायल के सम्मुख कठपुतलियों का जुलूस-सा निकलता है जिसमें रीछ तो बराबर ही उपस्थित रहता है, इससे पर्यटकों और बच्चों के लिए एक प्रमोद की सामग्री मिलती है।

दूसरे दिन प्रात काल हम इण्टरलाकन गए। स्विट्ज़रलैंड के अन्य छोटे-बड़े नगरों के सदृश इण्टरलाकन एक सुन्दर पहाड़ी नगर है। नगर के चारों ओर आल्प्स की ऊंची-ऊंची श्रेणियां हैं जिनमें अनेक के ऊपरी शिखरों पर बरफ जमी रहती है। नीचे के शिखर हरित तरुओं से व्याप्त हैं, जिनमें चीड़ और देवदारु के वृक्षों की बहुतायत है। थुन और ब्रीन्ज नामक दो झीलों के बीच में बसे रहने के कारण इस नगर का नाम इण्टरलाकन है। इण्टरलाकन में अनेक सुन्दर स्थान हैं। अनेक उद्यान देखते ही बन पड़ते हैं। ऊंचे-ऊंचे सघन वृक्ष और उनकी गोद में रंग-बिरंगे फूलों से भरी हुई क्यारियां दर्शनीय हैं। एक बाग के एक ओर एक फूलों की घड़ी बनी है जो चलती और बजती है।

इण्टरलाकन पहुंचते हुए हम रास्ते में खूब घूमते तथा मार्ग के छोटे-छोटे गांवों को देखते हुए आए थे। इण्टरलाकन में भी हम खूब घूमे। यहीं हमने लच भी खाया और इण्टरलाकन से बर्न लौटते हुए भी हमने रास्ते में घूमने की कसर नहीं रखी। आज हमने स्विट्ज़रलैंड के अनेक गांव और कस्बे देखे। शहरों और कस्बों तथा गांवों में उनकी छुटाई-बड़ाई के अतिरिक्त और कोई विशेष अन्तर नहीं है।

में सागर' वाली जो उक्ति हम कवि बिहारी के लिए काम में लाते हैं उसे क्यों न स्विट्जरलैंड के लिए भी काम में लाया जाए ।

स्विट्जरलैंड के प्राकृतिक दृष्टि से तीन भाग किए जा सकते हैं। दक्षिण और पूर्वी भाग में गर्वोन्नत आल्प्स पर्वत हैं। उत्तर और पश्चिम में नीची जूए थेणियां हैं। बीच में उपजाऊ मैदान है, जहां सभी बड़े-बड़े नगर हैं।

प्राकृतिक सौन्दर्य के सिवा स्विट्जरलैंड की जिस विशेषता ने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया वह है उसका शान्ति और स्वातन्त्र्य-प्रेम। यूरोप में स्विट्जरलैंड के निवासियों ने सबसे पहले यह दिखला दिया कि विभिन्न जातियों, धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों वाले लोग सहज सद्भाव से साथ-साथ रह सकते हैं।

स्विट्जरलैंड की स्थापना पहली अगस्त, १२६१ को हुई थी। स्विट्जरलैंड के वर्तमान संविधान की दो विशेषताएं हैं—लोकतंत्र की उपासना और विदेशी संघर्षों में तटस्थता की नीति बरतना। ये दोनों सिद्धान्त १८४८ में प्रतिपादित किए गए। इन दोनों सिद्धान्तों की रक्षा करना और उन्हें क्रियान्वित करना सरल काम नहीं रहा है, कई बार स्विट्जरलैंड को बड़े-बड़े निर्णय करने पड़े हैं, कई बार उसके पांव डगमगाए भी हैं, किन्तु इन दोनों सिद्धान्तों को स्विट्जरलैंड आज भी सीने से लगाए हुए है। स्विट्जरलैंड में मनुष्य द्वारा स्थापित स्वतन्त्रता भी मौजूद है और ईश्वर-दत्त प्राकृतिक स्वतन्त्रता भी।

स्विट्जरलैंड में विभिन्न जाति के लोग निवास करते हैं और विभिन्न देशों का उसपर शासन रहा है। सोलहवीं शताब्दी से पूर्व उसका इतिहास शेष मध्य यूरोप के इतिहास की तरह रोमन साम्राज्य का इतिहास था। १८१५ में स्विट्जरलैंड में कनफेडरेशन की स्थापना की गई। इसके बाद १८४७-४८ में एक गृह-युद्ध होने के अतिरिक्त स्विट्जरलैंड का इतिहास शान्तिपूर्ण रहा है। १८४८ में स्वीकृत उसके संविधान में थोड़ा-सा परिवर्तन १८७४ में किया गया। स्विट्-[illegible] कनफेडरेशन में बाइस राज्य सम्मिलित हैं। वहां की संसद् में

स बात का आश्वासन दे चुके है कि आक्रमण होने पर वे उसकी क्षा करेंगे। तटस्थ देश होने की वजह से युद्ध-काल में अनेक लोग हा आकर शरण लेते रहे हैं। युद्ध-काल में सभी देशों के हजारो च्चे वहा पहुचाए गए। अन्त मे कहना न होगा कि स्विट्जरलैंड एक सफल तटस्थ देश रहा है और आज तो स्विट्जरलैंड नाम-मात्र से तटस्थता का बोध होता है। इसीलिए जब कभी मध्यस्थता के लिए किसी तटस्थ देश को चुनने की बात चलती है तो स्विट्जरलैंड का नाम अनिवार्य रूप से लिया जाता है। आज के [illegible] संसार में स्विट्ज़रलैंड आशा की एक किरण है और हम सोचते हैं कि क्या सभी देश स्विट्ज़रलैंड की तरह शांतिप्रिय नही बन सकते? यदि ऐसा हो सके तो फिर मानवता को त्राण ही मिल जाए।

स्विट्ज़रलैंड की अपने देश की राजनीति मे एक और विशेष बात है। वहा राजनैतिक दल न हो, ऐसा नही, परन्तु मन्त्रिमण्डल प्राय सर्वदलीय बनते हैं और अपनी विधान सभा के प्रति उत्तरदायी होते हुए भी यदि मन्त्रिमण्डल के किसी मत को विधान-सभा स्वीकार नही करती तो वे इस्तीफा नहीं देते, वरन् उनके मत के विरुद्ध भी यदि विधान सभा का कोई निर्णय होता है तो सिर झुकाकर स्वीकार कर उस निर्णय को कार्यरूप में परिणत करते हैं। इसीलिए स्विट्ज़रलैंड में वर्षों से नहीं, पर युगो से वे ही मन्त्री चले आते हैं।

बर्न से जिनीवा हमारी गाड़ी सात बजे के लगभग जाती थी। बर्न से जिनीवा पहुचने में ट्रेन को लगभग दो घण्टे लगे। जिनीवा स्टेशन से हम उसी होटल में गए जहां इसके पहले ठहरे थे।

जिनीवा से पेरिस जाने का हमारा कार्यक्रम फिर हवाई जहाज से था। हमारा विमान तारीख १५ को तीन बजे के लगभग चलना था। ठीक समय पर हमारा प्लेन जिनीवा से रवाना हो दो घण्टे में पेरिस पहुच गया।

थे। ये थे—'स्वतन्त्रता, समानता और भ्रातृत्व'।

रूसो का यह अमर कथन लोगो की नस-नस मे समा गया था—"मनुष्य स्वतन्त्र जन्म लेता है पर सर्वत्र परतन्त्र है, इसलिए सभी के मन में परतन्त्रता की बेडिया तोड डालने की इच्छा प्रबल हो उठी है।"

इन नारों के अनुरूप ही वहा की क्रान्ति हुई थी, जिसका विश्व की क्रान्तियो में एक प्रधान स्थान है।

फ्रासीसी क्रान्ति और उसके बाद के फ्रास के इतिहास से यूरोप का इतिहास एक देश का, एक घटना का, एक व्यक्ति का इतिहास बन गया। देश है फ्रास, घटना है फ्रासीसी क्राति, व्यक्ति है नेपोलियन। फ्रासीसी क्रान्ति से अकेले फ्रास का ही नही, सारे यूरोप का आसन डोल उठा था। सगीनों और तलवारो का युद्ध तो था ही, विचारो का युद्ध भी कम नही था। फ्रासीसी क्रान्ति ने सरकार, समाज और व्यक्ति के अधिकारो के सम्बन्ध में नये विचारो को जन्म दिया था, जिससे सारा यूरोप सहलहा उठा था, और नये विचारो की शक्ति सब जानते ही हैं—वह सैनिक बल से भी अधिक होती है।

फ्रासीसी क्रान्ति के समय यूरोप में राजसी ठाट-बाट था। निरकुशता का नग्न नृत्य हो रहा था। जनता राजतन्त्र के अत्याचारो से ऊबने लगी थी। सामन्तवाद की जड हिल उठी थी। शासक न केवल मनमानी करते थे, वरन् शासन-व्यवस्था मे बेईमानी और भ्रष्टाचार फैले हुए थे। जर्मनी, आस्ट्रिया, प्रशा, इटली, स्पेन आदि निर्बलता के शिकार हो चुके थे, इसलिए किसी विदेशी व्यक्ति ने भी फ्रासीसी क्रान्ति के मार्ग में कोई अड़चन नही डाली। बड़े-बड़े सामन्त और बड़े-बड़े पादरी समाज पर प्रभाव रखने वाले दो शक्तिशाली सगठन थे। जनता कर-भार से दबी जाती थी। लोगों से बेगार कराई जाती थी और निर्धन को पशु से भी नीचा समझकर बर्ताव किया जाता था। यह तो हाल था निम्नवर्ग की जनता का। मध्यवर्ग की जनता के पास धन था और बौद्धिक चेतना भी, किन्तु उच्चवर्ग के निरादर के कारण

तरे पहलुओ का मुझे निरीक्षण करने का प्रयत्न करना चाहिए और
यह देखना चाहिए कि आज फ्रांसीसी राष्ट्र की क्या अवस्था है।

ता० १६ से १९ तक ४ दिन हम पेरिस मे खूब घूमे—उन बसो मे जो रात के समय पेरिस की सैर कराती हैं, और उन बसो में जो पेरिस की सैर दिन मे कराती हैं; स्वतन्त्र रूप से टैक्सी मे, और पैदल भी। इन चार दिनो मे हमने पेरिस की दर्शनीय इमारतो को देखा, वहा के अजायबघरो को देखा, वहा के नाटको और नाइट-क्लबो को देखा, वहा के जीवन को देखा। मैं समझता हू, चार दिनो के थोड़े समय मे हमने जितना पेरिस देखा उतना कम लोग देख पाते होंगे।

पेरिस सचमुच बड़ा सुन्दर नगर है। बड़ी ही व्यवस्था से बसाया गया है। सड़कें इस तरह निकाली गई हैं कि जान पड़ता है भारत के जयपुर नगर के सदृश पहले शहर का पूरा नक्शा बनाकर तब शहर बसाया गया है, यद्यपि ऐसा हुआ नहीं है। सुना गया कि शहर धीरे-धीरे बढ़ा है, पर जब-जब बढ़ा तब-तब इस प्रकार बढ़ाया गया कि बसने मे अव्यवस्था न होने पाए। इमारतें बहुत सुन्दर हैं, पर पुराने ढग की। आजकल सीमेण्ट-कान्क्रीट के जैसे मकान बनते हैं, वैसे मुझे पेरिस मे नहीं दीखे। मैं समझता हू कि पुराने ढग के मकान जिनमे कहीं गुम्बजें होती हैं, कहीं विविध प्रकार के स्तम्भ, कहीं झरोखे तथा कहीं महराबें और कहीं नक्काशी, वे वर्तमान समय के सीमेण्ट-कान्क्रीट के सफाचट्ट मकानों से कहीं अधिक सुन्दर होते हैं। एक बात वहां की ऐतिहासिक इमारतों और मूर्तियों आदि को देख मुझे बहुत आश्चर्यजनक मालूम हुई। इनमे से अधिकांश ऐतिहासिक इमारतें और मूर्तियां मैली होकर काली और चितकबरी हो गई हैं और यह इसलिए कि वे कभी साफ ही नहीं की जातीं। इनके साफ न करने का यह कारण बताया जाता है कि इनकी प्राचीनता की रक्षा हो। प्राचीनता की रक्षा मिट्टी, कीचड़ और विविध

गिरजाघर आता है। सीन के पश्चिमी तट पर यूनिवर्सिटी की इमारतें हैं। लक्सेमबर्ग क्वार्टर भी बहुत दूर नहीं है। सीन के दूसरी ओर लोवरे है जहा विश्वविख्यात कला-कृतिया सगृहीत हैं। सैकड़ों कमरे हैं। टाइटियन, राफेल, टिन टोरट्टो, वैरोनीज, गिमोटा, फ्राएजेलिको, बोटिचली, वान डाइक आदि के स्मरणीय चित्र हैं, पाच शताब्दियो मे फ्रास के शासकों ने इसकी काफी वृद्धि की है। लोवरे की इमारत भी अत्यन्त आकर्षक है। फ्रास के गणराज्य बनने से पहले यह स्थान फ्रासीसी राजाओं का महल था। नाट्रेडम गिरजाघर को छोड पेरिस में ऐसी और कोई इमारत नही है जिसकी लोवरे से तुलना भी की जा सके।

पेरिस बडे सुन्दर ढग से बसाया गया है। गोलाकार प्लेस डी एटोली से बारह मार्ग विभिन्न स्थानो को जाते हैं।

लोवरे के समीप ही बिबलियोथिक नेशनल है जहां लगभग चालीस लाख पुस्तकें हैं और जो अनुसधान-विद्यार्थियो के लिए अमूल्य सग्रह-केन्द्र है। यहा से नजदीक बोर्स की इमारत है जहा पेरिस का शेयर बाजार है। पेरिस का एक आकर्षक स्थल बैस्टाइल है, जहा प्रसिद्ध बन्दीगृह था और जिसे फ्रासीसी क्राति के प्रारम्भ काल मे नष्ट कर दिया गया था। इसके प्रतिग्विर लोहे की बनी प्रसिद्ध एफल टावर है। यह मीनार १८८६ से बनाई गई थी। यह ६८४ फुट ऊची है। इसे अब प्रसारण के लिए काम मे लाया जाता है। वहा जाने पर मुझे टाल्स्टाय और महात्मा गाधी के विचार याद आए। दोनो ही इस टावर को मानव की मूर्खता का ज्वलन्त प्रमाण मानते थे।

प्लेस डी ला कानकार्ड पेरिस का ऐसा स्क्वायर है जो अत्यन्त सुन्दर और ऐतिहासिक स्मृतियों से भरपूर है। हमने पेरिस मे फ्रासीसी विजयों के विभिन्न कीर्ति-स्तम्भ भी देखे। इनमे 'आर्क दी ट्रायफ' नामक फाटक प्रमुख है।

किन्तु 'बाइस डी बोल गोन' और उसके चिड़ियाघर, घुड-दौड के मैदान, खुली छत का थियेटर और वर्साइल्स के महल और बाग देखे बिना पेरिस की यात्रा अधूरी ही रह जाती है, अत. हम उन्हें

डूब गए। थोड़ी देर बाद बिजली के जगते हुए भाड़ों की से वे दोनों उस झील में से बाहर निकल आए। यह दृश्य मनमोहक तो था ही, पर साथ ही मन को विस्मय में भी कम न डालता था। हां, नाटक के एक दृश्य का दूसरे से कोई सम्बन्ध न था। हर दृश्य पृथक्-पृथक् था और उनमें कोई कथा न होकर नाच-गाना ही चलता था। इन नाटकों में यदि कोई कथा रहती, साथ ही हृदय को छूने वाला नाटकीय प्रदर्शन होता तो सोने में सुगन्ध हो जाती। फिर भी मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि ऐसे कलापूर्ण और विस्मयकारी दृश्यों को मैंने रंगमंच पर इसके पहले कभी न देखा था। इन नाटकों में नगी स्त्रियों के प्रदर्शन की भी मुझे कोई आवश्यकता न जान पड़ी। यदि इन स्त्रियों का प्रदर्शन इसलिए किया जाता हो कि यह प्रदर्शन अधिक लोगों को इन नाटकों के प्रति आकर्षित करता है, तो भी मेरे मतानुसार यह विचार असत्य है। इन नाटकों के प्रति लोगों के आकर्षण का प्रधान कारण इन नाटकों के दृश्य हैं, नगी औरतें नहीं, वरन् मेरे मतानुसार ऐसे कलात्मक प्रदर्शन में इस प्रकार नंगी औरतों को लाना इन नाटकों के लिए लाञ्छन की बात है। पर एक बात जरूर हुई। रोम की इस प्रकार की नग्न-लीला में इससे कम नंगा प्रदर्शन होने पर भी मन में जिस प्रकार के विकार की उत्पत्ति होती थी, वह यहां नहीं हुई। मालूम नहीं इसका कारण यहां के प्रदर्शन के कामुक हाव-भावों का अभाव था, अथवा आंखों का इस तरह के दृश्यों के लिए अभ्यस्त होता जाना। नाइट-क्लब के नृत्य में नाटकों के दृश्यों की कमी न थी। स्त्रियों की नग्नता नाटकों के ही समान थी। कामुकता के हाव-भाव भी थे। पर इस प्रदर्शन का भी मन पर ऐसा प्रभाव न पड़ा जैसा रोम के प्रदर्शन का पड़ा था।

पेरिस-निवासियों का जो जीवन हमने देखा उससे हमें गत लड़ाई में उनके जर्मनी की शरण लेने का रहस्य और अधिक समझ में आ गया। हमें इसमें जरा भी सन्देह नहीं रहा कि उनकी इस कायरता का प्रधान कारण उनकी आधिभौतिक जगत् की सौंदर्योपासना और

मैंने वहां और देखी। जनता को नेपोलियन की बड़ी कीर्ति गाते सुना। जान पड़ा, आज भी नेपोलियन के प्रति वहां की जनता की बड़ी श्रद्धा, बड़ी भक्ति है। भारत के कायरों के मुख से भी मैं प्रायः अर्जुन, भीम, प्रताप, शिवाजी, तिलक, गांधी आदि की प्रशंसा सुना करता हूं। ये हैं आध्यात्मिक कायर और फ्रांस वाले हैं आधिभौतिक कायर।

फ्रांस यूरोप का दूसरा सबसे बड़ा देश है। क्षेत्रफल लगभग २,१०,००० वर्गमील है। समस्त यूरोप का फ्रांस आठवां भाग समझिए। आकार में फ्रांस इंग्लैण्ड से चौगुना है। जनसंख्या ४,१५,००,००० है। कहते हैं पेरिस ही नहीं पर समूचा फ्रांस सर्वत्र सुन्दर देश है, और यह कहना कठिन है कि फ्रांस के नगर सुन्दर हैं अथवा गांव।

सैर और पर्यटन के लिए फ्रांस की गणना संसार के सर्वोत्तम स्थानों में की जानी चाहिए। फ्रांस की विशेषता यह है कि वहां आप पर्यटन कार से करें, रेलगाड़ी से, बाइसिकिल से अथवा पैदल ही, लुत्फ हर तरह आता है। बाद में इंग्लैण्ड जाने पर मुझे जैसा भीड़-भम्मड़ दिखाई दिया उसका फ्रांस में सर्वत्र अभाव था। फ्रांस की खुली खुशनुमा वायु कितनी स्वास्थ्यवर्धक और स्फूर्तिदायक है, इसका अधिक अनुभव तो मुझे इंग्लैण्ड पहुंचने पर ही हुआ।

फ्रांस की स्थिति इस दृष्टि से उल्लेखनीय है कि एटलांटिक समुद्र में भी उसका तट है और भू-मध्यसागर में भी। दूसरी विशेषता यह है कि फ्रांस में एक गहरी एकता है। यद्यपि फ्रांस के विभिन्न विभागों में विभिन्न प्रकार के लोग बसते हैं, किन्तु आने-जाने के सुविधाजनक साधन होने के कारण समूचा फ्रांस एक इकाई है। तीन हजार वर्ष के इतिहास में फ्रांस ने अपने स्वातन्त्र्य-प्रेम से सारे संसार को प्रभावित किया। फ्रांस का स्वातन्त्र्य-प्रेम प्राचीन काल में सचमुच ही उज्ज्वल एवं प्रखर था। उसके प्राचीन 'गाल' सरदारों ने रोम तक का सामना किया और स्वतन्त्रता के प्रेम की अमरज्योति जगाई।

पेरिस के इस परिच्छेद को पूर्ण करने के पहले एक मनोरंजक बात और लिख दू। पेरिस में पानी बरसने के कारण हम यहा अंग्रेजी ढग के टोप को भी काम में लाए। इन टोपों ने बरसात में हमारी छातो के सदृश ही रक्षा की। जब इस टोप को मैंने लगाया तब मुझे सन् १६२१ की एक घटना याद आ गई। हमारे प्रदेश के एक प्रधान काग्रेसवादी जो बाद में मन्त्री भी हुए, श्री दुर्गाशकर मेहता, अंग्रेजी ढग के टोप के बडे प्रेमी थे। जब वे असहयोग आन्दोलन मे सम्मिलित हुए तब उन्होंने महात्मा गांधी से पूछा कि हाथ के कते और बुने कपडे का अंग्रेजी ढग का टोप काग्रेस वाले उपयोग कर सकते हैं या नहीं? महात्मा जी ने अपने स्वाभाविक विनोदी स्वभाव के अनुरूप उत्तर दिया—"क्यों नहीं, अंग्रेजी ढग के टोप को मैं बिना मूठ का छाता मानता हू।"

२० अगस्त को हम वायुयान से लन्दन के लिए रवाना हुए।

इंग्लैण्ड

ता० २० अगस्त की शाम को हम लन्दन के हवाई अड्डे पर पहुचे। ज्योंही हमने लन्दन की धरती पर पैर रखा, त्योंही कितनी बातें एकसाथ मेरे मन मे उठीं। जब बहुत सी बातें एकसाथ मन में उठती हैं तब उनका कोई सिलसिला नहीं रहता। 'कही की ईंट, कहीं का रोडा' वाली कहावत रहती है। मुझे याद आया वह समय, जब भारत सस्कृति तथा सभ्यता के शिखर पर पहुच चुका था और उस समय इगलिस्तान के लोग जगली तथा बर्बर थे। कालान्तर में भारत का पतन और इगलिस्तान के उत्थान तथा भारत पर लगभग पौने दो सौ वर्षों तक अंग्रेजों के राज्य की कारुणिक कथा का मुझे स्मरण आया। किस तरह अंग्रेज भारत में जहांगीर के समय रोड-

के दिल्ली दरबार में, कैसे-कैसे दृश्य देखे थे मैंने स्वयं भी उस दरबार के और कैसा नाम हुआ था भारत का इस पराधीनता के काल में। फिर याद आया मुझे स्वराज्य प्राप्त करने का समय-समय पर भारतीय प्रयत्न, सन् १८५७ का स्वतन्त्रता-संग्राम और अंग्रेजों द्वारा इस संग्राम का बदला लेने की भीषण क्रियाएं, सन् १९२०,३०,३२,४० और ४२ के गांधी जी के आन्दोलन, इन आन्दोलनों को कुचलने के लिए अंग्रेजों द्वारा महान दमन। चूंकि सन् २० के बाद के इन समस्त आन्दोलनों में मैंने स्वयं हिस्सा लिया था, इसलिए इन आन्दोलनों के कई दृश्य मुझे स्मरण आए। फिर मुझे याद आई भारत जिस तरह स्वतन्त्र हुआ उसकी तथा उसके बाद की कई घटनाएं। तो जो अंग्रेजी राज्य भारत के वर्तमान सारे क्लेशों का मुख्य कारण था उसी अंग्रेजी राज्य के सन् ४७ के कर्णधारों ने जब हमें बिना किसी झगड़े-झांटे स्वतन्त्रता दे दी, तब पिछली सभी बातें भूल आज हम अंग्रेजी राज्य के सबसे बड़े मित्र हैं। शत्रुता हमारी किसी भी देश से नहीं, हमारी संस्कृति की परम्परा के कारण स्वतन्त्र भारत सभी देशों और राष्ट्रों का मित्र है और मित्र रहना चाहता है, पर अंग्रेजों के हम सबसे बड़े मित्र हैं। उनके अन्तिम उदार आचरण के कारण पुरानी सभी कटु बातों को हम भूल गए। बिना किसी प्रकार के संघर्ष के इस प्रकार हमें स्वराज्य देना अंग्रेजों के स्वयं के इतिहास के प्रतिकूल बात थी। अमेरिका, आयरलैंड, मिस्र—किसीके साथ भी उन्होंने ऐसा उदार व्यवहार नहीं किया था, और अंग्रेजों ने ही क्या, कदाचित् किसी भी राष्ट्र ने अपने अधीन राष्ट्र के साथ मानव-इतिहास में ऐसा व्यव-
. नहीं किया। यह कारण तो उनके प्रति हमारी वर्तमान सद्-
का है ही पर इसके सिवा हमारी सांस्कृतिक परम्परा और

गांधी जी का दर्शन भी इसका बहुत बड़ा कारण है। कुछ लोगों का मत है कि हमें स्वतन्त्रता अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति के कारण मिली, न अंग्रेजों की उदारता के कारण और न गांधी जी तथा हमारे देशवासियों के उनके अनुसरण के कारण। अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति भी हमारी स्वतन्त्रता का कारण है इसे मैं अस्वीकार नहीं करता, परन्तु अंग्रेजों की उदारता और गांधी जी के प्रयत्न तथा हमारे देशवासियों का उनका अनुसरण, ये बातें न होतीं तो अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति भारत को स्वतन्त्र न कर सकती थी। अंग्रेज अभी बहुत समय तक हमें दबोचे रह सकते थे। गांधी जी ने पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक हमारे देशवासियों के मन में जो राष्ट्रीय भावनाएं भरीं और उन भावनाओं के कारण हमारे देशवासियों ने उनका जो अनुसरण किया उसकी वजह से हमारे देश को परतन्त्र रखना असम्भव हो गया था। और अंग्रेजों ने अन्त में कोई झगड़ा-झासा न कर हमारे साथ उदार व्यवहार किया, हमें स्वराज्य दे दिया। यदि ये दोनों बातें न होतीं तब तो वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति में हम और भी बुरी तरह कुचले जाते। तो जिन अंग्रेजों से गत दो शताब्दियों तक हमारे नाना प्रकार के सम्बन्ध रह चुके थे उन्हींकी राजधानी लन्दन में मैं आज खड़ा हुआ था। किसी समय अंग्रेजी साम्राज्य संसार का सबसे बड़ा राज्य रहा था। कहा जाता था कि अंग्रेजी राज्य में कभी सूर्य नहीं डूबता था। लन्दन दुनिया का सबसे बड़ा शहर था। आज अंग्रेजी साम्राज्य 'कामनवेल्थ' में परिणत हो गया, यद्यपि सच्चा कामनवेल्थ बनने में उसमें अभी अनेक कमियां हैं, फिर भी इस रूप में आज भी संसार की वह सबसे बड़ी चीज है। लन्दन आज चाहे आबादी में न्यूयार्क और टोकियो से छोटा हो, पर क्षेत्रफल में दुनिया का सबसे बड़ा नगर है। पर सुना जाता है कि गत युद्ध में जीतने पर भी आज इंगलिस्तान के निवासी आर्थिक दृष्टि से बड़े कष्ट में हैं, उन्हें खाने तक को पूरा नहीं मिलता। मैं यूरोप का बहुत-सा भाग देखकर लन्दन पहुंचा था। इंगलिस्तान को छोड़ रार्शानिंग यूरोप में कहीं भी न था।

रहीं जो कभी रह चुका था। पर संसार में क्या किसी की ...
र-सा समय रहा है, मुझे याद आया तुलसीदास जी का एक छन्द—

परा को प्रमान यही तुलसी
जो फरा सो झरा जो बरा सो बुताना।

अंग्रेजों और उनके राज्य की पूर्वावस्था न रहने पर भी अभी ...
ता, उनके राज्य का, और लन्दन का दुनिया में बहुत बड़ा महत्व
। लन्दन की भूमि पर उपर उपर्युक्त अनेक बातें सोचते हुए मैंने हर
ष्टि से लन्दन का निरीक्षण करने का निश्चय किया।

हवाई अड्डे पर मुझे लेने के लिए भारतीय दूतावास के प्रतिनिधि
ए थे और एक मोटर भी लाए थे। जहां भारतीय दूतावास ने हम
ों के ठहरने की व्यवस्था की थी वह क्लब भारतीय सरकार का
ौर इसे लन्दन का भारतीय दूतावास चलाता है। लन्दन में हमारी
क इमारतें और संस्थाएं हैं। भारतीय दूतावास का भवन इण्डिया
स, भारतीय राजदूत का निवास-स्थान, इण्डियन सर्विसेज क्लब,
ारत सरकार की मुख्य जायदादें हैं। भारत सरकार के अतिरिक्त
भारतीयों की कई गैरसरकारी संस्थाएं भी चलती हैं जिनमें मुख्य
ंडिया क्लब, और विद्यार्थियों की कई संस्थाएं। इंगलिस्तान का
साथ इतने लम्बे समय से सम्बन्ध रहने के कारण लन्दन में
की इस तरह की संस्थाएं रहना स्वाभाविक है।

जिस इण्डियन सर्विसेज क्लब में हम ठहराए गए वहां भारत
। और से होटल चलता है और भारत से आनेवाले प्रतिष्ठित
, खासकर सरकारी अफसर, ठहरते हैं। श्री बैनर्जी नामक एक

बड़े सुयोग्य व्यक्ति इसका प्रबन्ध करते हैं। हमे काफी अच्छे कमरे मिले। खाना यहां भारतीय ढग का भी मिल सकता है, यह सुनकर हमे बडा हर्ष हुआ।

कामनवेल्थ पार्लियामेण्टरी एसोसिएशन की कैनेडा की राजधानी ओटावा में होने वाली परिषद् के प्रतिनिधियों को लेकर एक विशेष प्लेन ता० २९ अगस्त को लन्दन से कैनेडा जाने वाला था। आज २० तारीख थी। २९ तारीख को ओटावा जाने तक मैं अन्य किसी स्थान को नहीं जाना चाहता था। बीस दिन तक लगातार घूमते रहने के कारण कुछ थकावट भी हो गई और लन्दन मे मैं कुछ अधिक रहना भी चाहता था। अतः अगले आठ-नौ दिन मे लन्दन में क्या-क्या करना है, इसका कार्यक्रम बनाया गया। हमने देखा कि इस कार्यक्रम मे और अब तक के हमारे पर्यटन के कार्यक्रमों में अन्तर है। इसका कारण था अन्य स्थानों को हम वहा के विशिष्ट स्थल और वहा का जीवन देखने गए थे। लन्दन में इन दो बातों के सिवा अन्य अनेक काम भी थे, जैसे मेरे आगमन की खबर सुन वहा के भारतीय विद्यार्थियों की दो सस्थाओं ने दो दिन तक मेरे भाषण रखे थे। रायटर के प्रतिनिधि मेरी एक मुलाकात चाहते थे। लन्दन की आकाशवाणी बी० बी० सी० वाले भी मेरे वक्तव्य के लिए उत्सुक थे। लन्दन की कामनवेल्थ पार्लियामेण्टरी एसोसिएशन की शाखा ने हमारे सम्मान मे एक पार्टी रखी थी। वहा के कई राजनैतिक व्यक्तियों से हमारी मुलाकातें तय हुई थीं, इत्यादि।

लन्दन का मेरा सारा कार्यक्रम निम्नलिखित विभागों में विभक्त किया जा सकता है :

(१) लन्दन के दर्शनीय स्थानों और वहां के जीवन का निरीक्षण।

(२) सार्वजनिक भाषण, पत्र-प्रतिनिधियों से मुलाकातें आदि।

(३) वहा के अनुदार दल, मजदूर दल के दफ्तरों को जा, उन दलों के सगठन पर उनके मन्त्रियों से, टाइम्स के लिटरेरी सप्लीमेण्ट के सम्पादकों से तथा अन्य लोगों से मुलाकातें आदि।

है, पर पैरिस के सदृश नहीं। बहुत कम सड़कों की वैसी शोभा है। अनेक स्थानों पर पिछली लड़ाई की बमबारी के कारण खण्डहर बन गए हैं जो अब तक भी ठीक नहीं कराए जा सके। लन्दन के मुख्य-मुख्य स्थानों के बीच एक बहुत बड़ी खुली जगह है, जिसे हाइड पार्क कहते हैं। इस हाइड पार्क का क्षेत्रफल ३६१ एकड़ है, किन्तु किंग्स्टन गार्डन को मिलाकर ६,०० एकड़ हो जाता है। लन्दन के सदृश घने बसे हुए तथा रोज़गार-धन्धे वाले नगर के बीच इतनी बड़ी खुली जगह इस पार्क की सबसे बड़ी विशेषता है। फिर इसकी दूसरी विशेषता है यहां लन्दन-निवासियों का जमघट। नागरिकों का यह जमाव यों तो रोज़ ही सन्ध्या को रहता है, पर शनिवार की सन्ध्या और रविवार की दोपहर से सन्ध्या तक तो यह जमाव एक बड़े भारी मेले का रूप ले लेता है। लाखों नर-नारी, बच्चे दोनों दिन यहां आते, खेलते-कूदते, खाते-पीते तथा छोटी-छोटी टुकड़ियों में विविध प्रकार के भाषण, बैण्ड आदि सुनते हैं। पार्क में हज़ारों कुर्सियां पड़ी रहती हैं। एक तरफ बैण्ड बजता है, एक तरफ सरपेण्टाइन नामक झील में नौका-विहार होता है और ऊंचे-ऊंचे टिपायों पर खड़े हो-होकर भाषण तो न जाने कितने लोग दिया करते हैं। सुना यह गया कि लन्दन में बड़ी-बड़ी सार्वजनिक सभाएं कभी भी नहीं होतीं, चुनाव आदि के अवसरों पर भी नहीं। वहां शायद ही कोई ऐसी सभा हुई हो जिसमें दो-तीन सौ मनुष्यों से अधिक जमा हुए हों। वहां के लोग इस बात पर बड़ा आश्चर्य प्रकट किया करते हैं कि भारत में सार्वजनिक सभाओं में हज़ारों और लाखों की संख्या में लोग कैसे इकट्ठे होते हैं। शनिवार और इतवार को ऐसी सभाओं के लिए हाइड पार्क बड़ा प्रसिद्ध है। भिन्न-भिन्न विषयों पर भिन्न-भिन्न वक्ता बोलते, लोग सुनते और उनसे नाना प्रकार के प्रश्न करते हैं। भाषण के बाद प्रश्नों की झड़ी लन्दन की एक पद्धति है। सुना कि श्री कृष्ण मेनन वर्षों तक इस प्रकार की सभाओं में बोलते रहे हैं। लन्दन का और भी हर प्रकार का जीवन इस पार्क में शनिवार और रविवार को दृष्टिगोचर होता

अलग-अलग रखे गए हैं।

टेट गैलरी की इमारत इसके पीछे है। इसमें ३,००० व्यक्तियों के चित्र और मूर्तियां आदि हैं। इसका अत्यन्त ऐतिहासिक महत्त्व है। इसमें राजवंश को छोड़ अन्य किसी जीवित व्यक्ति की तस्वीर आदि नहीं रखी जा सकती।

अठारहवीं शताब्दी तक चारिंग क्रास, वर्तमान वेस्ट मिन्स्टर ब्रिज और टेम्स नदी तथा सेण्ट जेम्स पार्क के बीच का प्रदेश प्राचीन व्हाइट हाल नामक महल से घिरा हुआ था जिसका आज केवल नाम बाकी है और जिसकी केवल एक इमारत शेष है। आज तो नैल्सन-स्तम्भ से वेस्ट मिन्स्टर के आधे मील के रास्ते पर दूर-दूर तक फैले ब्रिटिश साम्राज्य का राजनीतिक मर्मस्थल है क्योंकि यहीं पर वे सब इमारतें हैं जहां से साम्राज्य का शासन चलाया जाता है। व्हाइट हाल ट्रैफल्गर से वेस्ट मिन्स्टर तक जाने वाले प्रशस्त राजमार्ग का नाम है। यहां सरकारी दफ्तरों की क़तार की क़तार बनी हुई है।

व्हाइट हाल में प्रवेश करते ही दायें हाथ व्हाइट हाल थियेटर है। सम्मुख स्काटलैण्ड यार्ड है। यह नाम उस इमारत के नाम पर पड़ा है जहां लन्दन-प्रवास के समय स्काटलैण्ड के राजा और उनके राजदूत रहा करते थे। १६४६-५२ तक, जिन दिनों जान मिल्टन कौंसिल आफ स्टेट के लेटिन सेक्रेटरी थे, वे भी इसी स्थान पर रहते थे। पिछले दिनों में यह स्थान राजधानी की पुलिस के नाम के साथ सम्बद्ध होकर अत्यन्त विख्यात हो गया है।

वैसे तो वेस्ट मिन्स्टर नाम का प्रयोग उस सारे प्रदेश के लिए होता है, जिसे वेस्ट एण्ड कहा जाता है किन्तु प्रतिदिन के व्यवहार में लन्दन-निवासी इस संबोधन का प्रयोग इससे काफी छोटे इलाके के लिए करते हैं, जिसमें वेस्ट मिन्स्टर एबी और संसद्-भवन आदि आते हैं। वेस्ट मिन्स्टर का महत्त्व सबसे अधिक इसलिए है कि इंग्लैंड के सम्राटों एवं सम्राज्ञियों का राजतिलक इसी स्थान पर होता है। वेस्ट मिन्स्टर एबी की इमारत प्रारम्भिक ब्रिटिश वास्तुकला का अद्भुत नमूना है।

संसद्-भवन की इमारत उत्तरकाल की गोथिक कलाशैली ...
ी है। इस इमारत को वेस्ट मिन्स्टर का नया राजमहल भी कह...
। इस इमारत का डिजाइन सर चार्ल्स बैरी ने तैयार किया ...
र इसका निर्माण १८४० से १८५० के बीच हुआ। यह इमारत
ा नदी के किनारे कुछ नीची भूमि में बनी हुई है इसलिए इसकी
न में कुछ कमी आ गई है। यह इमारत आठ एकड़ के क्षेत्रफल
बनी है। इसमें ग्यारह आंगन और विभिन्न स्थानों पर सीढ़ियां
ई हैं। इसके कमरों की संख्या १, १०० है। हाउस आफ कामन्स
ौर् लोकसभा की स्थापना उत्तरी भाग में की गई है। हाउस
ऑफ लार्ड्स अथवा लार्ड-सभा दक्षिणी भाग में है। इसके अतिरिक्त
द के उच्चाधिकारियों के निवास का भी इसमें प्रबन्ध है। ब्रिटेन
लोकसभा के अध्यक्ष यहीं रहते हैं।

इस इमारत की एक विशेषता यह है कि ब्रिटेन के शासकों की
ायें यहां स्थापित हैं, जो अत्यन्त सुन्दर प्रतीत होती हैं। इसके
तिरिक्त इसकी तीन मीनारें हैं जो इस सुन्दरता को और बढ़ा देती
सबसे ऊंची और सबसे अधिक मोहक विक्टोरिया टावर है। यह
६ फुट ऊंची है और इसकी एक-एक भुजा ७५ फुट की है। ऐसी
ौर सुडौल मीनार दूसरी कदाचित् ही हो। क्लाक टावर की
ई ३२० फुट है। यहां संसार-प्रसिद्ध घड़ी बिगबेन लगी हुई है।
घड़ी चारों ओर दिखाई पड़ती है। घड़ी का आकार चौकोर
डायल तेईस फुट लम्बा और तेईस फुट चौड़ा। दो-दो फुट के
हैं और मिनट की सुई १४ फुट लम्बी है। समय का बोध एक
के बजने से होता जो साढ़े तेरह टन का है। दिन को विक्टोरिया
के झण्डे से और रात को क्लाक टावर के प्रकाश से इस बात

का संकेत मिलता रहता है कि ससद् का अधिवेशन हो रहा है अथवा नहीं।

हाउस आफ लार्ड्स गौथिक कला-शैली के अनुसार बना हुआ है और पूरी तरह सजाया गया है। इसकी लम्बाई ६० फुट, चौडाई ४५ फुट और ऊंचाई भी ४५ फुट है। १६४१ मे आग से हाउस आफ कामन्स के हाल को क्षति पहुचने के बाद से १६५० में उसके ठीक-ठाक हो जाने तक यह हाउस आफ कामन्स अर्थात् लोकसभा के उपयोग में आता रहा।

हाउस आफ कामन्स का हाल १० मई, १६४१ को आग से जलकर नष्ट हो गया था। नया भवन सर गाइल्स स्काट के डिजाइन के आधार पर तैयार किया गया है। इसकी लम्बाई १३० फुट, चौडाई ४८ फुट और ऊंचाई ४३ फुट है। ब्रिटेन की लोकसभा के अध्यक्ष का आसन आस्ट्रेलिया से प्राप्त हुआ है। सदन की मेज कैनेडा से आई है। अध्यक्ष के आसन के ऊपर प्रेस गैलरी है, जिसमें १६० लोगों के लिए स्थान है। अध्यक्ष के ठीक सामने विशेष और साधारण दर्शकों के बैठने की गैलरी है। सदन के दायें-बायें डिवीजन लाबी है। मत-विभाजन के समय समर्थन करने वाले सदस्य दायीं तरफ की लाबी में और विरोध करने वाले सदस्य बायी तरफ की लाबी में चले जाते हैं।

समीप ही वेस्ट मिन्स्टर हाल है। १३४६ में सम्राट चार्ल्स प्रथम को मृत्यु-दण्ड यहीं पर दिया गया था। जिस समय सम्राट चार्ल्स का मुकदमा हो रहा था उस समय वे जिस स्थल पर बैठे थे उसे आज भी पहचाना जा सकता है। उस स्थल पर पीतल की छोटी-सी चौकी रखी है। यह सुन्दर हाल १०६७ में विलियम द्वितीय ने तैयार कराया था। इसकी लम्बाई २६० फुट, चौडाई ६८ फुट और ऊंचाई ६२ फुट है। इसकी सुन्दर छत १३६६ में रिचार्ड द्वितीय ने तैयार कराई थी। कई अन्य ऐतिहासिक संस्मरण इस हाल के साथ जुड़े हुए हैं। यहीं १३२७ मे एडवर्ड द्वितीय ने गद्दी का त्याग किया। १६५३ में

क्रामवेल को गद्दी पर भाई [illegible] गिरा गया। १५३५ यहीं पर सर टामस मूर को मृत्यु दण्ड दिया।

सेण्ट जेम्स पार्क और [illegible] लन्दन के एक सिरे पर बना है ब्रिटेन के राजवंश का निवास-स्थान बकिंघम पैलेस है। जिसमें सम्राट अथवा सम्राज्ञी रहते हैं, शाही झण्डा लहराता रहता है। इस महल का नाम बकिंघम ड्यूक के नाम पर पड़ा है, जो [इस] स्थान पर १७०३ में ड्यूक आफ बकिंघम ने बनवाया था। [जार्ज] तृतीय ने इसे १७६२ में खरीद लिया और १७६१ में इसीमें [illegible] जानपत्नी के साथ उनकी प्रथम भेंट हुई थी। १८२५ में जार्ज चतुर्थ ने इसमें परिवर्तन करा इसे नये सिरे से बनवाया, किन्तु सरकारी तौर पर सम्राट के निवास-स्थान का दर्जा इसे सम्राज्ञी विक्टोरिया के समय से प्राप्त हुआ। १९४०-४४ में हवाई आक्रमणों से महल को कई बार क्षति पहुंची। दर्शकों को महल के भीतर जाने की इजाजत नहीं है।

पिकेडली सर्कस लन्दन का सबसे व्यस्त स्थान है। नई दिल्ली के कनाट सर्कस जैसा सुरुचिपूर्ण और सुन्दर तो यह स्थान नहीं है किन्तु आमोद-प्रमोद का केन्द्र होने के नाते शाम को यहां की छटा बहुत बढ़ जाती है। सायंकाल के समय साफ-सुथरे और रंग-बिरंगे पोशाक वाले लोग यहां आते हैं और रेस्तरां व थियेटर आदि की ओर जाते दिखाई देते हैं। तरह-तरह की दमकती हुई बत्तियों से सारा वातावरण जगमगा उठता है। कोई आधा दर्जन महत्वपूर्ण सड़कें यहां आकर मिलती हैं। दिन में कोई ऐसा क्षण ही नहीं होता जब यहां बहुत अधिक भीड़ न रहती हो।

चेलसिया टेम्स नदी के किनारे-किनारे डेढ़ मील लम्बी बड़ी सुन्दर बस्ती है। सोलहवीं शताब्दी के बाद से यह कुछ प्रमुख लोगों के रहने का स्थान रही है। यहां पर सर टामस मूर और टामस कार्लाईल के निवास-स्थान सुरक्षित हैं, बल्कि स्मरण रहे कि टामस कार्लाईल तो चेलसिया के सन्त के नाम से विख्यात भी हो गए थे।

ब्रिटिश म्यूजियम की गणना ससार के सर्वोत्तम और सम्पन्न अजायबघरों में की जानी चाहिए। इसकी स्थापना १७५३ में हुई थी। इसमें लगभग ससार के सभी देशों की वस्तुएं सगृहीत हैं। इसमें पाण्डुलिपियों का एक अलग भाग है। उधर लन्दन म्यूजियम से ब्रिटेन के ही सामाजिक जीवन की जानकारी प्राप्त होती है।

स्वय पत्रकारी से अनुराग होने के कारण फ्लीट स्ट्रीट ने मुझे विशेष आकर्षित किया, किन्तु वहा पहुचने पर मैंने उसमें कोई विशेषता नही देखी। ब्रिटेन के अधिकाश समाचारपत्र इसी स्थान पर प्रकाशित होते हैं और यद्यपि वे प्रकाशित इसी जगह होते हैं, पर उनका मुद्रण आदि पिछवाड़े की सड़कों, स्क्वायरों आदि में होता है। सायकाल छः बजे से रात के बारह-एक बजे तक यहा बड़ी चहल-पहल रहती है। आधी रात को बाहर भेजे जाने वाले समाचारपत्रों को रेलगाड़ियों तक पहुचाने की धुन रहती है। पत्रों के लन्दन सस्करण सवेरे तीन बजे तक छपते रहते हैं। कुछ काल पश्चात् सायकाल के सस्करणों के लिए काम-धाम आरम्भ हो जाता है।

यो तो ब्रिटेन की प्रत्येक वस्तु का कुछ न कुछ ऐतिहासिक महत्त्व है, पर यह कहे बिना नही रहा जा सकता कि वेस्ट मिन्स्टर एबी में एक प्रकार से इग्लैण्ड का सारा इतिहास सुरक्षित है।

लन्दन की अन्य कोई वस्तु मुझे विशेष दर्शनीय नहीं जान पड़ी। इग्लैंड के गिरजाघर रोम के गिरजाघरों के सामने तुच्छ जान पड़ते हैं। वहां का पार्लियामेण्ट भवन केवल इसलिए विशेषता रखता है कि आधुनिक काल के प्रजातन्त्रो मे शायद इग्लैंड की प्रजातन्त्रात्मक सस्थाएं सबसे पुरानी हैं और वे यहां बैठती हैं। बकिंघम पैलेस में भी कम से कम बाहर से मुझे कोई विशेषता नहीं दिखी। भारत के पुराने नरेशों के कुछ महल बकिंघम पैलेस से कहीं अच्छे दिखते हैं। अजायबघरों के यहां के संग्रहों की अपेक्षा काहिरा, रोम के वैटिकन और फ्रांस के अजायबघरों के सग्रह कहीं बड़े हैं और इग्लैंड की चित्रशालाओं से रोम के वैटिकन, तथा फ्लारेंस की चित्रशालाएं कहीं

ब्रिटिश म्यूजियम की गणना ससार के सर्वोत्तम और सम्पन्न अजायबघरो में की जानी चाहिए। इसकी स्थापना १७५३ मे हुई थी। इसमें लगभग ससार के सभी देशों की वस्तुए सगृहीत हैं। इसमें पाण्डुलिपियों का एक अलग भाग है। उधर लन्दन म्यूजियम से ब्रिटेन के ही सामाजिक जीवन की जानकारी प्राप्त होती है।

स्वय पत्रकारी से अनुराग होने के कारण फ्लीट स्ट्रीट ने मुझे विशेष आकर्षित किया, किन्तु वहा पहुचने पर मैंने उसमे कोई विशेषता नहीं देखी। ब्रिटेन के अधिकाश समाचारपत्र इसी स्थान पर प्रकाशित होते हैं और यद्यपि वे प्रकाशित इसी जगह होते हैं, पर उनका मुद्रण आदि पिछवाडे की सडको, स्क्वायरो आदि मे होता है। सायकाल छ बजे से रात के बारह-एक बजे तक यहा बडी चहल-पहल रहती है। आधी रात को बाहर भेजे जाने वाले समाचारपत्रो को रेलगाडियों तक पहुचाने की धुन रहती है। पत्रो के लन्दन सस्करण सवेरे तीन बजे तक छपते रहते हैं। कुछ काल पश्चात् सायकाल के सस्करणों के लिए काम-धाम प्रारम्भ हो जाता है।

यो तो ब्रिटेन की प्रत्येक वस्तु का कुछ न कुछ ऐतिहासिक महत्त्व है, पर यह कहे बिना नही रहा जा सकता कि वेस्ट मिन्स्टर एबी में एक प्रकार से इग्लैण्ड का सारा इतिहास सुरक्षित है।

लन्दन की अन्य कोई वस्तु मुझे विशेष दर्शनीय नही जान पडी। इग्लैंड के गिरजाघर रोम के गिरजाघरों के सामने तुच्छ जान पड़ते हैं। वहा का पालियामेण्ट भवन केवल इसलिए विशेषता रखता है कि आधुनिक काल के प्रजातन्त्रो मे शायद इग्लैंड की पजातन्त्रात्मक सस्थाए सबसे पुरानी हैं और वे यहा बैठती है। बकिंघम पैलेस मे भी कम से कम बाहर से मुझे कोई विशेषता नही दिखी। भारत के पुराने नरेशों के कुछ महल बकिंघम पंलेस से कहीं अच्छे दिखते हैं। अजायबघरों के यहां के सग्रहों की अपेक्षा काहिरा, रोम के वैटिकन और फ्रांस के अजायबघरों के सग्रह कही बडे हैं और इग्लैंड की चित्रशालाओं से रोम के वैटिकन, तथा फ्लारेंस की चित्रशालाएं कही

से होने वाली आय का उचित भाग प्राप्त हो, समाज में वितरण न्यायपूर्ण हो, और उत्पादन के साधन राष्ट्र के पास हो। समाजवाद के जिन चार सिद्धान्तो मे पार्टी की आस्था है वे इस प्रकार हैं— सभी को विकास के बराबर अवसर मिले, धन का उचित बटवारा हो, लोकतन्त्र के द्वारा अपनी आर्थिक स्थिति पर जनता का ही नियन्त्रण हो और राष्ट्र की उत्पादनशक्ति का जनता के हित मे अधिक से अधिक उपयोग किया जाए। समाजवाद शब्द का अर्थ एक विशेष जीवन-व्यवस्था के सूचक के रूप मे राबर्ट ओवन ने किया था। लेबर पार्टी के विचार मे सच्चे लोकतन्त्र का अर्थ है कि ससद् के द्वारा जनता का देश की अर्थ-व्यवस्था पर अधिक से अधिक नियन्त्रण हो। लेबर पार्टी का प्रधान कार्यालय ट्रासपोर्ट हाउस, लन्दन मे है। इमारत की मालिक ट्रासपोर्ट ऐण्ड जनरल वर्कर्स यूनियन है, जिससे पार्टी ने किराये पर जगह ले रखी है। पार्टी का प्रधान कार्यालय बहुत बड़ा नही है। एक सेक्रेटरी होता है जो प्रति वर्ष पार्टी के सम्मेलन मे चुना जाता है। पार्टी के सदस्यो की सख्या पचास लाख से अधिक है। कम्युनिस्ट पार्टी के साथ सम्बन्ध रखने मे लेबर पार्टी सदा इन्कार करती रही है। १९४६ मे पार्टी के सविधान मे ऐसा सशोधन किया गया कि कम्युनिस्ट पार्टी के साथ किसी प्रकार का सहयोग असम्भव हो गया है। लेबर पार्टी से ८० ट्रेड यूनियन सस्थाए सबद्ध हैं। पार्टी के प्रत्येक सदस्य को कम से कम ६ शिलिंग वार्षिक शुल्क देना होता है। श्रम-आन्दोलन के तीनो अगो लेबर पार्टी, ट्रेड यूनियन काग्रेस और को-ओपरेटिव यूनियन के बीच तालमेल रखने के लिए नेशनल कौंसिल आफ लेबर की एन०सी० एल० की स्थापना की गई। कौंसिल मे लेबर पार्टी, ट्रेड यूनियन काग्रेस और कोआपरेटिव यूनियन के आठ सदस्य रहते हैं। लेबर पार्टी का जन्म १९०० में हुआ। रैम्से मैकडोनल्ड पार्टी के सस्थापको थे। लेबर पार्टी के पास धन तो कभी अधिक नही रहा, किन्तु आरम्भ में वह अत्यन्त निर्धन थी। पार्टी की स्थापना के बाद सात वर्ष में ही पार्टी के सदस्यो की सख्या दस लाख से ऊपर पहुच गई। १९०० में

और राजभक्त कहे जाते थे। हालें, बोलिंग ब्रोक और नाटिंघम के समय मे टोरी पार्टी शिखर पर थी। यद्यपि विलियम पिट (बड़े) बोलिंग ब्रोक से प्रभावित हुए थे और ब्रिटेन की नौशक्ति को सबल बनाकर कैनेडा को प्राप्त कर उन्होंने भावी टोरी नेताओं को साम्राज्यवादी नीति का मार्ग दिखलाया, फिर भी उन्हें किसी पार्टी-विशेष के साथ सम्बद्ध करना उचित नहीं। राजनीतिक दृष्टि से यद्यपि एडवर्ड बर्क चैथम की तरह ही मंजे हुए ह्विग थे, पर यथार्थ रूप मे वे एक कञ्जरवेटिव सुधारक थे। लड़खड़ाती हुई टोरी पार्टी का अन्त करके कञ्जरवेटिव पार्टी की नींव डालना सर रॉबर्ट पील काम था, यद्यपि उन्होंने यह शब्द डब्लू० एम० क्रोकर से लिया था, जो ससद् के कम बोलने वाले सदस्यों मे मे थे, किन्तु प्रतिभाशाली एवं प्रभावशाली लेख लिखा करते थे। बाद मे ३३ वर्ष के सधि-काल के पश्चात् डिजरायली के समय मे ससद मे कञ्जरवेटिव पार्टी का बहुमत हुआ। डिजरायली का कथन था कि हम अपनी सस्थाओं की रक्षा करेंगे, साम्राज्य को सगठित रखेंगे और जनता का रहन-सहन सुधारेंगे। स्मरण रहे कि डिजरायली ने ही मिस्र में ब्रिटेन के प्रभाव की स्थापना की थी। डिजरायली के पश्चात् लार्ड सालिसबरी का युग आया, जिसमे उन्होंने "देश मे प्रगति और विदेश मे शाति" की स्थापना की। आधुनिक कञ्जरवेटिव सिद्धान्तो की नींव डाली जोजेफ चेम्बरलेन ने। वे साम्राज्य के विभिन्न अगों को विशेष रियायतें देने के पक्षपाती थे। पहले और दूसरे महायुद्ध के बीच स्टेनले बाल्डविन थे, जो तीन बार प्रधान मत्री रहे थे, यह नीति स्थिर की कि उद्योग में पारस्परिक सहयोग न केवल समृद्धि के लिए अनिवार्य है बल्कि सयमित जीवन-व्यवस्था के लिए भी आवश्यक है। कञ्जरवेटिव पार्टी की नीति सदा ही व्यापारियो में न्यायपूर्ण होड़ को प्रोत्साहन देने की रही है। उद्योगों के और अधिक राष्ट्रीयकरण को कञ्जरवेटिव नेता रोक देने का विचार करते रहे हैं। लोहा और इस्पात उद्योग के सम्बन्ध मे तो उन्होंने लेबर सरकार द्वारा किए गए राष्ट्रीयकरण को ही समाप्त कर

सुन्दर और स्वाभाविक था। लन्दन के इस काल के अच्छे से अच्छे कलाकारों ने इन नाटकों मे भाग लिया था। [illegible] सबसे अच्छा जान पड़ा। बर्नार्ड शा का नाटक [illegible] हुआ। उनके कई नाटक इससे कहीं अच्छे हैं। शेक्सपियर का 'रोमियो-जूलियट' साहित्यिक वर्णनो के सिवा प्रदर्शन मे इस समय के योग्य न जान पड़ा। भारत मे पौराणिक और ऐतिहासिक नाटक आज भी सफलतापूर्वक खेले जाते हैं, फिर इस नाटक को देखकर [illegible] क्यो हुई, यह कहना कठिन है। जो कुछ हो, [illegible], [illegible]-दास और मेरा तीनों का ही यह मत हुआ तब इसमें (मत में) साम्य नहीं है, यह कहना कठिन है। एक बात और हुई। पूरा का पूरा नाटक एक ही दृश्य पर खेला गया, इससे भी इसके सौन्दर्य मे कमी रही।

संसार के मानचित्र में ब्रिटेन छोटा प्रतीत होता है और सचमुच संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, चीन और भारत आदि महान देशों की तुलना में ब्रिटेन एक अत्यन्त छोटा देश है, किन्तु वह एक बहुत बड़े साम्राज्य का केन्द्र-बिन्दु रहा और कुछ दूर तक अभी भी है। ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल और साम्राज्य मे डोमीनियन, उपनिवेश, सरक्षित प्रदेश, ट्रस्टीशिप प्रदेश आदि हैं। किसी समय संसार की जनसंख्या का पांचवां भाग ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल और साम्राज्य का निवासी था, जो समूचे संसार मे फैला था। इसलिए कहावत चली आती थी कि ब्रिटिश साम्राज्य मे सूर्य नहीं डूबता।

इसमें कोई अत्युक्ति नहीं कि एक तरह से ब्रिटिश साम्राज्य का इतिहास पिछली तीन-चार शताब्दियों का इतिहास है। इन शताब्दियों में ब्रिटेन जैसे छोटे द्वीप का प्रभाव संसार के कोने-कोने मे फैला और वह सारी दुनिया पर छा गया। जीवन का कोई क्षेत्र शेष न रहा, जिसमें किसी न किसी रूप में ब्रिटेन का प्रभाव विद्यमान न हो। दो महायुद्धों की भीषण ज्वाला का सामना करके भी आज ब्रिटेन यदि

रहती है। कर्ता-धर्ता प्रधानमन्त्री होता है। ब्रिटेन की संसद् में दो सदन हैं—लॉर्ड-सभा और लोकसभा। इन दोनों में लोकसभा का महत्त्व अधिक है, यद्यपि प्रारम्भ में लार्ड-सभा ही अधिक महत्त्वपूर्ण थी। ब्रिटेन का संविधान समय के परिवर्तन के साथ-साथ जनता की इच्छाओं और उमंगों के अनुसार बदलता गया है। महिलाएं भी लोकसभा की सदस्य हो सकती हैं, और १९२८ से उनको भी पुरुषों के समान मताधिकार प्राप्त है।

अब लीजिए ब्रिटेन के वाणिज्य और उद्योग को। यद्यपि ब्रिटेन के अधिक भाग में खेती होती है, किन्तु कारखानों का उत्पादन, खनिज-पदार्थों को खोदना और व्यापार ही ब्रिटेन के मुख्य जीवन-संचार-साधन हैं। ब्रिटेन का सबसे बहुमूल्य खनिज पदार्थ कोयला है। इसके अतिरिक्त यहां सूती, ऊनी, रेशमी, लिनन और नकली रेशमी कपड़ा बड़ी मात्रा में तैयार होता है। मशीनों और बिजली के सामान का उत्पादन भी बड़े पैमाने पर होता है। ब्रिटेन कोयला और तैयार माल का निर्यात करता है और कपास, ऊन, इमारती लकड़ी, पेट्रोलियम, तेल, खाद्य पदार्थ, शराब, तम्बाकू आदि का आयात करता है।

जहां तक शिक्षा का सम्बन्ध है, १९४४ के शिक्षा-कानून के अधीन शिक्षा-व्यवस्था को प्रगतिशील ढंग पर पुनर्गठित किया गया है। देश में टेक्नीकल स्कूल, अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कालेज और कृषि-कालेज, पॉलीटेक्निक कालेज आदि भी समुचित संख्या में हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षा स्वतन्त्र है और अनिवार्य भी। ग्यारह विश्वविद्यालय हैं जिनके नाम निम्नलिखित हैं—आक्सफर्ड, कैम्ब्रिज, डरहम, लन्दन, मैंचेस्टर, बरमिंघम, लिवरपूल, लीड्स, शेफील्ड, ब्रिस्टल और रीडिंग। आक्सफर्ड और कैम्ब्रिज विश्वविदित हैं। जैसी ख्याति इन दो नगरों की ज्ञान के लिए है, वैसी ही सौन्दर्य के लिए भी है।

विगत शताब्दियों में ब्रिटेन की आश्चर्यजनक सफलता का कारण उसकी विदेश-नीति थी। ब्रिटेन ने यह बात अच्छी तरह समझ ली थी कि यूरोप में उसके लिए कोई भविष्य नहीं है, इसलिए वह यूरोपीय

अधिक से अधिक स्वतन्त्रता और अपने अधीन देशों को अधिक से अधिक काल तक परतन्त्र रखने का यत्न। पहली बात के दृष्टान्त हैं—(१) ब्रिटेन में इतनी अधिक आबादी रहते हुए भी वहां यदि कोई बसना चाहे तो उसके मार्ग में कोई रुकावट नहीं। संसार में शायद ब्रिटेन और भारत ही ऐसे देश हैं जहां इमीग्रेशन का कोई बंधन नहीं है। (२) कितने ऐसे लोगों को ब्रिटेन ने आश्रय दिया जो अपने देश से निर्वासित किए गए। कार्ल मार्क्स कदाचित् इनमें सबसे प्रधान थे। (३) ब्रिटेन के निवासियों को अपने मत व्यक्त करने की भी सदा स्वाधीनता रही। दूसरी बात के दृष्टान्त हैं—अमेरिका, मिस्र, आयरलैंण्ड, भारत आदि देशों को परतन्त्र रखने के नाना प्रकार के प्रयत्न। भारत को जिस प्रकार ब्रिटेन ने स्वाधीन किया वह तो उसकी परम्परा के विरुद्ध एक घटना हुई। जान पड़ता है कि ब्रिटेन ने अपनी इस नीति में अब परिवर्तन किया है अथवा उसे विवश हो यह परिवर्तन करना पड़ा है। जो कुछ हो, अपने इस अध्याय के अन्त में मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि आधुनिक युग को ब्रिटेन ने बहुत कुछ दिया है। जिस प्रकार प्राचीन समय में भारत और चीन, मिस्र और अरब देशों एवं यूनान और रोम ने संसार की ज्ञान-वृद्धि की थी उसी तरह आधुनिक संसार को ब्रिटेन का ऋण मानना होगा। अंग्रेज जाति के चरित्र में ऐसी अनेक विशेषताएं हैं, जिन्होंने ब्रिटेन को यह गौरव प्रदान किया है।

लन्दन से हम कामनवेल्थ पार्लियामेण्ट कान्फ्रेंस के प्रतिनिधि एक विशेष (चार्टर्ड) प्लेन में उन्नीस अगस्त की संध्या को कैनेडा के लिए रवाना हुए।

रहते हैं, वहां कैनेडा में केवल चार। इसीलिए यहां प्राकृतिक साधनों का पूरा उपयोग नहीं हो रहा है। जमीन को ही लीजिए। समूचे देश की केवल बारह प्रतिशत जमीन में खेती होती है। यह इलाका लगभग १७, ५०, ००, ००० एकड़ है इसमें से भी विकसित ६, २०, ००, ००० एकड़ हैं। शेष भूमि या तो जंगल है या परती पड़ी है।

आबादी की कमी के कारण इस देश में बड़े-बड़े नगर नहीं हैं। बड़े से बड़ा शहर मांट्रियल है, जहां की आबादी साढ़े बारह लाख से कुछ अधिक है। एक लाख के ऊपर की जनसंख्या के दस नगर हैं। इनके नाम हैं मांट्रियल, टोरंटो, वैंकूवर, विन्नीपेग, क्यूबेक, हैमिल्टन, ओटावा, एडमोण्टन, विंडसर और कालगरी। ओटावा कैनेडा की राजधानी है। ओटावा की आबादी एक लाख साठ हजार के लगभग है। इन शहरों को छोड़ देश में शेष छोटे-छोटे नगर और कस्बे हैं। जिस प्रकार यहां बहुत बड़े शहर नहीं उसी प्रकार बहुत छोटे गांव भी नहीं। सभी नगर, कस्बे आदि में बिजली तथा सब प्रकार की आधुनिक सुविधाएं मौजूद हैं। सभी खूब साफ-सुथरे और अत्यन्त सम्पन्न दीख पड़ते हैं। सारा देश दस प्रान्तों में विभाजित है।

देश प्रजातान्त्रिक शासन से शासित होता है। केन्द्र की धारा-सभा है और दसों प्रान्तों की दस धारासभाएं हैं। केन्द्र और दसों प्रान्तों में मन्त्रिमंडल हैं, जो धारासभाओं के प्रति जिम्मेदार हैं। परन्तु हर प्रान्त में प्रजातान्त्रिक शासन होते हुए भी हर प्रान्त का शासन-विधान एक-सा नहीं है। केन्द्र और प्रान्त में अनेक राजनैतिक दल हैं और विशेषता यह है कि सब प्रान्तों में एक-से नहीं। कैनेडा की प्रमुख राजनैतिक पार्टियां दो हैं—(१) लिबरल पार्टी और (२) कंजरवेटिव पार्टी, जो अब अपने को प्रगतिशील कंजरवेटिव पार्टी कहती है। संयुक्त कैनेडा की स्थापना के बाद से शासन की बागडोर इन्हीं दो पार्टियों के हाथ में रहती आई है। अब दो नई पार्टियों की स्थापना की गई है। इन पार्टियों के नाम हैं कोआपरेटिव

ही अधिक हैं। औसत आमदनी है लगभग नौ सौ डालर यानी पैंतालीस सौ रुपया माहवारी। इसीलिए यहा की पार्लियामेण्ट के सदस्यो का वेतन दुनिया के हर देश की धारासभा के सदस्यो से अधिक है। वे दस हजार डालर याने पचास हजार रुपया प्रति वर्ष पाते हैं। मन्त्रियों का वेतन सदस्यो के वेतन से केवल दुगुना है। कैनेडा मे सभी सम्पन्न हैं, शिक्षित हैं, सुखी हैं, सन्तुष्ट हैं, इसीलिए नीरोग और दीर्घजीवी भी हैं। नये देशो की नई आबादी के सदृश जोशीले हैं। कैनेडा के श्वेतो ने आस्ट्रेलिया के श्वेतों के समान वहा के मूल निवासियो का सहार किया है और इन मूल निवासियो की सख्या इतने बडे कैनेडा देश मे केवल सवा लाख रह गई है।

हमने इन झीलो वाले देश मे प्रवेश किया यहा के सबसे बडे नगर मांट्रियल से। हम वहा पहुचे तारीख तीस की रात को।

दूसरे दिन प्रात काल ग्यारह बजे से हमारी घुमाई शुरू हुई जो तारीख सात सितम्बर को मध्याह्न मे ओटावा पहुचने तक कहीं बसों मे, कहीं ट्रेन मे और कहीं मोटरो पर बराबर चलती रही।

तारीख इकतीस को हमने बसों मे कोई अस्सी मील का चक्कर लगाया। इस प्रथम दिन की घुमाई से ही हमें कैनेडा देश के सौन्दर्य का पता लग गया। होटल से रवाना हो, पहले हम कुछ देर मांट्रियल शहर में घूमे। सर्वथा आधुनिक नया शहर। विशाल मकान, चौडी सडकें। यहां के जिन दर्शनीय स्थानो को हमने देखा वे निम्नलिखित थे—

सेंट जोजेफ का स्मारक—यह इमारत अत्यन्त भव्य है और उस समय तक पूरी नहीं बन पाई थी।

नात्रेदाम—यह माट्रियल का मुख्य गिरजाघर है।

सेंट जेम्स गिरजाघर—यह रोम के सेंट पीटर गिरजाघर के नमूने पर बना हुआ है। पर आकार मे उसका आधा है।

कोई दस बजे सन्ध्या को हम माट्रियल के विण्डसर स्टेशन से रैल द्वारा क्यूबेक शहर को रवाना हुए। रेलवे लाइन की चौडाई मुझे

उसे मैं देख रहा था तब मुझे याद आई हिन्दी की एक कहावत—'कभी नाव गाड़ी पर और कभी गाड़ी नाव पर।' यहां तो पूरी रेल गाड़ी ही नाव पर लदकर जा रही थी।

लगभग ६ बजे पूरे चौबीस घण्टे की रेल की यात्रा कर हम चार-लोटी टाउन स्टेशन पर पहुंचे। चारलोटी टाउन स्टेशन पर उस प्रान्त के प्रधानमन्त्री तथा अन्य मन्त्रियों ने हम लोगों का स्वागत किया।

दूसरे दिन प्रिंस एडवर्ड आइलैंड तथा वहां की कुछ चीजें हमें दिखाई गईं। प्रिंस एडवर्ड आइलैंड कैनेडा का उद्यान-द्वीप माना जाता है।

ता० ५ को प्रातःकाल ७ बजे की रेल से हमें सेंट जान नगर को रवाना होना था। अतः ४ बजे से ही लोगों ने उठकर तैयार होना आरम्भ किया और ठीक समय हम लोग चारलोटी टाउन से रवाना हो गए। प्रिंस एडवर्ड द्वीप से लौटते हुए आज हमने फिर समुद्र को उसी प्रकार नाव में पार किया जिस प्रकार प्रिंस एडवर्ड आइलैंड जाते हुए किया था। लगभग १० बजे हम केण्टार मेटापून पहुंचे और वहां से बस पर बैठ सैकविली का आकाशवाणी-केन्द्र देखा, जो कैनेडा की आकाशवाणी का सबसे बड़ा शार्टवेव केन्द्र है और जहां से अमेरिका, यूरोप, अफ्रीका आदि देशों को चौदह भाषाओं में ब्राडकास्ट किया जाता है।

भोजन के बाद बस से ही हम काकटन स्टेशन पर पहुंचे और करीब ४।। बजे वहां से रवाना हो ६।। बजे सेंट जान नगर पहुंच गए।

कुछ देर बाद हैलीफैक्स गई हुई हमारी टुकड़ी भी यहां पहुंच गई। रात को इसी होटल में सेंट जान नगर के मेयर द्वारा हमें भोज दिया गया।

हमारी जो टुकड़ी हैलीफैक्स गई थी वह सेंट जान से ता० ५ की ही रात को, रात के भोजन के बाद, फ्रेडरिक्शन नामक नगर को चली गई, पर हमारी टुकड़ी रात को सेंट जान नगर में ही ठहरी।

अधिक थी।

साढे पाच बजे हम होटल लौटे और सन्ध्या के भोजन के बाद स्टेशन चल दिए जहां से हमारी स्पेशल ट्रेन साढे आठ बजे रात को ओटावा रवाना होती थी।

ता० ३० अगस्त की रात को हमने इस झीलों वाले देश मे पैर रखा था। इस एक सप्ताह में हम इस देश के ओंटारियो, क्यूबेक और प्रिंस एडवर्ड आइलैंड इन तीन प्रान्तो मे घूमे। इस यात्रा मे हमने इस हरे-भरे देश के कितने नगर, कितने कस्बे, कितनी चीजें, कितना जीवन देखा!

ओटावा पहुचते ही सबसे पहले मेरा ध्यान जिन दो वस्तुओ ने आकर्षित किया उनमें पहली थी यह होटल जिसमें ओटावा मे हमारे ठहरने की व्यवस्था की गई थी। इस होटल का नाम था शेट्र लारिएट। होटल की विशालता, भव्यता, सफाई आदि चीजें तो दर्शनीय थी ही, इस दौरे मे हम जितने होटलो मे ठहरे उन सबसे इन सभी बातों मे यह होटल शायद आगे था, पर सबसे बडी बात जिसपर ध्यान गया, वह थी इसहोटल का रेलवे स्टेशन से सम्बन्ध। ओटावा के मुख्य स्टेशन और इस होटल के बीच केवल एक सडक थी और इस सडक के नीचे से सुरग के रूप मे स्टेशन से होटल तक एक रास्ता बनाया था। स्टेशन से बिना किसी सडक आदि को पार किए यात्री सब बडे से बड़े सामान के इस होटल मे आ सकते थे। मालूम हुआ कि यह होटल तथा कैनेडा के सभी मुख्य स्थानो के होटल रेलवे के हैं और रेलवे के प्रबन्ध में ही चलते हैं। दूसरी बात जिसपर ध्यान पहुचा, वह थी तारो की दर। यहा के तारो मे जहा तार भेजा जाता है उस स्थान का पता चाहे कितना ही बडा क्यो न हो, उस पते के शब्दों और भेजने वाले के नाम के दाम नहीं लगते।

आगे चलकर हमने अमेरिका मे भी इसी प्रकार के होटल देखे।

यथासम्भव हर प्रतिनिधि-मण्डल की ओर से एक-एक वक्ता बोले। इन्हें पन्द्रह मिनट का समय मिले। अन्त में जिन सज्जन ने प्रातःकाल उद्घाटन-भाषण दिया हो उनके संक्षिप्त भाषण के पश्चात् उस दिन की कार्रवाई समाप्त हो। इन परिषदों में केवल विचार-विनिमय होता है, कोई प्रस्ताव आदि नहीं।

पहले दिन आबादी के तबादले पर बहस निश्चित की गई थी। प्रातःकाल का उद्घाटन-भाषण न्यूज़ीलैण्ड के प्रतिनिधि-मण्डल के नेता श्री विलफ्रेड हेनरी फौरचून देने वाले थे और तीसरे पहर का उद्घाटन-भाषण भारत के श्री मावलकर जी। आबादी के तबादले पर ही न्यूज़ीलैण्ड में मैं बोला था। वर्षों से मेरा यह विषय रहा था अतः आज भारतीय प्रतिनिधि-मण्डल की ओर से मैं भी बोलने वाला था।

श्री फौरचून ने कहा कि ब्रिटेन का पुनर्निर्माण होना चाहिए। उन्होंने अपने सारे भाषण में न्यूज़ीलैण्ड की सफलताओं के ही पुल बांधे।

इसके बाद दोपहर के भोजन के लिए उठने तक दो भाषण और हुए और भोजनोपरान्त श्री मावलकर का उद्घाटन-भाषण हुआ।

श्री मावलकर का भाषण बड़े ऊंचे स्तर पर भारतीय परम्परा के सर्वथा अनुरूप हुआ।

श्री मावलकर के पश्चात् श्री होल्ट बोले। श्री होल्ट ने न्यूज़ीलैण्ड-परिषद् की इस विषय की कार्यवाही का उद्घाटन किया था। परन्तु उनके वहां के और यहां के भाषण में काफी अन्तर था। न्यूज़ीलैंड में श्री होल्ट के भाषण के पश्चात् तीसरे पहर का उद्घाटन भाषण भारतीय प्रतिनिधि-मण्डल के नेता की हैसियत से मैंने दिया था और मेरे उस भाषण का श्री होल्ट तथा अन्यों पर ऐसा प्रभाव-सा पड़ा था कि कार्यवाही के अन्त में श्री होल्ट ने जो कुछ कहा था उस सिलसिले में वे निम्नलिखित बातें भी कह गए थे—

"सबसे पहले मैं भारत के सेठ गोविन्ददास के भाषण की चर्चा

ताया कि जहाँ प्रथम प्रकार के देशों में पचीस पीछे तीन सौ से पाँच सौ आदमी रहते हैं, वहाँ दूसरे प्रकार के देशों में चार से पाँच। यदि अधिक आबादी वाले देशों को अपनी आबादी अन्य देशों में भेजने की आवश्यकता है तो कम आबादी वाले देशों को अधिक आबादी की, क्योंकि बिना अधिक आबादी के न तो इन देशों के नैसर्गिक धन का उपयोग हो सकता है और न इन देशों की सुरक्षा। और अन्त में मैंने यह कहा कि जब तक जाति-भेद और रंग-भेद का अन्त न होगा तब तक यह प्रश्न हल नहीं हो सकता, जो प्रश्न मैं संसार के इस काल के सब प्रश्नों से अधिक महत्त्व का मानता हूँ। जाति-भेद और रंग-भेद का कितना कुत्सित रूप हो गया है, इसके लिए मैंने दक्षिण अफ्रीका का दृष्टान्त दिया और कहा कि वहाँ के जो लोग इस भेद को मिटाने के लिए शांतिपूर्ण सत्याग्रह कर रहे हैं उन्हें बेंत और कोड़ों की सजा दी जा रही है। इस बर्बर सजा की व्यवस्था की है अपने को सभ्य और सुसंस्कृत कहने वाले श्वेतों ने। बर्बर शब्द मेरे मुँह से निकलते ही दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधियों के क्रोध का कोई पार ही न रहा। न्यूजीलैण्ड के समान इस बार यद्यपि किसीने 'वाक आउट' का प्रदर्शन नहीं किया, पर इसके बाद जो भाषण दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधि का हुआ उसमें ऐसी कोई बात बाकी नहीं रही जो उसने भारत के विरुद्ध न कही हो। अन्त में यहाँ तक कह डाला कि अस्पृश्यता मानने वाले भारतीयों को अन्य लोगों के लिए 'बर्बर' शब्द का उपयोग न करना चाहिए। मैंने तत्काल बीच में बोलकर कहा कि 'अस्पृश्यता' को हम अपने संविधान में जुर्म बना चुके हैं। आज की बहस का अन्त हुआ भारतीय प्रतिनिधि-मण्डल की एक सदस्या श्रीमती अनसूयाबाई काले के भाषण से। सुन्दर भाषण था उनका भी।

मुझे आज एक नयी बात जान पड़ी। पश्चिमी सभ्यता के अनुयायी अपने को सबसे अधिक सभ्य और सुसंस्कृत मानते हैं। पश्चिमी सभ्यता का जितना फैलाव हुआ है उतना शायद किसी भी सभ्यता

ताया कि जहां प्रथम प्रकार के देशों में वर्गमील पीछे तीन सौ से पांच सौ आदमी रहते हैं, वहां दूसरे प्रकार के देशों में चार से आठ। यदि अधिक आबादी वाले देशों को अपनी आबादी अन्य देशों में भेजने की आवश्यकता है तो कम आबादी वाले देशों को अधिक आबादी की, क्योंकि बिना अधिक आबादी के न तो इन देशों के नैसर्गिक धन का उपयोग हो सकता है और न इन देशों की सुरक्षा। और अन्त में मैंने यह कहा कि जब तक जाति-भेद और रंग-भेद का अन्त न होगा तब तक यह प्रश्न हल नहीं हो सकता, जो प्रश्न मैं संसार के इस काल के सब प्रश्नों से अधिक महत्त्व का मानता हूं। जाति-भेद और रंग-भेद का कितना कुत्सित रूप हो गया है, इसके लिए मैंने दक्षिण अफ्रीका का दृष्टान्त दिया और कहा कि वहां के जो लोग इस भेद को मिटाने के लिए शांतिपूर्ण सत्याग्रह कर रहे हैं उन्हें बेंत और कोड़ों की सजा दी जा रही है। इस बर्बर सजा की व्यवस्था की है अपने को सभ्य और सुसंस्कृत कहने वाले श्वेतों ने। बर्बर शब्द मेरे मुंह से निकलते ही दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधियों के क्रोध का कोई पार ही न रहा। न्यूजीलैण्ड के समान इस बार यद्यपि किसीने 'वाक आउट' का प्रदर्शन नहीं किया, पर इसके बाद जो भाषण दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधि का हुआ उसमें ऐसी कोई बात बाकी नहीं रही जो उसने भारत के विरुद्ध न कही हो। अन्त में यहां तक कह डाला कि अस्पृश्यता मानने वाले भारतीयों को अन्य लोगों के लिए 'बर्बर' शब्द का उपयोग न करना चाहिए। मैंने तत्काल बीच में बोलकर कहा कि 'अस्पृश्यता' को हम अपने संविधान' में जुर्म बना चुके हैं। आज की बहस का अन्त हुआ भारतीय प्रतिनिधि-मण्डल की एक सदस्या श्रीमती अनसूयाबाई काले के भाषण से। सुन्दर भाषण था उनका भी।

मुझे आज एक नयी बात जान पड़ी। पश्चिमी सभ्यता के अनुयायी अपने को सबसे अधिक सभ्य और सुसंस्कृत मानते हैं। पश्चिमी सभ्यता का जितना फैलाव हुआ है उतना शायद किसी भी सभ्यता

बताया कि जहां प्रथम प्रकार के देशो मे वर्गमील पीछे तीन सौ से पांच सौ आदमी रहते हैं, वहा दूसरे प्रकार के देशो मे चार से आठ। यदि अधिक आबादी वाले देशो को अपनी आबादी अन्य देशो मे भेजने की आवश्यकता है तो कम आबादी वाले देशो को अधिक आबादी की, क्योकि बिना अधिक आबादी के न तो इन देशो के नैसर्गिक धन का उपयोग हो सकता है और न इन देशो की सुरक्षा। और अन्त मे मैंने यह कहा कि जब तक जाति-भेद और रंग-भेद का अन्त न होगा तब तक यह प्रश्न हल नही हो सकता, जो प्रश्न मैं ससार के इस काल के सब प्रश्नो से अधिक महत्व का मानता हू। जाति-भेद और रंग-भेद का कितना कुत्सित रूप हो गया है, इसके लिए मैंने दक्षिण अफ्रीका का दृष्टान्त दिया और कहा कि वहा के जो लोग इस भेद को मिटाने के लिए शातिपूर्ण सत्याग्रह कर रहे हैं उन्हें बेंत और कोडो की सजा दी जा रही है। इस बर्बर सजा की व्यवस्था की है अपने को सभ्य और सुसस्कृत कहने वाले श्वेतो ने। बर्बर शब्द मेरे मुह से निकलते ही दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधियो के क्रोध का कोई पार हो न रहा। न्यूजीलैण्ड के समान इस बार यद्यपि किसीने 'वाक आउट' का प्रदर्शन नही किया, पर इसके बाद जो भाषण दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधि का हुआ उसमे ऐसी कोई बात बाकी नही रही जो उसने भारत के विरुद्ध न कही हो। अन्त मे यहा तक कह डाला कि अस्पृश्यता मानने वाले भारतीयो को अन्य लोगो के लिए 'बर्बर' शब्द का उपयोग न करना चाहिए। मैंने तत्काल बीच मे बोलकर कहा कि 'अस्पृश्यता' को हम अपने सविधान मे जुर्म बना चुके हैं। आज की बहस का अन्त हुआ भारतीय प्रतिनिधि-मण्डल की एक सदस्या श्रीमती अनसूयाबाई काले के भाषण से। सुन्दर भाषण था उनका भी।

मुझे आज एक नयी बात जान पडी। पश्चिमी सभ्यता के अनुयायी अपने को सबसे अधिक सभ्य और सुसस्कृत मानते हैं। पश्चिमी सभ्यता का जितना फैलाव हुआ है उतना शायद किसी भी सभ्यता

जैसा अब तक हमने देखा था। खूब हरा-भरा और से परिपूर्ण सुन्दर देश। मीलों तक आबादी और खेती अथवा कल-कारखानों का नामो-निशान नहीं। कहीं की भी बस्ती घनी नहीं। साफ-सुथरे, सुन्दर और भव्य नगर। अच्छी इमारतें, चौड़ी सड़कें। जनता खूब सम्पन्न, पढ़ी-लिखी, सुखी और सन्तुष्ट, गरीबी का पता नहीं।

टोरंटो का अजायबघर हमारे अब तक के देखे हुए बड़े से बड़े अजायबघरों में एक था और उसके कुछ संग्रह तो ऐसे थे जैसे हमने अब तक कहीं के अजायबघर में न देखे थे।

निश्चित कार्यक्रम के अनुसार हम ट्रेन से ता० २० सितम्बर के तड़के न्यूयार्क पहुंच गए।

अमेरिका

अमेरिका आज सारे संसार के देशों में अग्रगण्य है। जहां कहीं भी संसार के देशों, संसार की जनता, संसार की समस्याओं पर विचार होता है, मनन होता है, चर्चा होती है, वहां संसार के दो देश सबसे पहले और प्रधान रूप से आगे आ जाते हैं—अमेरिका और रूस। दोनों देशों का सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक संगठन एक-दूसरे से ठीक विपरीत है। अमेरिका है पूंजीवादी देश और रूस अपने को साम्यवादी कहता है, चाहे अभी कार्ल मार्क्स के आदर्शों के अनुसार साम्यवादी हुआ न हो और चाहे कुछ विचारकों के मतानुसार साम्यवाद के मार्ग पर चल भी न रहा हो। जो भी हो, रूस और अमेरिका एक-दूसरे से ठीक विरुद्ध दिशा के अनुगामी हैं इसमें सन्देह नहीं हो सकता। क्षेत्रफल, आधिभौतिक, नैसर्गिक साधनों और आबादी में दोनों देश समान रूप से महान हैं। इस दृष्टि से संसार के केवल दो देश और इन दोनों की समता कर सकते हैं—चीन और भारत। परन्तु चीन तथा भारत दोनों में आधि-

रतें ही न्यूयार्क में सबसे अधिक ध्यान को आकर्षित करती हैं। ारतों का न्यूयार्क वाला ढंग हम कैनेडा के मॉट्रियल और टोरेंटो में देख चुके थे, पर मॉट्रियल और टोरेंटो की इमारतों से यहां की मारतें कहीं अधिक ऊंची थीं। इनकी ऊंचाई के कारण इन्हें अंग्रेजी-ाषा में एक नया नाम दिया गया है—स्काई स्क्रेपर्स। पर इससे यह समझा जाए कि न्यूयार्क में नीचे मकान हैं ही नहीं, वरन् सब मिलाकर तो शायद नीचे मकान ही अधिक हैं, कम से कम बहुत अधिक ऊंचे तो गिनती के ही हैं। बहुत ऊंची इमारतें इनके अनुपात से बहुत अधिक नीची इमारतों से घिरे रहने के कारण मीनारों के सदृश दिखती हैं, इसके कारण चाहे बहुत ऊंची इमारतों की भव्यता बढ़ गई हो, पर बहुत ऊंची और बहुत नीची इमारतों के इस सम्मिश्रण से नगर की शोभा मेरे मतानुसार कम हो गई है। यद्यपि कहीं-कहीं इस प्रकार का मिश्रण सुषमा लाता है, वस्तु-विशेष में विशिष्ट रूप से, ा कई जगह, कम से कम जहां वस्तुएं सामूहिक रूप से दृष्टिगोचर होती हैं वहां, यह मिश्रण सुषमा में समतान रह सकने के कारण दृष्टि में किरकिरापन पैदा कर देता है। मेरे मन से न्यूयार्क में इस मिश्रण की वजह से ऊंची इमारतों को जो मीनार का-सा रूप मिला है उसके कारण सौन्दर्य की कमी हुई है। फिर भी इतनी ऊंची इमारतें दुनिया के किसी अन्य स्थान में नहीं और ये इमारतें ही न्यूयार्क की सबसे बड़ी विशेषता हैं।

इमारतों के बाद जो दूसरी चीज इस नगर में ध्यान को आकर्षित करती है वह है यहां की सड़कें। चौड़ी और लम्बी सड़कों को यहां एवेन्यू कहते हैं और इन एवेन्युओं को इन एवेन्युओं से कम लम्बी और कम चौड़ी सड़कें जो समानान्तर से काटती हुई चलती हैं उन्हें कहते हैं स्ट्रीट। सारा न्यूयार्क नगर इन एवेन्युओं और स्ट्रीटों का समानान्तर की चौकड़ी वाला जाल-सा है। चौकड़ियों के जाल के बीच में इमारतें हैं और चौकड़ियों के जाल की डोरियां हैं ये एवेन्यू तथा स्ट्रीट। कैसा व्यावहारिक ताना-बाना-सा बुना हुआ है!

है एक वर्ण, एक संस्कृति तथा एकभाषी अंग्रेज और अमेरिकन जाति में। और यह अन्तर उनकी एक भाषा रहते हुए भी उस भाषा में भी आ गया है। अंग्रेज कभी अतिशयोक्तियों का उपयोग नही करता और अमेरिकन बिना अतिशयोक्तियों के बोल ही नही सकता। और भाषा के साथ ही उनकी वेश-भूषा भी इंग्लैण्ड ही नहीं, पुराने यूरोपीय देशों से भी भिन्न है। यूरोपीय ढग के कपडे पहनते हुए भी उनकी टाई प्रायः बड़ी चमकदार रहती है। रग-बिरगी बुशशर्ट एक नई वस्तु निकली है, अरे, कोट तक कभी कभी दो रग का होता है, आस्तीनें एक रंग की और आगा-सामना दूसरे रग का।

न्यूयार्क, वहा की इमारतें, वहा की सडकें, वहा की सवारिया, वहा की रोशनी, वहा के मानव, उनकी चहल-पहल, उनका धन, उनका वैभव, सारा दृश्य देखकर आदमी दग-सा रह जाता है, उसकी दृष्टि चकाचौंध-सी हो जाती है, और यदि वह इस चित्र के एक पहलू की ओर ही दृष्टिपात करे तो उसे यह नगर पृथ्वी का स्वर्ग दिखाई देता है, जैसा मेरे कुछ मित्रो ने मुझे कहा था। पर किसी भी चित्र का एक रुख ही नही होता, उसके अन्य रुख भी होते हैं और कोई भी अवलोकन तब तक पूर्ण नही होता, जब तक सब रुखों को देखने का यत्न न किया जाए। न्यूयार्क में अपनी अद्भुत विशेषताए हैं इसमें सन्देह नहीं, पर इन विशेषताओं के साथ ही उसकी कुछ भयानक कमिया भी हैं। न्यूयार्क के जीवन को जो वस्तुए चलाती हैं वे एक-दूसरे पर इतनी अधिक दूर तक अवलबित हैं कि यदि किसी एक छोटी-सी बात मे व्यतिक्रम हो जाए तो वहां के जीवन का सारा प्रवाह एक क्षण में स्थगित हो जाता है। वहां इस प्रकार की कुछ घटनाए हुई भी हैं। एक बार वहा के पानी का एक बड़ा नल फट गया। इसके कारण जिस एयर कडीशन प्लाण्ट से नगर के मकान ठडे रहते थे उसका काम रुक गया। गरमी का मौसम था, अत नतीजा यह निकला कि दफ्तरो मे काम होना कठिन हो गया, क्योंकि मकान इस तरह के बनाए गए हैं कि गर्मियों में बिना एयर कंडीशनिंग मशीनरी चले उनमें बैठकर काम करना असम्भव

भाषणों को, विशेषकर दार्शनिक भाषणों को, सुनने के लिए क्यों इतने आतुर रहते हैं और जिस न्यूयार्क में आधिभौतिकता चरम सीमा को पहुंच चुकी है वहां आध्यात्मिकता की भी कितनी अधिक आवश्यकता है।

न्यूयार्क ऐसा वैभवशाली नगर रहते हुए भी अभी वहां मजदूरों की चाल (स्लम्स) मौजूद हैं। हमने इन्हें भी देखा। यद्यपि इन चालों का हमारे देश की चालों से मुकाबला नहीं हो सकता, परन्तु चाल तो चाल ही हैं। सुना गया, इन चालों में ऐसे लोग रहते हैं जो बड़े आलसी हैं और जो अपनी कमाई का अधिकांश भाग शराबखोरी तथा अन्य शरारत-भरे कुकर्मों में खर्च कर देते हैं। हमने इन चालों में रहने वालों को भी देखा और उन्हें न्यूयार्क की अन्य आबादी से कुछ पृथक रूप का अवश्य पाया—बढ़ी हुई हजामतें, मैले-कुचैले कपड़े, नशे में चूर सूरतें और सारी चेष्टाओं में आलस्य के लक्षण। इन चालों के सम्बन्ध में हम लोगों ने और भी कुछ जानकारी प्राप्त करने की चेष्टा की, क्योंकि हमें ये स्थल अमेरिकन सभ्यता के लिए एक कलंक-स्वरूप प्रतीत हुए। जिस देश में न्यूनतम वेतन निश्चित हो और वह इतना काफी हो कि लोग साधारणतया सम्मानपूर्वक और बहुत आराम से रह सकें, जहां बेकारी कम से कम इन दिनों में कोई बहुत बड़ी समस्या न हो, वहां इन चालों और इन विचित्र तरह से रहने वालों की क्या आवश्यकता है और वे क्यों हैं? अमेरिका की जीवन-व्यवस्था स्वतन्त्र रूप से बिना किसी रोकथाम के कार्य होने देने और उद्योगों पर कम से कम नियन्त्रण पर आधारित है। यद्यपि समय-समय पर कई कानून ऐसे बनाए गए हैं जिनसे थोड़ा-बहुत नियन्त्रण रहता है जैसे 'एण्टीट्रस्ट' कानून।

सब मिलकर भौतिक दृष्टि से न्यूयार्क का जीवन अत्यन्त सुखी जीवन कहा जा सकता है। गरीबी, अशिक्षा, बीमारी आदि का वहां समूल नाश हो गया है, यह तो नहीं कहा जा सकता, पर ये सब भौतिक दुःख वहां न्यून से न्यून हैं। कुछ लोग बहुत अमीर हैं, इतने

मूर्ति देखी।

युक्त राष्ट्र का भवन

संयुक्त राष्ट्र के भवन के निर्माण मे अनेक देशो के आर्किटेक्टो ने म्मिलित प्रयत्न किया। जिस लगन और उत्साह से इस इमारत का र्माण हुआ वह संयुक्त राष्ट्र की सफलता का द्योतक भी है। यह मारत ५४४ फुट ऊंची और २८७ फुट चौडी है। अमेरिका के सबसे ! नगर की अन्य इमारतों से इसकी वास्तुकला कहीं भिन्न है। इस वन के निर्माण मे विभिन्न देशो के बारह आर्किटेक्ट एक-दूसरे के हयोग से काम करते रहे थे।

ठीक ही कहा गया है कि यह भवन वह कारखाना है जहां ससार : भावी रूप की रचना होती है।

एम्पायर स्टेट विल्डिंग

ससार की सबसे ऊंची एक सौ दो मंजिल की एम्पायर स्टेट इमारत है। इस इमारत की ऊंचाई, १,४७२ फुट है। इसकी ८६वी और १०२वीं मंजिलो मे वेधशालाए बनी हुई हैं। सडक से इस इमारत को देखने पर दर्शक को एक तरह का रोमाच हो आता है, लेकिन वेधशालाओ से नगर को देखने का अनुभव ऐसा अपूर्व होता है कि ससार मे अन्यत्र कही भी ऐसा अनुभव होने की सम्भावना नहीं। यह इमारत १९३१ मे बनकर तैयार हुई। बीसवीं शताब्दी का यह एक आश्चर्य है और मनुष्य को इंजीनियरी कुशलता का द्योतक है।

इस इमारत मे दर्शको को ऊपर ले जाने वाला एक ऐसा यन्त्र लगा हुआ है जो ६० सेकण्ड के भीतर मनुष्य को १,००० फुट की ऊंचाई पर पहुचा देता है। ८६ वीं मंजिल मे वेधशाला पर पहुंचने के बाद, जो कि सडक से १,०५० फुट की ऊंचाई पर बनी हुई है, दर्शक को चारों ओर तीस-तीस चालीस-चालीस मील तक ऐसे प्रदेश का दर्शन होता है जिसमे लगभग डेढ करोड व्यक्ति बसे हुए हैं। ८६ वी मंजिल से दर्शकों

राक फेलर सेण्टर

राक फेलर सेंटर के १२ गगनचुम्बी प्रासादों से एक पूरा नगर बन गया है। यह नगर इस प्रकार विभक्त है—कार्यालय खण्ड, प्रदर्शनी खण्ड और रेडियो एवं मनोरंजन खण्ड। राक फेलर सेंटर के पश्चिमी भाग में रेडियो-व्यवस्था का केन्द्रीकरण है। वहां आर० के० ओ० की इमारत है, रेडियो-सिटी का संगीत-भवन है, थियेटर-मंच है और नेशनल ब्राडकास्टिंग कम्पनी की इमारत, आर० सी० ए० इमारत का विस्तार खण्ड है। बहुधा रेडियो-सिटी शब्द का प्रयोग समूचे राक फेलर सेंटर के लिए किया जाता है, पर यह भूल है। रेडियो-सिटी राक फेलर सेंटर के पश्चिमी खण्ड को ही कहते हैं।

राक फेलर सेंटर की वास्तुकला अत्यन्त सराहनीय है। उसमें भित्तिचित्र, मूर्तिकला और धातुकला आदि का मिश्रण है। आर० सी० ए० अर्थात् रेडियो कार्पोरेशन आफ अमेरिका की इमारत भी बड़ी आकर्षक है।

यहां पर राक फेलर फाउण्डेशन की भी कुछ चर्चा करना अनुपयुक्त न होगा। राक फेलर फाउण्डेशन की स्थापना १९१३ में हुई थी। इसका उद्देश्य संसार में मानव-कल्याण को प्रोत्साहन देना है। पिछले चालीस वर्ष के समय में इस संस्था ने साढ़े सैंतालीस करोड़ डालर के लगभग की सहायताएं और अनुदान दिए हैं। यह संस्था भौतिक, बौद्धिक, कलात्मक, आध्यात्मिक और आरोग्य-सम्बन्धी कार्यों के लिए सहायता देती है। इस फाउण्डेशन की स्थापना से पहले इसके संस्थापक जान राक फेलर ने तीन लोक-कार्य आरम्भ किए थे। इनके अनुभव से उनको यह आश्वासन हो गया कि समाज-कल्याण के लिए धार्मिक संस्थाओं की स्थापना आवश्यक है, जो सत्कार्य के लिए अनुदान दे सकें। प्रारम्भ में राक फेलर फाउण्डेशन की स्थापना २४ करोड़ १० लाख डालर से हुई थी।

न दिखी थी। अंग्रेजी नाटक मैंने हिमले में भी देखे थे और उनमें से कई मुझे बहुत पसन्द आए थे। मुझे ऐसा जान पड़ा जैसे अंग्रेजी भाषा के रगमच का पतन हो गया है, पर जब मैंने तीसरा नाटक 'साउथ पेसेफिक' देखा तब मैंने अपनी यह राय बदल दी। 'साउथ पेसेफिक' नाटक के सदृश नाटक मैंने इसके पहले कभी न देखा था। यह नाटक एक सर्वांग सुन्दर नाटक था, एक नही अनेक विशेषताओ से भरा हुआ। इसके दृश्यों की महानता और भव्यता का मिलान केवल पेरिस के नाटको मे हो सकता था। फिर यदि पेरिस के उन नाटको के दृश्य इससे भी अच्छे थे तो उनमें जो नाटकीय कथा का अभाव था उस अभाव की इसमे पूर्ति हो गई थी। सुन्दर नाटकीय कथा थी, बड़ा अच्छा चरित्र-चित्रण, साथ ही उत्कृष्ट अभिनय, ऊंचे दर्जे के गान और एक गान गाने वाली महिला के साथ एक बालिका के मूक अभिनय ने तो कला के इस रुख को पराकाष्ठा को पहुंचा दिया था। सारे नाटक में किसी प्रकार की अश्लीलता का नामोनिशान न था। रस का भी नाटक मे अच्छा परिपाक हुआ था। पर नाटक की कथा जिस प्रकार चली थी उसे देखते हुए नाटक को दुखान्त होना चाहिए था। ऐसे नाटक को सुखान्त करने के प्रयत्न को मैं तो आधुनिक अमेरिकनिज्म कहूगा। इस प्रयत्न ने नाटक का स्वाभाविक अन्त नही होने दिया। पर जो कुछ हो, मैंने 'साउथ पेसेफिक' एक ऐसा नाटक देखा जिसके दृश्यो, उनके परिवर्तन के ढग और उन दृश्यो के प्रकाश की व्यवस्था अनुकरणीय थी।

सार्वजनिक भाषण

सार्वजनिक भाषण न्यूयार्क मे मेरे दो हुए—एक कोलम्बिया यूनिवर्सिटी के इटर नेशनल हाउस मे भारतीय सस्कृति पर और दूसरा गांधी जयन्ती के दिन गांधी जी पर कम्युनिटी चर्च मे। लन्दन के सदृश यहा भी भाषण के अन्त मे प्रश्न पूछने की प्रथा है। पहले भाषण के पश्चात् प्रश्न भी पूछे गए। दोनो भाषण और पहले भाषण के पश्चात्

(१) सस्था के सभी सदस्य समान हैं।

(२) सयुक्त राष्ट्र के उद्देश्य-पत्र के अधीन राष्ट्र अपने कर्तव्य ईमान-दारी से पूरे करें।

(३) अन्तर्राष्ट्रीय झगड़े शान्ति के साथ निपटाए जाए।

(४) सयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों के विरुद्ध न तो किसी तरह के बल-प्रयोग की धमकी दी जाए और न बल-प्रयोग किया ही जाए।

(५) उद्देश्य-पत्र के अधीन सयुक्त राष्ट्र जो कार्यवाही करे सदस्य-देश उसमे भरसक सहायता दें।

(६) सयुक्त राष्ट्र किसी भी राज्य के घरेलू मामले मे दखल न दे, किन्तु जहा शान्ति को खतरा हो वहा यह व्यवस्था स्वीकार नही की जाएगी।

सयुक्त राष्ट्र के लिए पूजी सभी राष्ट्र जुटाते हैं। इस सम्बन्ध में निर्णय जनरल असेम्बली प्रति वर्ष करती है।

सयुक्त राष्ट्र के सदस्य-देशो के नाम इस प्रकार हैं—

अफगानिस्तान, अर्जेटाइना, आस्ट्रेलिया, बेल्जियम, बोलिविया, ब्राजील, वाइलोरुस, वर्मा, कैनेडा, चाइल, चाइना, कोलम्बिया, कोस्टारिका, क्यूबा, चेकोस्लोवाकिया, डेनमार्क, डोमीनिकन रिपब्लिक, इक्वेडोर, मिस्र, इथियोपिया, फ्रांस, यूनान, ग्वाटेमाला, हैटी, होंडुरास, आइसलैंड, इसरायल, लेबनान, भारत, ईरान, ईराक, लाइबीरिया, लक्सेमबर्ग, मेक्सिको, नीदरलैंड्स, न्यूजीलैण्ड, निकारगुआ, नार्वे, पाकिस्तान, पनामा, परगुऐस्ट, फिलीपीन्स, पोलैण्ड, सॅलवेडोर, सउदी अरब, स्वीडन, सीरिया, थाइलैण्ड, टर्की, यूक्रेन, दक्षिण अफ्रीका यूनियन, रूस, ब्रिटेन, अफ्रीका, उरुगुए, वेनेजुएला, और यूगोस्लाविया।

सयुक्त राष्ट्र का झडा नीला है, जिसपर सफेद ग्लोब-चित्र अकित रहता है। इस चित्र मे उत्तर ध्रुव दिखाई देता है और ग्लोब के दोनों ओर पत्तियों की दो बाहें-सी घिरी रहती हैं।

सयुक्त राष्ट्र के प्रमुख अंग इस प्रकार हैं—

(१) जनरल असेम्बली अर्थात् महासभा,

(२) सिक्योरिटी कौंसिल अर्थात् सुरक्षा परिषद्,

(३) इकोनोमिक एंड सोशल कौंसिल अर्थात् आर्थिक और साम
परिषद्,

(४) ट्रस्टीशिप कौंसिल अर्थात् संरक्षा परिषद्,

(५) इटरनेशनल कोर्ट आफ जस्टिस अर्थात् अन्तर्राष्ट्रीय न्याय
और

(६) संयुक्त राष्ट्र का प्रधान कार्यालय जो न्यूयार्क में है।

संयुक्त राष्ट्र की महासभा संयुक्त राष्ट्र की प्रमुख संस्था है। इ
सभी सदस्य देशों के प्रतिनिधि भाग लेते हैं, किसी भी देश के अ
से अधिक प्रतिनिधियों की संख्या ५ हो सकती है, लेकिन प्रत्येक दे
को एक ही वोट प्राप्त है। महासभा की वर्ष में एक बार यानी नियम
में बैठक होती है। इसके अतिरिक्त उसका विशेष अधिवेशन
बुलाया जा सकता है। महत्त्वपूर्ण मामलों पर निर्णय दो-तिहाई बहुम
से होते हैं। साधारण महत्त्व के मामलों पर केवल सामान्य बहुमत है
यथेष्ट होता है।

सुरक्षा परिषद् के ग्यारह सदस्य हैं, जिनमें से ५ स्थायी हैं और
शेष ६ महासभा द्वारा नियुक्त किए जाते हैं। इसका काम शान्ति और
सुरक्षा बनाए रखना है। परिषद् ऐसे सभी मामलों की जाच करती
है, जिससे अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष होने की आशका हो। सुरक्षा परिषद्
का अधिवेशन सारे वर्ष रहता है और दो सप्ताह में इसकी एक बैठक
हो जाती है। सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्य-देशों के नाम इस
प्रकार हैं—चीन, फ्रांस, ब्रिटेन, अमेरिका, रूस।

आर्थिक और सामाजिक परिषद् के अठारह सदस्य हैं। इसका
उद्देश्य है अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक और सामाजिक समस्याओं को
सुलझाना।

सुरक्षा परिषद् ने उन प्रदेशों के विकास का काम अपने ऊपर ले
रखा है जो पहले राष्ट्रसंघ अर्थात् लीग आफ नेशन्स के संरक्षण में

: अथवा द्वितीय महायुद्ध के उपरान्त शत्रुदेशों से प्राप्त किए
गए।

अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय हेग में है। इसमें पन्द्रह जज होते हैं, जिन्हें महासभा और सुरक्षा परिषद् में स्वतन्त्र मतदान द्वारा चुना जाता है।

संयुक्त राष्ट्र की विशिष्ट संस्थाएं इस प्रकार हैं—

(१) अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संस्था,
(२) खाद्य और कृषि संस्था,
(३) शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति संस्था,
(४) अन्तर्राष्ट्रीय विमान संचालन संस्था,
(५) विश्व बैंक,
(६) अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष,
(७) विश्व स्वास्थ्य संस्था,
(८) अन्तर्राष्ट्रीय डाक संघ,
(९) अन्तर्राष्ट्रीय सुदूर संचार संघ,
(१०) अन्तर्राष्ट्रीय शरणार्थी संस्था,
(११) विश्व वेधशाला,
(१२) अन्तर राज्य नौ-परिवहन परामर्श संस्था और
(१३) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार संस्था।

न्यूयार्क अमेरिकन पूंजी का सबसे बड़ा केन्द्र है। अमेरिका के सबसे प्रसिद्ध बैंक, उद्योग और व्यापार के अधिकांश कार्यालय न्यूयार्क के वाल स्ट्रीट और उसके आसपास के हिस्से में स्थित हैं।

न्यूयार्क में जिन लोगों से भेंट हुई उनमें कई तरह के लोग थे, जिनका जीवन भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से सम्बद्ध था। अमेरिकन पूंजी के प्रतिनिधियों से भेंट करने का मेरा कोई इरादा नहीं था, किन्तु जगमोहनदास को अमेरिकन पूंजी के भारत में उपयोग से कुछ दिल-चस्पी थी और इसीलिए उन्होंने प्रसिद्ध अमेरिकन बैंकों के कुछ प्रति-निधियों से मुलाकात की। वाल स्ट्रीट पर ही अधिकांश बैंकों के

कार्यालय है। अत्यधिक ऊंची और भव्य इमारतों में से किर
कुछ इमारतें तो पचास से भी अधिक मंजिलों की हैं। ...
एक छोटा-मोटा मुहल्ला मालूम होती है। उसमें नीचे की
कुछ दुकानें भी रहती हैं, जिनमें आवश्यकता का ...
हैं। अनेकों लिफ्ट रहती हैं। कुछ विश्राम करने की
टेलीफोन, टायलेट-रूम इत्यादि सभी की व्यवस्था रहती है। इन
रतों में अमेरिका के व्यापारिक और औद्योगिक जीवन का नुक्त...
होता है। इन इमारतों के ऊपर कंक्रीटखण्ड भव्य और सजे हुए क...
में अमेरिकन जीवन के अधिकांश उत्पादन और व्यापारिक कार्यों ...
योजना बनती है और उसे कार्य रूप में परिणत करने के प्रयत्न ...
निरीक्षण होता है। यहां जो लोग कार्य करते हैं अधिकांशतः उन...
भावनाओं का अभाव रहता है, यदि अभाव न भी रहता हो तो ...
से कम भावनाएं उनके कार्यों को प्रभावित नहीं करतीं। अब ...
पूंजी लगाने का प्रश्न आएगा तो उसे यहां केवल उसकी लाभ-हा...
की दृष्टि से देखा जाएगा। सर्वप्रथम तो उसे संयुक्त राज्य में लग...
का प्रयत्न होगा फिर यदि किन्हीं कारणों से संयुक्त राज्य में लगा...
सम्भव न हो तो फिर दुनिया के किसी ऐसे देश में वह लगाई जाए...
जहां से वह अधिक से अधिक कमाई कर सके। केवल इसी दृष्टिको...
से पूंजी लगाई जाती है और किसी भी दृष्टिकोण से नहीं। यहां ...
लोगों का यह विश्वास है कि संसार की आर्थिक उन्नति निजी उद्यो...
के द्वारा ही हो सकती है। निजी उद्योगों पर किसी तरह का को...
नियन्त्रण नहीं होना चाहिए। नियन्त्रण से उद्योगों की कुशलता ...
अन्तर पड़ जाता है। किसी भी उद्योग की ठीक सफलता और जन...
साधारण के लिए उसका सच्चा उपयोग तभी हो सकता है जब अनेक
उद्योगों की एक ही दिशा में होड़ हो। बिना होड़ के उद्योगों ...
... से जन-साधारण की अच्छी सेवा नहीं हो सकती। अमेरिका
का औद्योगिक जीवन इण्डस्ट्रियल रिवोल्यूशन के प्रारम्भिक सिद्धान्तों
को ... प्रधान महत्त्व देता है और उन्हींकी भित्ति पर

आधारित है। आडम स्मिथ ने जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन 'वेल्थ आफ नेशन्स' में किया था, अमेरिका के उच्चकोटि के उद्योगपति उन सिद्धान्तों को अब तक मानते हैं। यद्यपि पिछले कुछ वर्षों में वेलफेयर स्टेट के सिद्धान्तों को अमेरिकन व्यवस्था में कुछ थोड़ी-बहुत मान्यता मिली है, किन्तु यह मान्यता आधारभूत सिद्धान्तों के रूप में न होकर केवल जनसाधारण को कुछ सहूलियतें देने के दृष्टि-कोण से मिली है।

न्यूयार्क से रवाना होने के पहले हमने न्यूयार्क की वाशिंगटन की और रूजवेल्ट की यादगार में जाकर उन दोनों महापुरुषों को नमन किया।

तारीख ८ के तीसरे पहर से ही हमारा वाशिंगटन का कार्यक्रम प्रारम्भ हो गया।

वाशिंगटन और न्यूयार्क में उतना ही अन्तर है जितना कलकत्ता, बम्बई और नई दिल्ली में। चूंकि हम अभी १८ दिन न्यूयार्क के महान हो-हल्ले में रहकर आए थे इसलिए हमें वाशिंगटन और न्यूयार्क का यह अन्तर बहुत अधिक जान पड़ा। न्यूयार्क की अपेक्षा वाशिंगटन कितना अधिक शान्त था! फिर न्यूयार्क के गगन-चुम्बी प्रासादों के सदृश ऊंचे-ऊंचे न यहां मकान थे और न वैसी सड़कें। कुछ सुन्दर और भव्य सरकारी इमारतें, अमेरिका के राष्ट्रकर्मी नेताओं की यादगार आदि ही यहां की सबसे आकर्षक वस्तुएं हैं। वाशिंगटन का रूप और वहां का वायुमण्डल नई दिल्ली से बहुत कुछ मिलता है।

हमने वहां क्या-क्या देखा

(१) अमेरिका की धारासभा के भवन,
(२) कुछ सरकारी दफ्तर,
(३) कांग्रेस लाइब्रेरी,
(४) व्हाइट हाउस, जहां अमेरिका के राष्ट्रपति रहते हैं,

(१) वाशिंगटन का स्मारक,
(२) अब्राहम लिंकन का स्मारक,
(३) जेफर्सन का स्मारक, और
(४) एक अनजाने सैनिक की समाधि।

इनमें से कुछ का विवरण इस प्रकार है —

(१) अमेरिका के संसद् भवन का नाम कैपिटल है। इस भवन के निर्माण के सम्बन्ध में सर्वोत्तम नमूना तैयार करने वाले के लिए अमेरिकन संसद् अर्थात् कांग्रेस ने प्रतियोगिता की थी। यह प्रतियोगिता डाक्टर विलियम थोर्नटन ने जीती। १७९३ में यह इमारत बननी प्रारम्भ हो गई थी। नवम्बर १८०० को इस इमारत के उत्तरी भाग में अमेरिका की संसद की पहली सभा हुई। यह इमारत ७५१ फुट लम्बी और ३७५ फुट चौड़ी है। इमारत साढ़े तीन एकड़ जमीन पर बनी हुई है। इमारत और मैदानों का इलाका ५८.८ एकड़ है। संसद् भवन की गुम्बद लोहे व इस्पात की बनी हुई है और ऊपर से सफेदी पोत दी गई है। गुम्बद की ऊंचाई २८५ फुट है। इसके ऊपर १९ फुट ऊंची स्वतन्त्रता-देवी की मूर्ति बनी हुई है। संसद्-भवन दर्शनीय भवन है। अमेरिका की धारासभा का हाल संसार में सबसे बड़ा है। इसकी लम्बाई १३९ फुट, चौड़ाई ९३ फुट और ऊंचाई ३० फुट है। इसकी नींव ४ जुलाई, १८५१ को प्रेसीडेंट फिलमोर ने रखी थी और १६ दिसम्बर, १८५७ को यह तैयार हो गई थी। अध्यक्ष के बैठने का आसन संगमरमर का बना है। इसके एक ओर वाशिंगटन का चित्र टंगा हुआ है और दूसरी ओर लफायत का। अध्यक्ष के आसन के सामने प्रतिनिधियों की कुर्सियां हैं जिनके सामने डेस्क नहीं है। सीनेट का नया हाल १८५९ में बना। सीनेट का अध्यक्ष उपराष्ट्रपति होता है। यह हाल ११३ फुट लम्बा, ८० फुट चौड़ा और ३६ फुट ऊंचा है।

(२) [illegible] का दफ्तर—रोम के न्याय-मन्दिर की तरह [illegible] कोर्ट की इमारत है। यह इमारत कैपीटल के

मैदान के सामने ही बनी हुई है। इसे १९३४ में पूरा किया गया है। इसकी लम्बाई ३८५ फुट है। इमारत यूनानी ढंग की कला पर बनी हुई है। अमेरिका के राष्ट्रपति सीनेट की सलाह और अनुमति से सुप्रीम कोर्ट के नौ न्यायाधीश, एक मुख्य न्यायाधीश और आठ संयुक्त न्यायाधीश नियुक्त करते हैं। ये आजीवन इन पदों पर काम करते रहते हैं। अमेरिका के न्याय-विभाग की इमारत को फेडरल ब्यूरो आफ इन्वेस्टिगेशन कहा जाता है। यहां पर लोगों की अंगुलियों के निशान आदि पहचानने की और अपराधियों को ढूंढने के लिए अन्य कुशल उपायों की शिक्षा दी जाती है। यहां पर एक प्रयोग-शाला भी है। विदेश विभाग की इमारत इक्कीसवीं स्ट्रीट और वर्जीनिया एवेन्यू पर बनी हुई है। इसके निर्माण पर २३ करोड़ डालर खर्च हुआ था। पहले इसे युद्ध विभाग के अधिकारियों का निवास-स्थान बनाने के उद्देश्य से बनाया गया था। यह इमारत अमेरिका की राजनैतिक हलचल का केन्द्र है। संसार में होने वाली अनेक घटनाओं को अमेरिका के विदेश मन्त्री और उनके कर्मचारी यहां बैठे हुए प्रभावित करते हैं। अमेरिका के वित्त विभाग की इमारत चार मंजिली है। इसमें यूनानी ढंग के स्तम्भ हैं। इमारत के उत्तरी ओर एल्बर्ट गैलाटिन की मूर्ति बनी हुई है। कैपीटल और व्हाइट हाउस को छोड़ वाशिंगटन की यह सबसे प्राचीन इमारत है।

(२) अमेरिकी संसद् की लाइब्रेरी संसार के सर्वोत्तम पुस्तकालयों में से है। यहां ८५ लाख से अधिक पुस्तकें संगृहीत हैं और एक करोड़ दस लाख से अधिक हस्तलेख हैं। अमेरिकी इसे अपनी राष्ट्रीय लाइब्रेरी मानते हैं। संसद् लाइब्रेरी की स्थापना १८०० में हुई थी। १८१२ के अग्निकांड में लाइब्रेरी लगभग स्वाहा हो गई थी। १८५१ में फिर आग लगने से उस समय की कुल ५५,००० पुस्तकों में से दो-तिहाई जलकर राख हो गई। नई संसद् लाइब्रेरी की इमारत १८८६ में बननी आरम्भ हुई और १८९७ में तैयार हुई। इसके निर्माण-कार्य पर एक करोड़ अस्सी लाख डालर से अधिक खर्च हुआ।

(४) अमेरिका के राष्ट्रपति का निवास-स्थान व्हाइट हाउस अमेरिका की संसद् की इमारत के उत्तर-पश्चिम में कोई डेढ़ मील दूर है। यहां का प्राकृतिक दृश्य बड़ा मनोहर है और लगभग अस्सी प्रकार के वृक्षों से सुशोभित है। व्हाइट हाउस का डिजाइन अमेरिका के राष्ट्रपति मिलार्ड फिलमोर ने तैयार करवाया था। राष्ट्रपति-भवन की लम्बाई १७० फुट है और चौड़ाई ८५ फुट। यह एक दोमंजिली इमारत है। कहा जाता है कि इस इमारत के निर्माण का पत्थर राष्ट्रपति वाशिंगटन ने रखा था, किन्तु इतिहास के अनुसार वाशिंगटन उस समय अन्य कार्यों में व्यस्त थे। १८०० में इस भवन में निवास करने वाले सबसे पहले राष्ट्रपति थी जान एडम्स थे। उसके बाद से तो यह भवन बराबर ही अमेरिका के राष्ट्रपतियों का निवास-स्थान रहता चला आया है। अनुमान है कि इस इमारत को देखने के लिए प्रतिवर्ष लगभग दस लाख दर्शक पहुंचते हैं। इस भवन में ईस्ट रूम नामक हाल सबसे बड़ा है। उसकी लम्बाई ८७॥ फुट और चौड़ाई ४५ फुट है। छत पर पलस्तर हो रहा था। उसकी ऊंचाई ९२ फुट है। जलपान-गृह राष्ट्रपति-भवन का दूसरे नम्बर का सबसे बड़ा कमरा है। राष्ट्रपति के भेंट करने का नीला कमरा सारे व्हाइट हाउस में सबसे अधिक सुन्दर है। यह अण्डाकार बना हुआ है। यहां पर अधिकांश नीले रंग के कपड़े और पर्दे आदि का प्रयोग हुआ है। इसके अतिरिक्त वहां के हरे और लाल कमरे भी दर्शनीय हैं।

(५) वाशिंगटन-स्मारक का उच्च स्तम्भ मीलों दूर से संसद्-भवन के शिखर और लिंकन-स्मारक के बीच आकाश में उठा हुआ दिखाई देता है। इसकी ऊंचाई ५५५ फुट ५½ इंच है। यह स्मारक सफेद पत्थर का शहतीर जैसा है, जिसके ऊपरी छोर पर एल्यूमीनियम की नोक बनी है। भूमि पर इसकी दोनों भुजाएं ५५ फुट की हैं और आकार चौकोर है। दीवारों की मोटाई १५-१५ फुट है। ... ३४ फुट ५½ इंच की रह गई है और दीवार की मोटाई

देर फुट रह गई है। यद्यपि इस स्मारक को बनाने का सुझाव वाशिंगटन के जीवन-काल में ही रखा गया था, किन्तु उन्होंने कहा कि मेरे जीवन-काल में ऐसा कुछ नहीं होना चाहिए। यद्यपि इस स्मारक का निर्माण-कार्य जुलाई १८४८ में प्रारम्भ हुआ, किन्तु १८८४ से पहले इसे पूर्ण न किया जा सका। वाशिंगटन की मृत्यु १७९९ में हुई थी और अब तक उसे ८५ वर्ष हो चुके थे।

(६) लिंकन के स्मारक के साथ दुनिया के किसी भी स्मारक की तुलना नहीं की जा सकती। यह अत्यन्त सुन्दर इमारत है। इसे देखकर दर्शक आश्चर्यचकित रह जाता है। रात्रि के समय जब विद्युत् से प्रकाशित इस स्मारक की परछाईं उस लम्बे ताल में दिखलाई देती है, जो इस स्मारक और वाशिंगटन-स्मारक के बीच बना हुआ है, तो हृदय प्रफुल्लित हो उठता है। इस स्मारक में मुक्ति-दूत लिंकन की एक विशालकाय मूर्ति कुर्सी पर बैठी हुई दिखाई गई है।

(७) जेफरसन का स्मारक ३० लाख डालर की लागत पर बनकर तैयार हुआ है। जेफरसन अमेरिका के तीसरे राष्ट्रपति थे। यह स्मारक जेफरसन के प्रति अमेरिकी जनता की कृतज्ञता का प्रतीक है। जेफरसन का स्मारक एक वृत्ताकार कमरे के रूप में बना हुआ है। इसकी चौड़ाई ८२ फुट है और ऊंचाई ९६ फुट। मध्य भाग में जेफरसन की कांसे की एक मूर्ति है। कांसे की १८ फुट ऊंची यह मूर्ति ७ फुट ऊंचे एक चबूतरे पर खड़ी की गई है।

हमने यहां एक ऐसा नाटक देखा जिसके मंच के चारों ओर दर्शकों के बैठने का स्थान था और रंगमंच ऐसा था जिसमें न नेपथ्य था और न किसी प्रकार के पर्दे थे। रंगमंच पर एक किसान के घर का दृश्य दिखाया गया था, पर पर्दे पर नहीं। अमेरिका के किसान के घर का एक कोठा, दालान, उसके दरवाज़े और खिड़कियां लकड़ी के सांकेतिक टुकड़ों से दर्शाए गए थे। फर्श पर सोने का पलंग, उसपर बिस्तर, कुछ भद्दी-सी कुर्सियां, मोढ़े, टेबिल आदि रखी थीं। रसोई बनाने और खाने के कुछ बर्तन तथा गृहस्थी का अन्य कुछ सामान

भी था। सारा नाटक इसी मंच पर हुआ। जब दृश्य बदलता, तो नाट्यगार में अंधेरा हो जाता और जब फिर प्रकाश होता तब उन दृश्यों में काम करने वाले नट मंच पर अपना काम करते दिखाई पड़ते। ऐसे रंगमंच पर अमेरिका के प्रसिद्ध नाटककार श्री यू० ओ० ओ नील का एक नाटक देखा गया। श्री नील को नोबल प्राइज भी मिल चुका था और मैं उनका यह नाटक पढ़ भी चुका था। नाटक अच्छी तरह खेला गया। अभिनय अच्छा और स्वाभाविक था। पर सबसे बड़ी विशेषता थी रंगमंच की। यदि अपने देश में हमें नाट्यकला को गांवों में पहुंचाना है तो इस प्रकार के रंगमंच हमारे देश के लिए बड़े उपयोगी सिद्ध होंगे।

हार्वर्ड विश्वविद्यालय, जहां मेरा भारतीय संस्कृति पर भाषण होने वाला था, हब्शियों का विश्वविद्यालय है। इसके सभापति हब्शी हैं, इसके कार्यकर्ता भी अधिकांश हब्शी हैं और विद्यार्थियों में भी हब्शियों की ही अधिक संख्या है। हार्वर्ड विश्वविद्यालय अमेरिका में हब्शियों का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय है। इसके विद्यार्थियों की संख्या दो हजार है। यह विश्वविद्यालय मन्त्रियों के प्रशिक्षण-स्कूल के लिए प्रसिद्ध है। विश्वविद्यालय ज्यौजिया एवेन्यू के पूर्व में बना हुआ है। यहां मेरा भाषण हुआ। उपस्थिति काफी थी, फिर जो लोग श्रोताओं के रूप में आए थे उन्हें भारत और भारतीय संस्कृति से बड़ा अनुराग जान पड़ा। भाषण के पश्चात् यहां की प्रथा के अनुसार प्रश्न पूछे गए। बाद में जो सूचनाएं मुझे मिलीं उनसे मालूम हुआ कि भाषण और प्रश्नों के उत्तर वहां के लोगों को पसन्द आए। मेरा भाषण, प्रश्नों के उत्तर और यहां की सारी कार्यवाही अंग्रेजी भाषा में हुई।

आकाशवाणी की मेरी दोनों मुलाकात तो वाशिंगटन की चर्चा समय तक एक विषय बनी रहीं। इन मुलाकातों के सम्बन्ध मेरे पास भारत में भी कई पत्र आए और अभी भी आते हैं।

१८। हम सैनफ्रांसिस्को से छोड़ने वाले थे और सैनफ्रा-

सिस्को छोड़ने के पहले रास्ते में जितने अधिक से अधिक स्थान और महत्वपूर्ण वस्तुएं देख सकते थे, उन्हें देख लेना चाहते थे। कनेडा में होने वाली कामनवेल्थ पार्लियामेंटरी कान्फ्रेंस की तारीखें निश्चित होने के कारण यूरोप में तो हम एक महीने से अधिक न ठहर सकते थे, पर यहां के लिए कोई ऐसा बन्धन न था। अतः वाशिंगटन से रवाना होकर हमने नीचे लिखे स्थानों को जाना और निम्नलिखित वस्तुओं को देखना तय किया तथा इसीके अनुसार अपना कार्यक्रम बना हवाई जहाज से यात्रा के टिकिट बनवाए—

(१) बफलो जाकर नियाग्रा के जल-प्रपात।

(२) डिट्रायट जाकर फोर्ड का प्रसिद्ध मोटर कारखाना।

(३) शिकागो जाकर शिकागो नगर और वहां के दो प्रसिद्ध अजायबघर—म्यूजियम आफ साइन्स एण्ड इण्डस्ट्री तथा म्यूजियम आफ नेचुरल हिस्ट्री।

(४) डेनवर जाकर वहां के चारों ओर का प्राकृतिक सौंदर्य।

(५) लास एंजल्स जाकर वहां के हालीवुड के स्टूडियो।

(६) सैनफ्रांसिस्को जाकर वहां के कुछ खेती के फार्म और जहां दो-दो तीन-तीन हजार वर्ष पुराने रेडवुड के दरख्त हैं वह जगह।

वाशिंगटन तारीख १४ अक्तूबर को छोड़ा और हम सैनफ्रांसिस्को से तारीख २ नवम्बर को रवाना हुए। इस बीच हमने समस्त उपर्युक्त स्थानों को देखा। हवाई यात्रा होने के कारण बहुत कम समय लगा। इसी कारण इतने थोड़े समय का भी बहुत-सा भाग हम इन चीजों को देखने के लिए दे सके।

नियाग्रा जल-प्रपात

नियाग्रा जल-प्रपात संसार की सात सबसे अधिक अद्भुत वस्तुओं में एक माना जाता है। इस जल-प्रपात में जितनी ऊंचाई से पानी गिरता है उसकी अपेक्षा अनेक जल-प्रपातों का पानी कहीं अधिक

मनोहारी दृश्य को देख होटल को लौट आए।

दूसरे दिन प्रातःकाल हम फिर से प्रपात देखने चले। आज दुर्भाग्य से बादल हो गए थे, अतः दृश्य उतना सुन्दर न था। आज हम पहले अमेरिकन जल-प्रपात के निकट की एक बिजली की लिफ्ट द्वारा, जहा भूमि पर पानी गिरता था, उस स्थान पर गए और एक छोटी-सी स्टीमर द्वारा अमेरिका और कैनेडा के दोनों जल-प्रपातों के उस विभाग में घूमे जहा प्रपात से गिरता हुआ पानी एक झील के रूप में भर गया है। इस झील के इधर-उधर जल बड़े वेग से गिर रहा था तथा उसके कण उड़ रहे थे। लिफ्ट से नीचे उतरकर वहा के प्रपात का दृश्य और स्टीमर द्वारा झील में घूमते हुए प्रपात का दृश्य दोनो ही बड़े सुन्दर थे। हा, इतना अवश्य हुआ कि स्टीमर में हमें बरसातिया पहननी पड़ीं और बरसाती कनटोपों से सिर ढाकना पड़ा अन्यथा उड़ते हुए नीर-कणो के कारण हम लोग भीग जाते। हम तीनो के अतिरिक्त इन दृश्यों को देखने के लिए और भी अनेक पुरुष और महिलाए वहा जमा हुई थी।

इसके बाद हम लोग अमेरिकन जल-प्रपात आरम्भ होने से पहले नियाग्रा नदी के कुछ दृश्यो को देखने पहुचे। इन दृश्यों के आसपास उद्यान लगाए गए हैं, जिनसे ये दृश्य परम रमणीय हो गए हैं।

नियाग्रा के ये जल-प्रपात इन देशो को प्रकृति की देन हैं, पर प्रकृति से जो कुछ इन्हें मिला है उसे यहा के लोगो ने और कितना अधिक सुन्दर कर दिया है। फिर इस सौन्दर्य के अतिरिक्त इन्होंने इसका पार्थिव उपयोग भी कम नहीं किया है। इस प्रपात से इसके चारो ओर के लाखों घरों को प्रकाश मिलता है, पश्चिमी न्यूयार्क राज्य के उद्योग-धन्धे चलते हैं और कैनेडा को भी प्रचुर परिमाण में बिजली मिलती है। कई वर्षो से अमेरिका और कैनेडा मिलकर एक संयुक्त नियत्रण-बोर्ड की सहायता से इस प्रपात के द्वारा उत्पन्न बिजली की शक्ति का उपयोग करते रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के द्वारा प्रकृतिदत्त साधनो के उपयोग का यह बड़ा अच्छा उदाहरण है।

के प्रागैतिहासिक काल के संग्रह देखे जा सकते हैं।

शिकागो में हमने बर्फ की चट्टान पर विविध प्रकार के नृत्यों का सुन्दर प्रदर्शन और देखा। बर्फ की चट्टान का यह मच लगभग १५० फुट लम्बा और ५० फुट चौडा था। एक ओर छोटे-से मकान का दृश्य था। इसीमे से नर्तक और नर्तकिया निकलते और अपना कार्य बर्फ के रगमच पर कर वापस लौट जाते। जब ये निकलते तब रगमच पर अधेरा हो जाता और उनके रगमच पर आने पर विविध प्रकार एव रगो के बिजली के प्रकाश में उनके नृत्य होते। नाचने वालो के पैरों में एक विशेष प्रकार के जूते रहते और उन जूतो के तले मे एक विशेष प्रकार के स्केटिंग चक्के, जिनसे ये नृत्य बर्फ के रगमच पर किए जाते। नर्तक और नर्तकियो के रूप, पोशाकें और सारा कार्य अत्यधिक कलापूर्ण एव आकर्षक था। किसी प्रकार की अश्लीलता भी न थी। नृत्य आरम्भ हुआ 'दिल्ली दरबार' शीर्षक नृत्य से। दिल्ली के पुराने सुल्तानो की पोशाक मे कुछ नर्तक आए और नर्तकिया पुराने राजपूती कला के वस्त्र धारण कर। यद्यपि पोशाक और नृत्य दोनों सर्वथा भारतीय न थे, पर पोशाक पुरानी राजपूती कला से मिलती-जुलती अवश्य थी। इसके बाद न जाने कितने प्रकार के नृत्य हुए। इनमे हमें तो सबसे अच्छा तितलियो का नृत्य जान पडा। तितलियो की पोशाकें और उस नृत्य मे जिस प्रकाश की व्यवस्था की गई थी, उससे यही जान पडता था कि जैसे सचमुच की आदमकद तितलिया रगमच पर उडती हुई विविध प्रकार के नृत्य कर रही हैं। बर्फ के रगमच का यह प्रदर्शन सचमुच ही अपने ढग का अनोखा प्रदर्शन था और इसकी सबसे बडी विशेषताए थीं नृत्य करने वालो की पोशाकें, बिजली का प्रकाश और नृत्य मे महान गति।

डेनवर और उसके आसपास

डेनवर के चारो ओर के प्राकृतिक दृश्य बडे सुन्दर हैं। हम

शिकागो

शिकागो नगर का आकार अमेरिका में न्यूयार्क के बाद है, पर नगर न्यूयार्क से अधिक फैला हुआ है। न्यूयार्क [illegible] कुछ ऊंचे ऊंचे मकान भी हैं। [illegible] और [illegible] बड़े बड़े के नगर हैं पर यह नगर इतने व्यवस्थित तरीके से नहीं बना।

कहा जाता है कि शिकागो शहर में बराबर वायु चलती रहती है। मिशीगन झील से आते हुए वायु के झोंके कभी नहीं रुकते। इसीलिए शिकागो को वायु का नगर भी कहते हैं। संसार में इस नगर का चौराहा [illegible] है। दूर-दूर तक फैली हुई इमारतें हैं, जो उद्योग व व्यापार का केन्द्र बनी हुई हैं। आकाश के वातावरण में बादलों की भांति बलखाकर धुआं छोड़ती हुई अनगिनत चिमनियां हैं, वहीं हृदय को रौंदती हुई धक-धक कर चलती हुई रेलगाड़ियां हैं तो अनगिनत [illegible] शिविरा व जहाज हैं।

१८३३ में यह विशाल औद्योगिक नगर एक छोटा-मोटा व्यापारिक नगर था, किन्तु १८७१ के अग्निकाण्ड के पश्चात् नगर का [illegible] में विकास प्रारम्भ हुआ। आज शिकागो कई उद्योगों में अन्य के अन्य सभी नगरों से आगे है। शिकागो की गोश्त की मंडी, अनाज की मंडी, माल की मंडी और मिडवेस्ट स्टाक एक्सचेंज संसार-भर में प्रसिद्ध हैं। शिकागो के आसपास के प्रदेश में कोयला, तेल, इमारती लकड़ी और लोहा बहुतायत से पाया जाता है।

अमेरिका में अन्य कोई नगर इतनी अच्छी जगह स्थित नहीं है। इस नगर की भौगोलिक स्थिति बडी अच्छी है। यहां पर प्राकृतिक साधन प्राप्य हैं और औद्योगिक सुविधाएं भी। अमेरिका के हृदय की धड़कन का जितना आभास इस नगर से मिलता है उतना और किसी से नहीं।

शिकागो नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम की स्थापना १८९३ में की गई थी। यहां पर अफ्रीका, मिस्र, यूनान, रोम आदि

के प्रागैतिहासिक काल के सग्रह देखे जा सकते हैं।

शिकागो मे हमने बर्फ की चट्टान पर विविध प्रकार के नृत्यो का सुन्दर प्रदर्शन और देखा। बर्फ की चट्टान का यह मच लगभग १५० फुट लम्बा और ५० फुट चौडा था। एक ओर छोटे-से मकान का दृश्य था। इसीमे से नर्तक और नर्तकिया निकलते और अपना कार्य बर्फ के रगमच पर कर वापस लौट जाते। जब वे निकलते तब रगमच पर अधेरा हो जाता और उनके रगमच पर आने पर विविध प्रकार एव रगो के बिजली के प्रकाश मे उनके नृत्य होते। नाचने वालो के पैरो मे एक विशेष प्रकार के जूते रहते और उन जूतो के तले मे एक विशेष प्रकार के स्केटिंग चक्के, जिनसे ये नृत्य बर्फ के रगमच पर किए जाते। नर्तक और नर्तकियो के रूप, पोशाकें और सारा कार्य अत्यधिक कलापूर्ण एव आकर्षक था। किसी प्रकार की अश्लीलता भी न थी। नृत्य आरम्भ हुआ 'दिल्ली दरबार' शीर्षक नृत्य से। दिल्ली के पुराने सुल्तानों की पोशाक मे कुछ नर्तक आए और नर्तकिया पुराने राजपूती कला के वस्त्र धारण कर। यद्यपि पोशाक और नृत्य दोनो सर्वथा भारतीय न थे, पर पोशाक पुरानी राजपूती कला से मिलती-जुलती अवश्य थी। इसके बाद न जाने कितने प्रकार के नृत्य हुए। इनमे हमे तो सबसे अच्छा तितलियो का नृत्य जान पडा। तितलियो की पोशाकें और उस नृत्य मे जिस प्रकाश की व्यवस्था की गई थी, उससे यही जान पडता था कि जैसे सचमुच की आदमकद तितलिया रगमच पर उडती हुई विविध प्रकार के नृत्य कर रही हैं। बर्फ के रगमच का यह प्रदर्शन सचमुच ही अपने ढग का अनोखा प्रदर्शन था और इसकी सबसे बडी विशेषताएं थीं नृत्य करने वालो की पोशाकें, बिजली का प्रकाश और नृत्य मे महान गति।

डेनवर और उसके आसपास

डेनवर के चारों ओर के प्राकृतिक दृश्य बडे सुन्दर हैं। हम

के सदृश ही है तथापि उसके अनेक भागो की सडको के दोनो ओर के अत्यन्त सुन्दर वृक्षो ने और छोटे-छोटे हरे-भरे नजरबागो से युक्त तरह-तरह के गृहो ने इस नगर को एक विशेष प्रकार की सुषमा दे दी है।

लास एंजेल्स मे मूवी पिक्चर एसोसिएशन की मार्फत वहां के सबसे बडे स्टूडियो मे से एक पैरामाउण्ट पिक्चर के स्टूडियो दिखाने का भी इन्तजाम किया गया था।

स्टूडियो दर्शनीय था। यद्यपि किसी जमाने मे सिनेमा-जगत् से मेरा सम्बन्ध रह चुका है और यद्यपि स्टूडियो में मुझे कोई सर्वथा ऐसी नई चीज नहीं दिखी जो मैंने बम्बई-कलकत्ते के स्टूडियो मे न देखी हो, पर उन सबमे यह स्टूडियो कही बडा था। बाजार इत्यादि के सेटिंग इतने बडे और विशाल थे कि जान पडता था जैसे अमेरिका के बडे-बडे बाजार स्टूडियो मे ही बने हैं। स्टूडियो मे एक बहुत बडा तालाब था, जो आवश्यकता के अनुसार बढाया-घटाया जा सकता था। इस तालाब मे बिजली के सहारे बडे-बडे समुद्री तूफान दिखाए जा सकते हैं।

सैनफ्रांसिस्को और उसके आसपास

जब हमने सैनफ्रांसिस्को की भूमि पर पैर रखा उस समय सबसे पहले मुझे लाला हरदयाल का स्मरण आया। श्री हरदयाल हमारे देश के उन क्रान्तिकारियो मे प्रधान स्थान रखते थे जिन्होने हमारे देश को स्वतन्त्र कराने का बीडा सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य-युद्ध के पश्चात् सर्वप्रथम उठाया था। फिर श्री हरदयाल की बुद्धिमत्ता और विद्वत्ता की तुलना भी इने-गिने भारतीयो से ही की जा सकती है।

भारत आज स्वतन्त्र है और स्वतन्त्र भारत के हम नागरिक आज स्वतन्त्रतापूर्वक सारे ससार का चक्कर लगा रहे थे। मुझे इस बात से बडा खेद-सा हुआ कि जिन भारतीयों ने भारत की स्वतन्त्रता का शख भारत के बाहर भी फूका और जिसके कारण भारत की स्वतन्त्रता के पक्ष में ससार का लोकमत बना तथा इस लोकमत ने भारत को

जाती है। इस समय जो वृक्ष वहां अभी भी हरे-भरे हैं वे लगभग दो हजार वर्ष प्राचीन हैं।

रेडवुड फारेस्ट के सिवा हमने जो अन्य चीजें देखीं उनमें अमेरिका के कुछ खेती के फार्म थे। इन फार्मों के साथ मैंने अमेरिका का देहाती जीवन भी देख लिया और वहां के कुछ किसानों से भी मिल लिया।

प्रेस कान्फ्रेन्स की तारीख तीस अक्तूबर को और उसी दिन मेरा भाषण भी था। ये दोनों सार्वजनिक कार्य भी भली भांति निपट गए। प्रेस कान्फ्रेन्स का वृत्त वहां के सभी अखबारों में बड़े-बड़े शीर्षकों और चित्रों के साथ छपा।

अमेरिका के राष्ट्रपति का चुनाव-अभियान

हमारे अमेरिका के इस दौरे के अवसर पर अमेरिका में एक बहुत बड़ा काम चल रहा था। यह था अमेरिका के राष्ट्रपति का चुनाव। अमेरिका के राष्ट्रपति का चुनाव हर चौथे वर्ष होता है। अमेरिका के राष्ट्रपति का चुनाव ४ नवम्बर, १९५२ को होना था। हर चार वर्ष बाद ४ नवम्बर को ही यह चुनाव हुआ करता है। अमेरिका की संसद को कांग्रेस कहते हैं। हमारे देश में कांग्रेस एक संस्था-मात्र है। इस वर्ष चूंकि अमेरिकी कांग्रेस की लोक-सभा की (हाउस आफ रिप्रेजेंटेटिव्ज) सभी जगहों के और उच्च सभा अथवा सीनेट की एक-तिहाई जगहों के चुनाव होने थे इसलिए प्रचार का बड़ा जोर-शोर था। इसके अतिरिक्त राज्यों के गवर्नर से लेकर साधारण म्यूनिसपल अधिकारी तक निर्वाचित किए जाने थे। इसलिए यह चुनाव और भी महत्वपूर्ण था।

अमेरिका में केवल अपराधियों को छोड़ सभी वयस्क नागरिकों को मताधिकार प्राप्त है—हर जाति, रंग, धर्म, लिंग अथवा मूल निवासियों सबको।

अमेरिका में कई राजनैतिक पार्टियां हैं, जो राष्ट्रपति-पद के

पार्टी का चुनाव-कार्यक्रम प्रारम्भ हो जाता है। उम्मीदवार देश-भर का पर्यटन करते हैं। समाचारपत्रों, रेडियो और टेलीविजन आदि की सहायता से उनके विचार जनता तक पहुंचते रहते हैं, पर लोग स्वयं भी उन्हें देख लें यह आवश्यक होता है। किसी विदेशी को तो ऐसा प्रतीत होता है मानो समस्त अमेरिका बौखला उठा है। ऐसा भी जान पड़ता है कि इस अवसर पर जो कड़वाहट, गाली-गलौज होती है और वैमनस्य की भावना पैदा हो जाती है वह समाज का स्थायी अंग हो जाएगी और उसे सदा के लिए दूषित कर देगी, किन्तु ज्योंही राष्ट्रपति का चुनाव सम्पन्न हो जाता है, समस्त जनता उसके सम्मान के लिए आदर से अपना शीश नवा देती है और सारी कालिमा धुल जाती है।

जैसा ऊपर कहा गया है, अमेरिका में दो प्रधान राजनैतिक दल हैं—डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन। राष्ट्रपति रूज़वेल्ट के समय से डेमोक्रेटिक दल के हाथ में ही अमेरिका की राज्यसत्ता रही थी अर्थात् लगभग बीस वर्ष से डेमोक्रेटिक दल ही अधिकार में था। इस बार राष्ट्रपति के चुनाव में बड़ा संघर्ष था। डेमोक्रेटिक दल की ओर से श्री स्टीवेन्सन खड़े थे और रिपब्लिकन दल की तरफ से श्री आइसन हावर। दोनों ओर से खूब प्रचार चल रहा था।

हमें यह देखकर कुछ खेद हुआ कि दोनों ही ओर के प्रचार में संयम और शालीनता की अत्यधिक कमी थी। बहुत नीचे स्तर पर उतरकर बातें कही और छापी जाती थीं, यहां तक कि कई बार तो गाली-गलौज तक की नौबत आ जाती थी। स्वयं राष्ट्रपति श्री ट्रूमैन के डेमोक्रेटिव पार्टी के समर्थन के भाषणों में न संयम था और न शालीनता।

हमने अमेरिका के दौरे में इस चुनाव के प्रचार को देखा। चुनाव का क्या नतीजा निकलेगा इसपर लोगों से बातें कीं। सभी संदिग्ध थे और सभी कहते थे कि करारी मुठभेड़ है, जो भी जीतेगा थोड़े वोटों से।

जिस तरह कोरिया में लड़ा और उसने जिस तरह अपनी शक्ति का परिचय दिया उससे ससार के देश दांतों-तले अंगुली दबाकर रह गए हैं। उधर नैतिक दृष्टि से भारत ने बड़ी प्रतिष्ठा पाई है और उसे शान्ति का सच्चा समर्थक समझा जाने लगा है। इसके उपरान्त तो केवल एक और शक्ति उल्लेखनीय रह जाती है और वह है फ्रांस। सो फ्रांस न तो अपनी सामर्थ्य के कारण ही अधिक विश्वास पैदा करता है और न अपनी नीति के कारण ही। इण्डोचाइना, ट्यूनीसिया, मोराको आदि के सम्बन्ध में अपनी नीति के कारण उसे तिरस्कार ही अधिक मिलता है। फ्रांस की गणना यदि अब बड़ी शक्तियों में की जाती है तो वह केवल इसलिए कि वह काफी अर्से तक एक बड़ी शक्ति रहा है और अमेरिका व ब्रिटेन उसे अभी भी बड़ी शक्तियों में बनाए रखना चाहते हैं।

अपने मुख्य विषय अमेरिका पर लौटते हुए मैं यही कहना चाहता हूं कि यद्यपि अमेरिका आज ससार का सिरमौर बना हुआ है किन्तु उसका यह स्थान उसके लिए एक कसौटी है। देखना तो यह है कि अमेरिका ससार मे शान्ति बनाए रखने, कम उन्नत देशों को सबल-स्वस्थ बनाने, पीड़ित मानवता का कष्ट निवारण करने मे कहां तक योग देता है। साम्यवाद के निवारण के लिए अमेरिका आवश्यकता से अधिक चिन्तित जान पड़ता है और कभी-कभी ऐसा जान पड़ता है कि अपनी बौखलाहट मे अमेरिका कहीं गलत कदम न उठा ले। लेकिन मेरा मत है कि अमेरिका को साम्यवाद से कोई खतरा नहीं होना चाहिए। खतरे की वस्तु तो ससार के देशों मे तनाव, भूख, रोग और कष्ट आदि का विद्यमान रहना है। यदि अमेरिका ने रचनात्मक दृष्टिकोण अपना कर इन्हें दूर करने का दृढ निश्चय किया तो उसकी सफलता निष्कटक है, इसमें सन्देह नहीं होना चाहिए। मेरे विचार मे जो दृष्टिकोण अमेरिका के लिए उचित है वही रूस के लिए भी श्रेयस्कर है। यदि ये दोनों महान राष्ट्र प्रतिस्पर्द्धा छोड़कर विश्व के कल्याण के लिए रचनात्मक कार्यों में लग जाएं तो मानवता

तारीख २ नवम्बर, ११ बजे दिन का हमने पैन अमेरिकन लाइन के वायुयान से अमेरिका देश छोड दिया ।

हवाई द्वीप

भारत से कैनेडा जाते हुए लन्दन से माट्रियल पहुचने मे एटलाटिक महासागर को पार करते समय ही इस दौरे की अब तक की सबसे बडी उडान हुई थी । सैनफ्रासिस्को से टोकियो की उडान मे प्रशान्त महासागर को पार करना पडता है । यह उडान एटलाटिक महासागर को पार करने वाली उडान से कही लम्बी थी और सैनफ्रासिस्को से होनोलूलू की उडान, जो बिना बीच मे कहीं ठहरते हुए थी, ससार की बिना बीच मे कहीं ठहरने वाली उडानों मे सबसे लम्बी । कोई २,४०० मील की उडान थी जिसमे पौने दस घण्टे के लगभग लगते थे ।

चार इजन वाला पैन अमेरिकन लाइन का हमारा वायुयान खूब बडा और सुविधाजनक था । एयर कण्डीशन होने के कारण पन्द्रह हजार फुट ऊपर उठ जाने पर भी वायुयान के भीतर का वायुमडल वैसा ही था, जैसा उस समय था जब वह जमीन से उडा था । फिर बाहर किसी तरह का तूफान आदि न था, अत इतनी लम्बी उडान होने पर भी बिना किसी कष्ट के ठीक समय हम होनोलूलू पहुच गए । यद्यपि हमारी उडान में पौने दस घटे लगे. परन्तु होनोलूलू का समय सैनफ्रासिस्को से दो घटे पीछे रहने के कारण होनोलूलू के इस समय पौने सात ही बजे थे ।

होनोलूलू के हवाई अड्डे पर यात्रियो के स्वागतार्थ बडी भारी भीड जमा थी और यह भीड उमगो से परिप्लावित थी ।

होनोलूलू हवाई द्वीपों में से एक पर बसा हुआ है और यद्यपि यह अमेरिका का हिस्सा नहीं है तथापि इसपर अधिकार है अमे-

सागर के फीजी द्वीपों में भी मैं इसी प्रकार की उद्भिज-सृष्टि के दर्शन कर चुका था। वहां तो मैंने आमों पर मौर और फल तथा मोगरे के पुष्प भी देखे थे। प्रशान्त महासागर के ही इन हवाई द्वीपों में हमें भारत के बाहर पुनः वैसी ही भारतीय उद्भिज-सृष्टि के दर्शन हुए। इस भारतीय उद्भिज-सृष्टि के सिवा भी प्राकृतिक दृष्टि से हवाई द्वीप सचमुच बड़े सुन्दर हैं, चारों ओर लहराता हुआ समुद्र और बीच में खूब हरे-भरे ये द्वीप।

हवाई द्वीपों के निवासी दूसरी आकर्षक वस्तु थे, भारत के निवासियों के सदृश ही वर्ण तथा रूप में भारतीयों से कुछ मिलते-जुलते।

यहां जो लोग विहार करने आए थे उनकी संख्या भी कम न थी। सुना कि इन द्वीपों की आर्थिक आय प्रधानतया तीन जरियों से है—गन्ने की खेती तथा शक्कर का उत्पादन, अनानास की खेती और यात्रियों का आगमन। इनमें यात्रियों का आगमन भी कम महत्त्व-पूर्ण न था।

हवाई द्वीपों की अर्थ-व्यवस्था का आधार मजबूत है। यहां का सबसे बड़ा उद्योग चीनी-उद्योग है। पिछले सौ वर्ष से यह उद्योग हवाई द्वीप-समूह की अर्थ-व्यवस्था का मूलाधार रहा है। औद्योगिक आय और राजस्व की दृष्टि से भी चीनी-उद्योग सर्वोपरि है। १७७८ में जब कप्तान जेम्स कुक ने पश्चिमी देशों को हवाई द्वीपों की जान-कारी कराई थी तब भी यहां गन्ना पैदा होता था, लेकिन गन्ने की खेती १८३७ में प्रधानता पा गई। प्रति वर्ष सारे अमेरिका में जितनी चीनी तैयार होती है उसकी एक चौथाई हवाई द्वीपों में होती है और इस चीनी के कोई सातवें भाग का उपयोग संयुक्त राज्य अमेरिका करता है।

दूसरा स्थान अनानास उद्योग का है। पिछले पचास वर्ष से टीन के डिब्बों में अनानास भरकर बाहर भेजा जाता है।

तीसरा स्थान यात्रियों के आगमन का है।

जापान

जापान की राजधानी टोकियो हम ४ नवम्बर को पहुचे ।

जापान मे हम तारीख २३ नवम्बर तक एक पक्ष से भी अधिक ठहरे। इन दिनो मे हम लोग टोकियो मे रहे और जापान के अन्य प्रसिद्ध स्थानों को भी गए।

अन्य देशों के सदृश जापान मे भी हमने सभी कुछ देखने का प्रयत्न किया। यहा के प्राकृतिक सौन्दर्य की छटा देखी। यहा के सबसे बडे नगर टोकियो और यहा के सबसे बडे व्यापार-केन्द्र ओसाका को देखा। यहा के प्राचीन धार्मिक तथा सास्कृतिक स्थान देखे। यहा के जीवन के भिन्न-भिन्न पहलुओं को जानने का प्रयत्न किया। यहा की प्रसिद्ध सस्थाए देखी। यहा की खेती और उद्योग-धन्धे देखे, विशेषकर छोटे-छोटे कल-कारखाने (स्माल स्केल इण्डस्ट्रीज तथा काटेज इण्डस्ट्रीज) जिनके लिए जापान सारे ससार में प्रसिद्ध है। यहा का प्रसिद्ध काबुकी नामक रगमच देखा और यहा के नाइट-क्लब भी देखे।

प्राकृतिक सौन्दर्य के कारण समूचे जापान को एक बडा पार्क या हिल स्टेशन अर्थात् बाग अथवा पार्वत्य प्रदेश कहा जा सकता है, इसीलिए सैर के लिए जापान एक अत्यन्त उपयुक्त स्थान है। सर्वत्र ही पहाड दिखाई देते हैं, जो कही भी बहुत ऊचे नही हैं। समूचे जापान मे पर्वत-श्रेणी रीढ की हड्डी के समान फैली हुई है। इनमे से कुछ पर्वत जलते हुए ज्वालामुखी हैं। पर्वतों के बीच-बीच में अत्यन्त सुन्दर झीलें हैं। मैदानो मे पाई जाने वाली झीलें उतनी सुन्दर नहीं और कहीं-कहीं तो दलदल-मात्र हैं। ज्वालामुखी के प्रकोप के कारण पर्वत के आकार कहीं-कही जहां-तहा बिगड गए हैं, पर इससे उनका सौन्दर्य और भी बढ गया है। इसके अतिरिक्त-जापान का वनस्पति-जगत् है, जो सदैव हरा-भरा रहता है।

जापान की एक और विशेषता वहा के गरम सोते हैं। दुनिया मे कोई और देश ऐसा नहीं है जहां इतने अधिक प्राकृतिक गरम सोते

श्रौर नुकीली नाक यहा के निवासियो की नही । अनेक की आखें तो दो रेखाओ के सदृश मुख पर खिची-सी रहती हैं, पर उनकी मुखाकृति पर ये टेढी नेत्र-रेखाए मुझे तो बडी भली जान पडी । फिर यहाँ की महिलाओ के व्यवहार मे एक विचित्र प्रकार की मृदुता है । यह व्यवहार प्रारम्भ होता है मुस्कराहट से युक्त अत्यन्त झुककर विनम्र नमन से । जापानी एक या दोनो हाथ उठा अथवा केवल सिर झुकाकर नमस्कार नहीं करते । नमस्कार करते समय वे कमर तक के शरीर के आधे ऊपरी भाग को झुकाते हैं । महिलाओ को इस प्रकार का नमन मुस्कराकर करना चाहिए, यह शायद सारी जापानी जाति को सिखाया गया है । यह नमन तथा इसके पश्चात् भी हर प्रकार के व्यवहार में विनम्रता ने इन महिलाओ के सौन्दर्य मे मृदुता और माधुर्य का समावेश कर इन्हें कहीं अधिक सुन्दर बना दिया है । फिर इस सौन्दर्य मे और वृद्धि की है इनके चित्र-विचित्र रगो के विशेष ढग के वस्त्रो ने । मुझे तो यह बडे ही खेद की बात जान पडी कि जापानी महिलाए अपनी जापानी पोशाक छोड़कर पश्चिमी वेश-भूषा अपना रही हैं । और जापानी युवतियो के इस समस्त सौन्दर्य, चटकीली वेश-भूषा एव विनम्र तथा मधुर व्यवहार में कहीं भी अश्लीलता का स्पर्श तक नहीं हुआ है । उनमे सौन्दर्य है, शील है, शालीनता है । जो लोग यह समझते हैं कि स्त्रियो की अर्धनग्न वेश-भूषा और केवल चटक-मटक आकर्षक वस्तुए हैं, उनके लिए जापानी महिलाए एक चुनौती हैं । ये महिलाए अपने बच्चो को एक विचित्र प्रकार से ले जाती हैं, गोद मे नहीं, पीठ पर ।

आर्थिक दृष्टि से इस देश मे मानव ने कम काम नहीं किया है । भूमि पर्याप्त न होने तथा जनसख्या की अधिकता होने के कारण यदि जापान के निवासी अपनी आवश्यकता के अनुसार खाद्य वस्तुए उत्पन्न न कर सकें तो इसमे उनका दोष नहीं, पर उन्होने सारे देश की भूमि का इच बराबर भी निकम्मा नही छोड़ा है । यहां खेती के बड़े-बडे फार्म नहीं हैं, इसीलिए खेती मे ट्रेक्टर आदि बडी-बडी मशीनो

करता है। कोई भी तो तैयार माल ऐसा नहीं जिसकी किसी का 'मार्केटिंग ब्यूरो' न हो। दूसरा कारण है, यातायात की व्यवस्था। यह व्यवस्था इतनी अच्छी है कि कोई माल यातायात के साधनों की कमी के कारण पड़ा नहीं रहने पाता। और तीसरा कारण है, हर कारखाने वालों को कानूनन कुछ सख्या काम सीखने वालों (एप्रेन्टिसों) को रखना पड़ता है। इससे काम जानने वालों (स्किल्ड लेबर) की कमी नहीं होने पाती। जापान में आर्थिक उन्नति का प्रधान कारण यहां के लोगों का अत्यधिक श्रमशील और चरित्रवान होना है। अपने काम-धन्धों में जापानी जितनी अधिक मेहनत करते हैं कम जातियां करती होंगी। इसीके साथ सुना गया कि वे बड़े ईमानदार होते हैं। कोई भी जिम्मेदारी का काम उन्हें निःशक होकर सौंपा जा सकता है। इतने पर भी जापान अमेरिका और यूरोप के सदृश धनवान नहीं है। हां, पूर्व का शायद सबसे धनवान देश कहा जा सकता है।

परन्तु सम्पन्न होने पर भी जापान की अर्थ-व्यवस्था मूलतः कमज़ोर है। अर्थ-व्यवस्था की कमज़ोरी के कारण हैं—भूमि की और प्राकृतिक साधनों की कमी, बढ़ी हुई आबादी, अभी भी किसानों की गरीबी, उद्योग-धन्धों की आधुनिकता की ओर जाते हुए भी जापानी माल की निकासी के लिए मण्डियों की कमी और विदेशों पर आवश्यकता से अधिक निर्भरता आदि।

जापान का केवल साढ़े पन्द्रह प्रतिशत भाग खेती के योग्य है। कोई साढ़े सात प्रतिशत भाग में चरागाह हैं। बाकी भाग में जंगल हैं। जापान के प्राकृतिक साधन न्यून हैं। अपनी आवश्यकता का एक तिहाई लोहा उसे विदेशों से मगाना पड़ता है। अधिकतर कच्चे माल के लिए उसे दूसरे देशों का मुह ताकना पड़ता है। रबड़, कपास, ऊन आदि उसे लगभग पूरे के पूरे बाहर से ही मगाने पड़ते हैं। मोटे तौर पर अपने कारखानों की आवश्यकता के कच्चे माल का ४० प्रतिशत भाग ही जापान अपने यहां से प्राप्त कर पाता है। गन्धक

जापान में कला, साहित्य, दर्शन और विज्ञान का विकास होने लगा। सातवीं शताब्दी समाप्त होते न होते सारा देश बौद्धमत के प्रभाव में आ गया था। चौदहवीं शताब्दी में धर्म और राजनीति के बीच संघर्ष छिड़ा। मूल जापानी धर्म शिंटो का पुनः प्रादुर्भाव हुआ। दो शताब्दी तक खींचतान चलती रही। सत्रहवीं शताब्दी में जब शान्ति और राजनीतिक एकता स्थापित हुई तो जापान में ईसाई धर्म ने भी प्रवेश किया।

इस धार्मिक प्रभाव वाली संस्कृति ने यहां के लोगों को बड़ा कलापूर्ण बना दिया है।

यहां के लोगों की तन्दुरुस्ती भी बुरी नहीं। महामारियों का प्रकोप यहां नहीं सुना गया। पर इस सम्बन्ध में यहां की सरकार की कुछ विचित्र आज्ञाएं हैं, जैसे, न जाने क्यों यह माना गया है कि आम से हैज़ा होता है, अतः आम के आयात पर यहां पूर्ण प्रतिबन्ध है।

यहां के लोगों की वेश-भूषा पश्चिमी हो गई है। पुरुष तो प्राय सभी पश्चिमी ढंग के वस्त्र पहनते हैं, स्त्रियों में भी अधिकतर पश्चिमी। यह क्यों हुआ है, यह कहना कठिन है। कदाचित् पश्चिमी वेश-भूषा का यहां की वेशभूषा से अधिक सुविधाजनक होना इसका प्रधान कारण है। गांवों तक में पश्चिमी वेश-भूषा का प्रचार है। फिर आज तो सारे संसार के देशों पर ही पश्चिमी सभ्यता और पश्चिमी वेश-भूषा का प्रभाव है। परन्तु वेश-भूषा पश्चिमी होने पर भी जापानियों के रहन-सहन में अधिकांश बातें पूर्वी ढंग की हैं, जैसे, उनके मकानों के भीतर जूते नहीं जाते। कुर्सियों पर न बैठ वे ज़मीन पर बैठते हैं और ज़मीन पर बैठकर ही खाते हैं।

यहां के निवासियों में बहुत अधिक धनवान और बहुत अधिक निर्धन दोनों ही कम हैं। मध्यम श्रेणी के लोग अधिक हैं। पर धनवान और निर्धन दोनों ही नहीं हैं, यह नहीं कहा जा सकता। निर्धन तो काफी कहे जा सकते हैं। हमने यहां भिक्षा मांगने वाले भी देखे। जीवन-धारण अमेरिका और यूरोप के अनुसार नहीं, पर पूर्व के देशों

वेश-भूषा में नट और नटी। स्त्रियों का काम भी इस रंगमंच पर पुरुष ही करते हैं, परन्तु कुछ ऐसे ठिगने-ठिगने तथा दुबले-पतले पुरुषों को स्त्रियां बनाया जाता है कि जब तक हमें यह बात बताई नहीं गई कि काबुकी रंगमंच पर स्त्रियों का काम पुरुष ही करते हैं, तब तक हम यह बात न जान सके कि वे स्त्रियां न होकर यथार्थ में पुरुष हैं। काबुकी रंगमंच पर एक प्रदर्शन में एक ही नाटक नहीं खेला जाता। बहुधा छोटे-छोटे नाटकों का संग्रह रहता है। रंगमंच पर एक ओर एक या एक से अधिक लोग जापानी तंबूरे पर नाटक की कथा का गान करते हैं और बीच में नाटक खेला जाता है। इस खेल में सम्भाषण, अभिनययुक्त गीत, नृत्य सभी होते हैं। नाटक की कथा का गान बैकग्राउण्ड म्यूज़िक की भांति चलता है। मुझे अभिनय बहुत स्वाभाविक न जान पड़ा। ओवर ऐक्टिंग बहुत था। मुख्य कलाकारों की सहायता के लिए रंगमंच पर काले वस्त्र पहने व्यक्ति आते हैं जिन्हें 'कुरोगो' कहा जाता है। इस रंगमंच की वेश-भूषा जिस प्रकार जापान की पुरानी वेश-भूषा रहती है उसी प्रकार इस रंगमंच की भाषा, जिसे वर्तमान जापान-निवासी तक बहुत कम समझते हैं और इतने पर भी कितनी अधिक संख्या में कितने अधिक चाव से जापानी देखते हैं, इस काबुकी रंगमंच को! सुना यह गया कि काबुकी रंगमंच जापान का राष्ट्रीय रंगमंच है, जिसे सिनेमा आदि कोई भी आधुनिक प्रदर्शन जरा भी आंच नहीं पहुंचा सके। दिसम्बर १९५० में अट्ठाईस करोड़ दस लाख येन की लागत पर इसका पुनर्निर्माण हुआ और यह जापान की आधुनिक वास्तुकला का एक अनुपम नमूना है। यहां प्रमुख काबुकी कलाकार दर्शकों के सम्मुख उपस्थित होते हैं। में तीन बार जनवरी, अप्रैल और नवम्बर में विशेष ...स थियेटर में ढाई हजार से अधिक ...

विशेष
...का मिलान

शिमा। कामाकुरा सागामी खाड़ी के किनारे स्थित है और अपनी मधुर जलवायु तथा सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध है। यहां भगवान बुद्ध की आज की विशाल दाइबुत्सू मूर्ति है जो दुनिया में अपने ढंग की अनोखी है। अकेले इस मूर्ति के कारण भी कामाकुरा दर्शनीय है और कोई भी दर्शक यहां आने का लोभ संवरण नहीं कर सकता। सन् ७३७ ई० में जापान के प्रसिद्ध सम्राट् श्री शोमू ने जो अनेक बौद्धमठ और मन्दिरों का निर्माण कराया उसमें कामाकुरा का सर्वश्रेष्ठ है।

यहां की गौतम की विशाल मूर्ति सन् १२५२ में गढ़ी गई थी। इसे प्रसिद्ध जापानी कलाकार ओनो-गोरोये-मान ने राजकुमार सो सुन की आज्ञानुसार निर्मित किया था। यद्यपि सन् १४९५ ई० के भयंकर समुद्री तूफान ने मूर्ति को क्षति पहुंचाई फिर भी आज मूर्ति की हालत बहुत अच्छी है। इस मूर्ति की ऊंचाई ४३ फुट है और इसका घेरा ९७ फुट। चेहरे की लम्बाई ७ ७ फुट है। एक-एक आंख ३ ३ फुट की है। कान की लम्बाई ६ ६ फुट है। मूर्ति का कुल वजन दो हजार सात सौ मन है। इससे बड़ी जापान में एक ही बौद्धमूर्ति है—किश्रोटो में।

टोकियो से कामाकुरा पहुंचने में ५४ मिनट लगते हैं। बिजली की रेलगाड़िया जल्दी-जल्दी चलती रहती हैं। मोटरकार भी इन स्थानों को जाती है। कामाकुरा में बहुत-से प्राचीन मंदिर आदि हैं। इन मन्दिरों तथा कई अन्य कला-वस्तुओं से पता चलता है कि बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी में इसका कितना ऊंचा स्थान था। प्राचीन ऐतिहासिक दृश्य और मन्दिर आदि दर्शकों के लिए बड़ी आकर्षक वस्तुएं हैं।

इनोशिमा कामाकुरा के समीप ही एक छोटा टापू है। इस टापू में एक गुफा है जो कोई ३६० फुट गहरी है और दो शाखाओं में बटी हुई है। दर्शकों को गुफा देखने के लिए मोमबत्तियां दी जाती हैं। गुफा के छोर पर बाईं ओर बनेटन की एक मूर्ति है जिसे सौभाग्य के देवी देवताओं में से एक माना जाता है।

शान शाकुन्तल' में वर्णित महर्षि कण्व के आश्रम का स्मरण आए बिना न रहा।

कियोटो

कियोटो सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों वाला एक रमणीय स्थान है। कियोटो जापान की प्राचीन राजधानी रहा है और एक हजार वर्ष से अधिक समय से जापान की सभ्यता का केन्द्र। यह नगर प्राचीन ऐतिहासिक और धार्मिक परम्पराओं का स्थान है और यहां उन कलाओं व दस्तकारियों का जन्म हुआ जिनके लिए जापान सारे संसार में प्रसिद्ध है। आधुनिक भौतिक प्रगति के साथ-साथ कियोटो बौद्धमत का एक प्राचीन केन्द्र है और यहां आज भी प्राचीन जापान की आत्मा के दर्शन किए जा सकते हैं। यह नगर पर्वतों से घिरा हुआ है और इसमें अनोखी मोहक कान्ति है। यहां का 'दाइबुत्सू' बौद्ध मन्दिर, उसका पगोडा, उस मन्दिर की विशाल बौद्धप्रतिमा तथा घण्टा दर्शनीय हैं। इस मन्दिर में एक मुरली बजाती हुई श्रीकृष्ण की मूर्ति भी है।

हाकोने

यहां का प्राकृतिक दृश्य भी बड़ा रमणीय है। गन्धक के कारण यहां अनेक गरम पानी के झरने हैं, जिनसे भाप निकला करती है। एक खासी बड़ी झील भी है। परन्तु गन्धक के ये खेल न्यूज़ीलैंड के रोटारुआ नामक स्थान में इस स्थल से कहीं अधिक विशेषता रखने वाले हैं।

निक्को

निक्को एक पहाड़ी स्थल है। कुछ फुट चढ़कर एक पहाड़ी मैदान मिलता है जिसमें एक सुन्दर झील और जल-प्रपात है। नदियों, झरनों और पुरातन वृक्षों के कारण निक्को का प्राकृतिक सौन्दर्य अद्वितीय

ान के संचालकों ने मुझे भाषण देने के लिए निमन्त्रित किया था।

हमें एक बात का खेद रहा कि मसार में एक सरकार की स्थापना के उद्देश्य से हिरोशिमा में होनेवाली एक परिषद् का निमन्त्रण मिलने पर भी जापान देर से पहुचने के कारण मैं हिरोशिमा न जा सका और इस परिषद् का संगठन करने वालों से मिलकर ही हमें सन्तोष करना पड़ा।

जैसा सर्वविदित है, हिरोशिमा पर ६ अगस्त, १९४५ को अणु-बम फेंका गया था। बम गिरने के स्थान से चारो ओर दो-दो मील तक के प्रदेश को 'अणु मरुस्थल' कहा जाने लगा था। सरकारी आकड़ों के अनुसार इस बम-विस्फोट में हताहत होने वालों की सख्या इस प्रकार है—

मृत	—	७८, १५०
लापता	—	१३, ९८३
घायल	—	३७, ४२५
कुल जोड़		१, २९, ५५८

इस बम-विस्फोट मे ६, ०४० भवन और इमारतें नष्ट हो गई थीं।

आरम्भ मे यह खबर थी कि जिस प्रदेश मे अणुबम का विस्फोट हुआ है वह पचहत्तर वर्ष तक बजर रहेगा, किन्तु कुछ महीनो के अनन्तर यह बात निराधार साबित हुई। विस्फोट के बाद जीवित रहने वालो ने साहस के साथ पुनर्निर्माण का काम आरम्भ किया और १९५० मे हिरोशिमा की जनसख्या बढती हुई दो लाख पचासी हजार सात सौ अट्ठारह तक पहुच चुकी थी।

यूरोप मे जो स्थिति ब्रिटेन की है, एशिया मे वही स्थिति जापान

ीजिए और ऊपर से हलकी-हलकी राख बुरक दीजिए। फसल काटने के क बाद ही जमीन की जुताई करनी चाहिए। एक-एक फुट जगह छोड़कर चार-चार फुट चौड़ी पट्टियां बना लीजिए जिनकी मोटाई तीन च हो। बहुत अधिक बीज न बोए। बीज अच्छे किस्म के लें और नको नमकरे पानी से भरी बाल्टी मे भिगो दें। इसके बाद बीजो को हलाए। भारी बीज बैठ जाएगे, हलके बीज ऊपर तिरने लगेंगे। भारी बीजों को चुनें। बीस मिनट के लिए बीजों को मिक्स्चर मे डालकर सार से एक बटा आठ इच अच्छी मिट्टी बिछा दें। पच्चीस फुट की पट्टी में एक पौण्ड बीज बोना ठीक होगा। यदि वर्षा न हो तो जल दें। फिर पौधे तैयार होने पर उन्हें अन्यत्र बो दें। पौधे उस समय तैयार समझने चाहिए जब वे छ से आठ इच तक लम्बे हो और उनमे छ पत्तिया निकल आई हों। ये पौधे उस जमीन मे अच्छे उगेंगे जो खूब तैयार की गई हो और जहा फी एकड जमीन मे पन्द्रह-बीस गाडी खाद डाली गई हो। एक विशेष बात ख्याल रखने की यह है कि पौधे एक दूसरे से दस-दस इच की दूरी पर होने चाहिए।

जापान की राजनीतिक रूप-रेखा समझने के लिए वहा के जीवन में सम्राट का स्थान जान लेना बड़ा जरूरी है। दूसरे महायुद्ध मे जापान की हार के बाद सम्राट के महत्त्व मे काफी परिवर्तन हुआ है। दूसरा महायुद्ध समाप्त होने तक सम्राट की बडी पूजा होती थी, उसकी आलोचना करना या उसके विरुद्ध मत प्रकट करना गुनाह था। लोगों का अपने सम्राट मे अधविश्वास-सा था और वे उसे दैवी शक्ति मानते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि जापान अपने सम्राट के अधीन एक अत्यन्त सगठित देश बन गया।

सन् १८८६ मे मेजी सविधान की रचना हुई और पश्चिमी देशो की देखा-देखी ससद्, डायट, भी बनी, किन्तु इसका अधिकार-क्षेत्र बहुत ही सीमित था। सम्राट के हाथो में पूर्ण सत्ता रहने का व्यवहार-रूप यह था कि सारे अधिकार सरकारी अधिकारी वर्ग और सैनिक गुट के हाथों में आ गए। परिणाम यह हुआ कि जापान एक महान

था। हागकाग की उद्भिज-सृष्टि हवाई के समान अत्यधिक घनी भी नहीं थी। हवाई द्वीप के समान हागकांग पहुचते ही भावना की एक लहर-सी उठी कि हम भारत के निकट पहुच रहे हैं, परन्तु भावना की इस लहर को भाज विलीन होते भी देर न लगी। जिस प्रकार होनोलुलू से हम सीधे भारत न जाकर जापान रुक गए थे और भारत फिर से बहुत दूर हो गया था उसी प्रकार हागकाग से भी हम चीन जा रहे थे और भारत पुन दूर होने वाला था।

चीन की सीमा के लिए रवाना होने के पहले हमने हागकांग देख लेना चाहा।

हागकांग एक छोटे-से समुद्री टापू पर बसा हुआ है। यह द्वीप घिरा है पर्वत-श्रेणियो से। आबहवा है बबई के सदृश। प्राकृतिक दृश्य समुद्र और पहाडियों के कारण बडा सुन्दर हो गया है। लगभग बीस लाख की आबादी की बडी-बडी इमारतों और सकरी-सकरी सडको वाला यह शहर भूमि की कमी के कारण बहुत घना बसा है। पर बस्ती के घने होने पर भी नगर काफी साफ-सुथरा है। आबादी मे अधिकाश चीनी हैं, पर कम रहते हुए भी प्रभुत्व है श्वेतागो का। ये सफेद अधिकत्तर अग्रेज हैं। यहां के गोरे खूब धनवान जान पडते हैं, पर यहा की जनता अत्यधिक गरीब। यह गरीबी शोषण का परिणाम है और गरीबी मे जिन कष्टो तथा दुर्गुणों की उत्पत्ति होती है वे सब यहा की आम जनता मे स्पष्ट दिखाई देते हैं। लोगो के शरीरो, उनके मुखों, उनकी वेश-भूषा से निर्धनता साफ दिखाई पडती है। भिखारियों की भी काफी तादाद है और चोरो तथा उठाईगीरो की भी। मेरे कोट की ऊपर की जेब से मेरा फाउन्टेनपेन और पेंसिल इस सिफत से निकाल लिए गए कि हमे ज्ञात हो गया कि चोरी मे यहां के निवासी कितने पटु हो गए हैं। हागकांग को देखकर हमें पुन याद आ गया कि विदेशी अग्रेजी राज्य और गरीबी तथा गरीबी के कष्ट एव दुर्गुण शायद पर्यायवाची हैं।

फौजी दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होने के कारण हागकाग का संसार

सहप एक-एक ही झंडा लगाया गया था। इसका कारण कदाचित् इस स्थल का ऐसे स्थान पर होना था जहां दो राज्यों की सीमा लगती है। इन झण्डों की बहुतायत के सिवा लाल चीन की सीमा में पैर रखते ही जिन दो चीजों ने हमारा ध्यान सबसे अधिक आकर्षित किया वे थीं रूस के सर्वेसर्वा स्तालिन और चीन के सर्वेसर्वा माओ-त्सेतुंग के चित्र तथा चीन की सरकार के कार्यों का हर प्रकार का लगातार प्रचार करने वाला रेडियो। लाल चीन की सीमा में प्रवेश करने के बाद से लाल चीन छोड़ने तक ये दो चीजें तो हर जगह अनेक रूपों में हमें दृष्टिगोचर होती रहीं।

लाल चीन की इस सीमा से चीनी रेल लगभग दो बजे जाती थी। चीन की हमारी सारी यात्रा अब रेल से होने वाली थी। यहां से चलकर लाल चीन के जिस प्रथम स्थान पर हम ठहरने वाले थे उसका नाम था कैंटोन। इस स्थान से कैंटोन पहुंचने में लगभग चार घण्टे लगते थे।

भोजन कर दो बजे हम कैंटोन के लिए रवाना हो गए।

चीन

जब हमने चीन के मुख्य भू-भाग में प्रवेश किया तब मेरे मन में जैसी उत्सुकता थी वैसी इस विश्व-भ्रमण में अब तक कहीं भी नहीं रही थी।

इसका प्रधान कारण था इस प्राचीनतम देश में एक नवीनतम प्रयोग का होना। अब तक हम जिन देशों को गए थे उनकी राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था थोड़े-बहुत हेर-फेर के साथ वैसी ही है जैसी हमारे देश की। लगभग सौ वर्षों से जो पूंजीवाद संसार के सभी देशों की राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित किए हुए है उसको उखाड़ फेंकने का जो देश प्रयत्न

सांस्कृतिक सम्बन्ध रहा है, ऐसा जो देश पूंजीवाद से पिंड छुड़ाने का प्रयत्न कर रहा है, मात्र मैं उसी देश को देखूगा, मेरी इस समय की उत्सुकता का यह प्रधान कारण था। अन्य देशो को जाते समय वहा के प्राकृतिक दृश्य और दर्शनीय स्थानो को देखने की मेरी जैसी उत्सुकता रहती थी उससे चीन देखने की उत्सुकता सर्वथा भिन्न थी।

चीन की मुख्य भूमि मे प्रवेश करने के दिन से उसे छोड़ने तक हम लोग सोलह दिन और पन्द्रह रात चीन मे रहे। इन सोलह दिनों मे आठ दिन और पन्द्रह रातो मे ग्यारह राते हमारी रेल मे बीतीं, शेष समय हमने बिताया कैण्टोन, शघाई, पीकिंग और हैंको नगरो तथा इनके आसपास के कस्बो-गावो आदि मे। परन्तु चूकि हमारी यह सारी यात्रा रेल मे हुई और इस यात्रा मे दक्षिण से उत्तर तथा उत्तर से दक्षिण हमने चीन देश के अनेको मीलो के भू-भाग को नापा इसलिए रेल के डब्बो की खिड़कियो मे भी हमने चीन के कितने नगर, कस्बे, गाव, वहा की भूमि, नदिया, पहाड़ और मैदान, बस्तियां और खेत तथा वहा का हर प्रकार का जीवन देखा। हमे इस बात पर बड़ा खेद हुआ था कि रेल की इस यात्रा के कारण हमारा बहुत-सा समय यात्रा मे ही लग जाएगा और जो कुछ हम वहा देख सकेंगे वह बहुत थोड़ा होगा, परन्तु आज मुझे इस बात पर हर्ष है कि हमारी यह यात्रा रेल से हुई। रेल की इस यात्रा के कारण हम जो कुछ देख सके वह हवाई यात्रा से सम्भव न था। फिर जिस दृष्टि से हम यह देश देखना चाहते थे वह स्पष्ट होने के कारण चलती हुई रेल से, स्टेशनो से, जहा-जहा हम ठहरे और जिन-जिन स्थानो को हम गए उन सबके नाना प्रकार के दृश्यों, एव जिन-जिनसे हम मिले उनके वार्तालापो तथा जो साहित्य हमने वहां इकट्ठा किया उससे, इतने थोड़े समय मे भी हम वर्तमान चीन का थोड़ा-बहुत अध्ययन करने मे शायद सफल हो सके हैं। यो तो किसी देश के सागोपाग अध्ययन के लिए हफ्तो, महीनो ही नहीं, वर्षो की आवश्यकता होती है, फिर चीन के सदृश विशाल देश के लिए तो युगो की। पर घूमते-फिरते यात्रियो की अपनी

कारण यह है कि वहां उन तीन वर्षों में जो कुछ किया गया था उसके विषय में वहां के जिन लोगों से हम मिले उनकी राय में इतनी विभिन्नता थी तथा जो शासन इस समय वहां चल रहा था उसमें इतनी बातें गुप्त रखी जाती थी, यहां तक कि वहां का वार्षिक बजट तक प्रकाशित नहीं होता, कि किसी भी बारीक से बारीक और स्पष्ट दृष्टि रखने वाले निरीक्षक का भी यह कह सकना कि उसका मत ठीक है, मैं कठिन ही नहीं असम्भव मानता हूं। मेरी यह राय उन लोगों के सम्बन्ध में भी है जो दीर्घकाल तक वहां रहे हों, यहां तक कि उन दूतावासों के सम्बन्ध में भी, जो सदा वहां रहते हैं और उनका काम हर प्रकार से हर बात का पता लगाते रहना रहता है।

नये चीन को लाल चीन कहना यथार्थ में उपयुक्त नहीं है। इस समय का चीन साम्यवादी नहीं कहा जा सकता और चीन ही क्या रूस तथा पूर्वी यूरोप के चेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया, बलगेरिया आदि देश जो साम्यवादी कहे जाते हैं, यथार्थ में साम्यवादी नहीं हो पाए हैं। सच्चे साम्यवाद में व्यक्तिगत सम्पत्ति का कोई स्थान नहीं है। इन सब देशों में, यहां तक कि रूस में भी, व्यक्तिगत सम्पत्ति मौजूद है; चीन में तो बहुत बड़े परिमाण में। चीन में चाहे जमीन का पुनर्विभाजन हो गया हो, पर अभी भी सारी जमीन व्यक्तिगत सम्पत्ति ही है। कहीं-कहीं सहकारी (कोआपरेटिव) और सामूहिक (कलेक्टिव) फार्मों की स्थापना के प्रयत्न हुए हैं, पर सुना गया है कि ये सफल नहीं हो रहे हैं। कहीं-कहीं सरकारी फार्म स्थापित हुए हैं, पर इन्हें स्थापित हुए अभी इतना कम समय बीता था कि इनकी सफलता के सम्बन्ध में कुछ भी कहना उपयुक्त न होगा। चीन में उद्योग-धन्धे कम थे और उनमें अधिकतर व्यक्तिगत सम्पत्ति ही थी। कुछ बड़े-बड़े कारखानों का राष्ट्रीयकरण हुआ था, पर इनकी संख्या बहुत कम थी। चीन का व्यापार सरकार के हाथ में आया था, पर व्यक्तियों के हाथ में भी था। साम्यवाद का दूसरा सिद्धान्त है कि हर आदमी अपनी शक्ति के अनुसार उत्पादन करे और अपनी आवश्यकता

से उच्च सरकारी कर्मचारी के वेतन की बात कही गई है। जिनके उद्योग-धन्धे और व्यापार हैं उनकी आय शायद इससे अधिक है और मजदूरों की बहुत कम। सुना गया कि मजदूरों की कम से कम मजदूरी एक रुपया रोज तक भी था। पर अमेरिका के लोगों की आमदनी और चीन के लोगों की आमदनी का कोई मिलान नहीं किया जा सकता। यथार्थ में अमेरिका के लोगों की आय से तो संसार के किसी भी देश के लोगों की आय का मुकाबला नहीं। अमेरिका में एक व्यक्ति की आमदनी से दूसरे की आमदनी में बहुत अधिक अन्तर होने पर भी जिनकी आमदनी कम से कम है उन्हें भी इतना अधिक मिलता है कि उन्हें असन्तोष नहीं। पर जहां लोग भूखों मरते हों वहां यदि एक व्यक्ति की आय से दूसरे की आय में बहुत अधिक अन्तर हो तो कम आय वाले को असन्तोष ही नहीं ईर्ष्या होती है, जलन होती है और इसका अन्तिम परिणाम निकलता है क्रान्ति। संसार के किसी भी देश में साम्यवाद के मुख्य सिद्धान्त के अनुसार चाहे हर आदमी अपनी शक्ति के अनुसार उत्पादन कर अपनी आवश्यकता के अनुसार प्राप्त न करता हो, चाहे एक व्यक्ति की आमदनी से दूसरे व्यक्ति की आमदनी में काफी अन्तर भी हो, पर साम्यवादी कहे जाने वाले देशों में इस अन्तर को घटाने का प्रयत्न अवश्य किया गया है, चीन में भी यह हुआ है और इसलिए निर्धनता रहते हुए भी वहां के लोगों के पुराने असन्तोष की मात्रा अवश्य घटी है।

इस प्रकार साम्यवाद के उपर्युक्त दोनों मुख्य सिद्धान्तों के अनुसार संसार का कोई भी देश पूर्णतया साम्यवादी नहीं कहा जा सकता, चीन तो सर्वथा नहीं, और इसलिए चीन का शासन जिनके हाथ में है वे भी चीन को साम्यवादी न कह केवल इतना ही कहते हैं कि चीन का शासन साम्यवादियों के नेतृत्व में है, और इस नेतृत्व का ध्येय चीन में साम्यवाद की स्थापना है।

अब प्रश्न उठता है कि क्या चीन इस ध्येय की ओर बढ़ रहा है? इसका उत्तर देना सरल नहीं है।

हो जाने वाला है, और आज जो लोगों को ग्यारह-ग्यारह, बारह-बारह घण्टे काम करना पड़ रहा है उसके परिणाम में उन्हें भविष्य में कैसा आराम मिलने वाला है, इसे लोगों को नाना प्रकार से समझाया जाता था।'

चीन ठंडा देश होने के कारण वहां के निवासियों का रंग गोर है। रंग में पीली-सी झाईं है। कद बहुत ऊंचा नहीं, पर जापानियों के सदृश ठिंगना भी नहीं। वहां के और जापान के लोग एक ही जाति के होने पर भी जापानी महिलाओं के सदृश यहां की स्त्रियों में सौन्दर्य नहीं है।

चीन इतना बड़ा देश है और उसकी संस्कृति इतनी प्राचीन है, इसलिए विभिन्न जातियों का वहां होना स्वाभाविक ही है, किन्तु आश्चर्य की बात तो यह है कि इस विविधता में गहरी एकरूपता है। चीन के लोग अधिकांश मंगोल जाति के हैं यद्यपि महान् दीवार के पार से आकर आक्रमणकारी वहां बसे और वहीं के लोगों में घुल-मिल गए। यांगसी नदी के मैदान के उत्तरी और दक्षिणी भाग के निवासियों की आकृति आदि में अन्तर पाया जाता है, किन्तु इस अन्तर के कारण भी उनकी मूल समानता अक्षुण्ण है। उत्तरी भाग के चीनियों का कद कुछ बड़ा होता है और जगह-जगह उनका रंग भी अधिक गोरा होता है। दक्षिणी भाग के लोगों को देखने से पता चलता है कि भिन्न-भिन्न कबीलों के लोग जिस तरह उत्तरी भाग में घुल-मिल गए हैं वैसे दक्षिणी भाग में नहीं। किन्तु चीन की एक ही लिखित भाषा होने के नाते उनकी एकता अधिक बनी रह सकी है।

अत्यन्त प्राचीन काल में चीनी अपने पूर्वजों और प्रकृति के उपासक थे। भारत की ही तरह चीन में भी अनेक देवी-देवताओं में आस्था की जाती थी। प्रकृति की उपासना भी की जाती थी। दैवी और मानवीय में विशेष अन्तर नहीं किया जाता था। मृत्यु को प्राप्त होने वाले पूर्वजों की गणना भी देवी-देवताओं में होने लगती थी।

चीन की वर्तमान संस्कृति में प्राचीनता के प्रभाव का सर्वथा लोप

पांचवीं शताब्दी में चट्टानों और पत्थरों पर बुद्ध की मूर्तियां अंकित की जाने लगी। अनुमान है कि चीन में २,६७,००० से अधिक बौद्ध-विहार और ७,१८,००० से अधिक बौद्धभिक्षु और भिक्षुणियां होंगी। वैसे बौद्धधर्म में विश्वास रखने वालों की तो संख्या ही नहीं बताई जा सकती। युद्धकाल में चीनी बौद्धों ने घायलों की परिचर्या का प्रशंसनीय कार्य किया। लड़ाई की सराई में और मोर्चे पर बमवर्षा होने पर वे लोग घायलों को स्ट्रेचर पर लिटाकर सुरक्षित स्थानों को पहुंचाते थे।

इसके पश्चात् ईसाई धर्म और इस्लाम के भी यहां के कुछ लोग अनुयायी हुए।

परन्तु ताओइज्म, कन्फ्यूशियस का दर्शन, बौद्धधर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम-किन्हीं धर्मावलम्बियों में यहां किसी प्रकार का झगड़ा नहीं रहा। एक ही कुटुम्ब में भिन्न-भिन्न धर्म मानने वाले रहे और अभी भी हैं।

धर्म का प्रभाव यहां बहुत कम होता जा रहा था, यद्यपि सभी धर्मों के अनुयायी अभी भी यहां हैं। आज भी चीन में बौद्धधर्म का ही सबसे अधिक प्रभाव है। बौद्धमन्दिर, पंगोडा यत्र-तत्र दृष्टिगोचर होते हैं। भगवान बुद्ध के जन्म-दिवस को इन सभी मन्दिरों में, विशेषकर देहात के मन्दिरों में, दर्शनार्थ बड़ी भीड़ होती है।

इतने बड़े चीन की भाषा एक है। यह इस देश की संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता है। हां, इस भाषा के उच्चारण में स्थान-स्थान पर विभिन्नता अवश्य है। चीन की यह भाषा तीन लिपियों में लिखी जाती है। चीनी लिपि, मंगोलियन लिपि और तिब्बती लिपि, सबसे अधिक प्राचीन लिपि चीनी लिपि है और इसीका सबसे अधिक प्रचार भी है। चीनी भाषा संसार के जितने अधिक लोगों की मातृ-भाषा है उतनी अन्य कोई भाषा नहीं। भौगोलिक दृष्टि से कदाचित् अंग्रेजी, फ्रेंच और रूसी भाषा का अधिक प्रसार है, लेकिन इनमें से कोई भी भाषा इतने बड़े जनसमूह की मातृभाषा हो ऐसा नहीं है।

से प्रणाम कर हम यहां से एक बौद्धमन्दिर को पहुंचे। इस बौद्ध-मन्दिर का नाम है यू फू योह। अत्यन्त विशाल और भव्य मन्दिर तथा वैसी ही भगवान बुद्ध एवं उनके समीपवर्तियों की मूर्तियां।

यथाई से तारीख १ दिसम्बर को १२ बजे दिन को हम पीकिंग के लिए रवाना हो गए।

जिस दिन हम पीकिंग के लिए विदा हुए उस दिन दिन-भर और रात-भर कोई नई बात न हुई। पर दूसरे दिन प्रातःकाल जब हमने खिड़की के बाहर देखा तब हमने सारे प्राकृतिक दृश्य को एकदम सफेद रंग का पाया, पर्वत, भूमि, वृक्ष, नदी, नाले, सरोवर, पोखरे, घर, सब श्वेत वर्ण के थे। नदी-नालों, सरोवर-पोखरों सबका पानी जम गया था और जान पड़ता था जैसे उन स्थलों पर बड़ी-बड़ी स्फटिक की नाना रूपों वाली लम्बी, चौकोर, गोल चट्टानें रखी हों। वृक्षों की टहनियों से यह सफेदी नीचे की ओर वृक्षों से झठलों-सी दिखाई देती थी। मीलों तक भूमि पर शुभ्र रंग की चादर बिछ गई थी और उस चादर पर उसी रंग के कहीं छोटे-मोटे टीले और कहीं बड़े-बड़े ऐसे बैठे से जीव जान पड़ते थे जिनके सारे अवयव चादर से ढके हुए हों और जो किसी प्रकार की समाधि में स्थित रहने के कारण हिलने-डुलते भी नहीं हों। घरों के सफेद छप्परों को देख मुझे सन् २१ की अहमदाबाद कांग्रेस का खादी नगर याद आया, जिसमें प्रतिनिधियों आदि के ठहरने की झोपड़ियों को श्वेत खादी से ही आच्छादित किया गया था। मालूम हुआ कि रात को जोर की हिम-वृष्टि हुई है और बरफ इस समय सर्वत्र जमी हुई है। थोड़ी ही देर में उदय होते हुए सूर्य की लाल आभा ने इस सारे श्वेत रंग पर यत्र-तत्र गुलाल-सी उड़ा दी। थोड़ी ही देर में इस लाल गुलाल ने सुवर्ण का रंग ले लिया और इसके थोड़ी ही देर बाद ऐसा जान पड़ा जैसे उस सोने पर ढेर के ढेर हीरे जड़ दिए गए हैं तथा इस जड़ाई के कारण पीला सोना चमकीले हीरों से ढक गया है। कभी-कभी चमकीले हीरों में कहीं-कहीं रवि-रश्मियां इन्द्र-धनुष वाले रंग दे देतीं और उस समय

टूट-फूट गया था। इस समय इसकी मरम्मत की जा रही थी। मरम्मत के इस काम के लिए चीन की वर्तमान सरकार ने १०४ मिलियन युवान दिए हैं। तिब्बत के साथ ही चीन के अन्य विभागों में भी लामा मन्दिर हैं। लामा भी यहां अनेक रहते हैं। पीकिंग की म्यूनिस्पैलिटी और जिला बोर्ड में भी एक-एक लामा नामज़द थे।

आज रात को हमारे सम्मान में साइनो-इंडिया फ्रेण्डशिप एसोसिएशन ने एक भारी भोज दिया था। इस भोज में पीकिंग के हर क्षेत्र के लोग निमन्त्रित थे। यहां हमें सर्वप्रथम इस एसोसिएशन के सभापति श्री टिंग सी लिंग मिले।

तारीख ४ को प्रात काल १० बजे हम ससार की सात आश्चर्य-जनक वस्तुओं में से एक चीन की महान् भित्ति को देखने मोटरों पर रवाना हुए। हमें चीन वालों ने कहा कि वहां ठण्ड बहुत अधिक होगी, अतः हमने अधिक से अधिक कपड़े पहने। मैंने तो आज जितने कपड़े पहने उतने जीवन में कभी न पहने थे। पीकिंग से चीन की यह महान भित्ति लगभग ६० मील दूर पड़ती है। मार्ग में हमें कई गांव, कस्बे आदि मिले जिन्हें हमने कहीं-कहीं मोटर से उतरकर भी खूब ध्यान से देखा। रास्ते में ही हमें इस जिले का चैंगपिंग नामक एक छोटा-सा नगर भी मिला। इस क्षेत्र के लोग बड़ी गरीबी में रहते थे और अत्यधिक सर्दी के कारण भेड़ों के बालदार चमड़े की पोशाक पहने थे। भित्ति बहुत दूर से दिखने लगती है, पर भित्ति पर चढ़ना होता है पाइटलिंग नामक पहाड़ी दर्रे को पार कर। इस भित्ति की बनावट भारत के किलों की चहार-दीवारी के सदृश है। भित्ति की बनावट में हमें कोई नई बात न दिखी। इसकी विशेषता है इसकी लम्बाई। यह भित्ति ईसा से पूर्व तीसरी शताब्दी के मध्य में सम्राट श्री हुआंगटी ने बनवाई थी, जिन्होंने कि चीन में प्रथम साम्राज्य की स्थापना की थी। पूर्व से पश्चिम तक यह भित्ति एक हज़ार चार सौ मील लम्बी है और पर्वत प्रदेश व मैदानों में होकर गई है। औसतन इसकी ऊंचाई २२ फुट है, किन्तु स्थान-स्थान पर बुर्ज बने हुए हैं

घंटे का समय चीन का यह नगर देखने को भी मिलना था। हैंको स्टेशन पर हमारे स्वागत के लिए अनेक प्रतिष्ठित चीनी सरकारी कर्मचारी और दो भारतीय मित्र मौजूद थे। ये दोनों वर्षों से चीन में रहते थे। इन्हें हमारे आने की सूचना पीकिंग में भारतीय दूतावास ने दी थी।

इसके बाद हम गए हैंको देखने के लिए। हैंको भी चीन के अन्य शहरों के समान ही एक शहर है।

लगभग ६ बजे सन्ध्या को हमारी ट्रेन हैंको से कैंटोन के लिए रवाना हो गई। कैंटोन हम पहुंचे तारीख ६ की रात को १० बजे। रात-भर कैंटोन में ठहर तारीख १० को प्रातःकाल ६ बजे हम कैंटोन से चीन की सीमा के लिम भाम स्थान को रवाना हुए। यह रास्ता चार घण्टे का था। हमारी ट्रेन चीन की सीमा पर पहुंची थी लगभग १२॥ बजे और ब्रिटिश सीमा से हांगकांग हमारी ट्रेन जाती थी ढाई बजे।

पीकिंग से इस सीमा तक की हमारी यात्रा २,४५० किलोमीटर की थी।

जिस समय हम १९५२ में चीन गए, उस समय चीन और भारत का बड़ा मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध था। यह सम्बन्ध कोई नया नहीं था। दो हजार वर्ष के ऊपर से यह मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध चला आ रहा था। सम्बन्ध की कोई परवाह न कर, जिन पचशील के सिद्धान्तों को चीन स्वीकार कर चुका था उन्हें ताक में रख, सन् १९६२ में चीन ने भारत पर जो विश्वासघाती हमला किया और भारत की पीठ पर जिस प्रकार छुरा भोंका वह ससार के इतिहास की एक शर्मनाक घटना है। इस हमले का मुकाबला जिस एकता से भारत ने किया और ससार का लोकमत जिस प्रकार चीन के विरुद्ध बना उसके कारण चीन को इस हमले से मुख मोड स्वय ही पीछे हटना पडा। इस प्रकार चीन की वर्तमान सरकार ने न केवल भारत के सम्बन्धों को बिगाडा वरन् रूस और चीन के जैसे मित्रता के सम्बन्ध थे उनको करीब-करीब समाप्त

है वैसा संसार के अन्य किसी देश के नगर में कदाचित् ही देखने को मिले। आधुनिक युग की कोई भी ऐसी सुविधा नहीं जो वहां प्राप्त न हो, किन्तु इसपर भी वहां के शताब्दियों में वैसे ही चले आने वाले जीवन की झांकी भी सहज ही मिल जाती है।

सारे नगर का वायुमण्डल धार्मिक भावनाओं से भरा हुआ है और जिस धर्म की भावनाओं से यह नगर ओतप्रोत है वह है बौद्धधर्म। बैंकाक में अनेक बौद्धमन्दिर और बौद्धविहार हैं, कुछ बौद्धमन्दिर सचमुच ही कला के सर्वोत्कृष्ट नमूने हैं। तीन बौद्धमन्दिर यहां बहुत प्रसिद्ध हैं—पहला है 'वातअरुण'। यह अपने अत्यन्त विशाल पैगोडा के कारण प्रसिद्ध है। दूसरा है 'वात बेन्चामा बोरपित्', इसमें संगमरमर, चीनी मिट्टी और कांच का बड़ी कारीगरी का काम है। और तीसरा है—'पन्ने की बुद्ध-मूर्ति वाला'। इसकी पन्ने की बुद्ध-मूर्ति तो विलक्षण ही है, इसके सिवा इसकी भित्तियों पर पूरी रामकथा चित्रित है, पर स्याम देश की रामकथा और हमारी रामकथा में अनेक अन्तर हैं, दृष्टान्त के लिए हमारे हनुमान ब्रह्मचारी हैं, पर स्याम के हनुमान अनेक पत्नियों और रखेलों वाले हैं। एक खड़ी और एक शयन करती हुई बौद्धमूर्तियां भी बड़ी विशाल हैं।

स्याम के निवासी आकृति और वर्ण की दृष्टि से मंगोल रक्त के हैं, किन्तु वास्तव में स्याम-वासियों को किसी एक जाति का नहीं कहा जा सकता। न वे बहुत ऊंचे हैं न ठिगने, रंग है गहरा गेहुआ। ९० प्रतिशत लोग बौद्धधर्मावलंबी हैं। स्याम में हर व्यक्ति को पांच वर्ष से पच्चीस वर्ष की अवस्था के बीच चार महीने से लेकर चार वर्ष तक बौद्धभिक्षु होना पड़ता है। वहां के स्त्रियों और पुरुषों दोनों की ही मुख्य पोशाक कोई ढाई फुट चौड़ी और सात फुट लम्बी धोती होती है, जो कमर से घुटनों तक का शरीर ढक लेती है। इस वस्त्र को स्याम में पानौंग कहा जाता है। यह सूती या रेशमी होता है। इसके अतिरिक्त ग्रामीण लोग शरीर के ऊपरी भाग पर नहीं पहनते या छोटी ढीली जाकेट पहनते हैं। स्त्रियां पाहूम ना

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस का आज़ाद हिन्द फौज के काल में स्याम भी आना हुआ था।

पन्द्रह दिसम्बर को हम हवाई जहाज से स्याम से बर्मा के लिए रवाना हुए।

बर्मा

बैंगकाक से रंगून पहुंचने में हमें केवल तीन सौ बानवे मील जाना था। परन्तु उस समय हवाई जहाज़ों की चाल काफी मद्दी थी अतः हमें इस यात्रा में दो घण्टे लगे।

रंगून के हवाई अड्डे पर ज्योंही हम उतरे, हमें जान पड़ा जैसे हम भारत में आ गए हैं।

हम लोग तीन दिन रंगून रहे। इन तीन दिनों में रंगून देखने के कार्यक्रम को गौण तथा सार्वजनिक कार्यक्रम को प्रमुख स्थान मिला, जो इस दौरे के अब तक के कार्यक्रमों में कैनेडा के कार्यक्रम को छोड़कर उल्टी बात थी।

रंगून की सबसे अधिक दर्शनीय वस्तु 'श्वेडगान पगोडा' है। कहा जाता है कि इसका निर्माण ईसा से पांच सौ अठावन वर्ष पूर्व हुआ था। यह पगोडा एक सौ अड़सठ फुट ऊंचे, नौ सौ फुट लम्बे और छः सौ फुट चौड़े चबूतरे पर बना है। पगोडा की परिधि एक हज़ार पचपन फुट और ऊंचाई तीन सौ साठ फुट है। नीचे से लेकर ऊपर तक इसपर स्वर्णपत्र चढ़ा हुआ है, जिसे समय-समय पर बदला जाता है। रंगून नगर के हर स्थल से इस पगोडा के दर्शन होते हैं। इस पगोडा के पास ही दो और दर्शनीय स्थान हैं, रायल लेक और डलहौज़ी पार्क। इसके बाद सूल पगोडा आता है। सूल पगोडा के पास ही शहर का सभा-भवन है।

रंगून कलकत्ते से मिलता-जुलता नगर है, भारतीय काफी संख्या

हमारा उत्कृष्ट कथा-साहित्य

पुस्तक	लेखक
इन्दुमती	सेठ गोविन्ददास
भूल	गुरुदत्त
वनवासी	,,
ममता	,,
मैं न मानूँ	,,
परिवर्तन	,,
आभा	आचार्य चतुरसेन
धर्मपुत्र	,,
पतिता	,,
मोती	,,
हृदय की परख	,,
हृदय की प्यास	,,
वासना के स्वर	'अश्क'
शोले	भैरवप्रसाद गुप्त
बड़े सरकार	,,
मंज़िल	,,
ज्वालामुखी	मन्मथनाथ गुप्त
दिशाहीन	,,
सच और झूठ	,,
पत्थर की नाव	,,
चन्द हसीनों के ख़तूत	'उग्र'
जुहू	,,
बुधुआ की बेटी	,,
फागुन के दिन चार :	'उग्र'
लौटे हुए मुसाफिर	कमलेश्वर
तीसरा आदमी	,,
सरहदों के बीच	,,
नीना	अमृताप्रीतम
अशू	,,
बन्द दरवाज़ा	,,
हीरे की कनी	,,
रंग का पत्ता	,,
नागमणि	,,
गद्दार	कृश्न चन्दर
एक गधे की वापसी	,,
एक गधे की आत्मकथा	,,
प्यास	,,
सपनों का कैदी	,,
एक चादर मैली-सी :	राजेन्द्रसिंह बेदी
पुनर्मिलन	नानकसिंह
एक रहस्य एक सत्य	,,
रजनी	बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय
आनन्द मठ	
दुर्गेशनन्दिनी	
देवी चौधरानी	